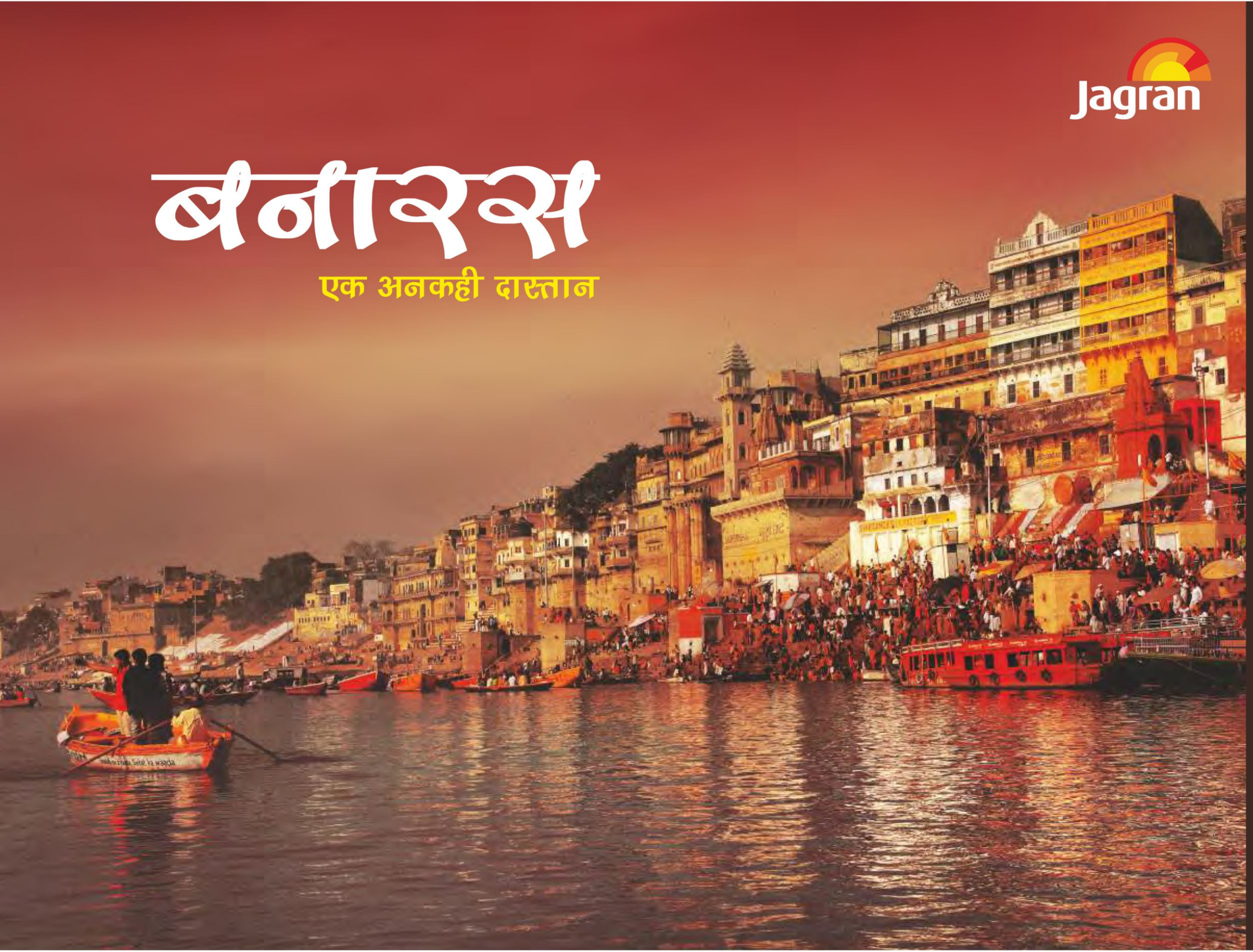


बनारस

एक अनकही दास्तान

Jagran

Jagran

पुस्तक के विषय में

तुम ही जानो कि तुम क्या हो....दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन की दरगाह में अक्सर कव्वाली का एक शेर कानों में पडता है. अनोखी तुमरी लीला है, कोई क्या जाने कि तुम क्या हो ... जाहिर है ये शेर इबादत और आशिकी में अपने पीर के लिए कही गयी. पर ये शेर बनारस के साथ भी मौजूं जान पड़ती है. इस शेर की अगली कड़ी कुछ और है लेकिन अगर बनारस के सिलसिले में होती तो यकीनन यही होता कि तुम ही जानो कि तुम क्या हो. बनारस के बारे में कोई राय कायम करना या उस पर टिप्पणी करना नामुमकिन है. पहली बात तो ये कि शहर है या एक पर्सनाल्टी. फिर इसकी अजीबो गरीब ऐंठ, ठसक, तौर तरीका, रवायत तहजीब और कल्चर. मतलब बनारस की तलाश अपने आप में एक रहस्य है और है एक तिलस्म. वो भी इतना इंट्रेस्टिंग की आप इस आशिकी के साथ जीने लगें कि बनारस को जीने का रोमांच कभी खत्म ही ना हो.

अगर मिसरे में कहूं तो कुछ इस तरह से ... तलाश–ए–तलब में वो लज्जत मिली है कि दुआ कर रहा हूं कि मंजिल न आए ... बनारस के बाशिंदे की कभी अपनी गंगा मैया को छोड़ के न जाने की तमन्ना या ख्वाहिश या कभी कहीं चले भी गये तो अष्ट एश्वर्य छोड़ कर वापस बनारस लौट आने की जिजिविषा के पीछे यही तिलस्म काम करता है. इतना ही नहीं सात समंदर पार से आने वाले फिरंगी भी अक्सर यहां कुछ ऐसा पाते हैं कि वो प्राप्ती की और चाहत के साथ यहीं के होकर रह जाते हैं. सुध बुध खोकर बनारस में बनारसी बन कर रहने वाले इन लोगों को हो सकता है आप हिप्पी कहें लेकिन साहब एक बार आप इनसे बतिया के तो देखिए चमड़ी का रंग भले इनका जुदा है पर इनकी हर अदा बनारसी है. भौतिकवादी लोगों की निगाह में बनारस और बनारसी सोच मूर्खता है पर आम बनारसी इस सोच को अपने एप्पर, ओप्पर और ठोकर पर रखता है.

तो बनारस पर कुछ सोचना, लिखना सहज नहीं है. ऐसे में बनारस के बारे में कॉफी टेबल बुक पब्लिश करना, उसे बनारसी मिजाज के अनुरुप रखना, इसके हर पहलू को टच करना आसान नहीं है. इस शहर की स्प्रीचुएल्टी, इसकी फिलॉसफी, इसके कल्चर, इसकी आबोहवा और रवायत से रूबरू कराना जोखिम है. इस किताब में जोखिम को उठाने का बीड़ा उठा और पूरी शिद्दत के साथ इसे निभाया भी गया. किस्सागोई के जरिए बनारस की रोमानी कहानी और परत दर परत धरोहर बनते बनारस का बेहतरीन विजुलाइजेशन इस कॉफी टेबल बुक की जान प्राण है. कॉफी टेबल बुक का हिन्दी में लिखा जाना इसकी खासियत है. अपनी बोली में जब आप इससे मुखातिब हो रहे होंगे तो यकीनन बनारस के बारे में आपके दिल में उतर रही हर बात सिर्फ यही कह रही होगी कि अनोखी तुमरी लीला है तुम ही जानो कि तुम क्या हो...

JCTB
JAGRAN COFFEE TABLE BOOK

Jagran

बनारस

एक अनकही दास्तान





शैलेश गुप्ता

मुझे यह जानकार अतिशय प्रसन्नता हो रही है कि दैनिक जागरण समूह, जगत–प्रसिद्ध नगरी वाराणसी पर ये विशेष कॉफी टेबल बुक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा है. वाराणसी निस्संदेह एक प्राचीन नगर है जिसका धार्मिक महत्व सर्वविदित है. यहाँ सभी प्रमुख धर्मों एवं मतावलम्बियों के पूजा स्थल व मठ हैं, जिनमे हिन्दू, बौद्ध व कबीरपंथी विशेष हैं. वाराणसी के निकट सारनाथ बौद्ध आस्था का एक महत्वपूर्ण एवं विश्व प्रसिद्ध केंद्र है, जो हर वर्ष लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है. यहाँ की नक्काशी, कशीदाकारी व साडी उद्योग परंपरागत आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र हैं.

वाराणसी अपने प्राचीन नाम काशी के साथ भारतीय मनीषा का भी प्रतिनिधित्व करता है. इस नगर का सांस्कृतिक– सामाजिक परिवेश एक व्यापक आध्यात्मिकता से आच्छादित है. वाराणसी की इस पावनधरा में हजारों अनसुनी कहानियां दबी हैं. हर कहानी अपने आप में एक पुस्तक हो सकती है. यहाँ के लोग अपनी सादगी और मस्तमौलेपन के लिए विख्यात हैं. इसके इतर, वाराणसी के राजनैतिक कलेवर में एक और अध्याय जुड़ गया है. प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी यहाँ के संसदीय क्षेत्र से चुने जाने के बाद देश की अस्मिता और सम्प्रभुता को अंतर्राष्ट्रीय आयाम दे रहे हैं.

मुझे विश्वास है कि जागरण समूह का यह अहम् प्रकाशन आप सबके स्वागत योग्य होगा. आज के समय में ऐसी पुस्तक की नितांत आवश्यकता है जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता की द्योतक हो सके. हर्ष का एक और विषय ये भी है की ये पुस्तक हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी में है. इससे पूर्व भी हमने वाराणसी पर अंग्रेजी में पुस्तक निकाली थी, जिसे अभूतपूर्व सफलता मिली थी. मुझे आशा है कि ये पुस्तक भी गुणवत्ता और प्रसिद्धि में एक नया आयाम छुएगी। इस दृष्टि से जागरण कॉफी टेबल बुक की टीम और इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी लोग इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई की पात्र हैं. इसके साथ ही मैं इस पुस्तक के लेखक श्री विश्वनाथ गोकर्ण जी का विशेष उल्लेख करना चाहता हूं, जिनके अथक प्रयास और प्रतिभा से ये प्रति आज आपके समक्ष प्रस्तुत हुई है.

आप सबको एक बार फिर जागरण समूह की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं.

प्रस्तावना



डायरेक्टर मार्केटिंग	शैलेश गुप्ता
प्रोजेक्ट हैड	आलोक सांवल
कॉन्टेंट हेड	शर्मिष्ठा शर्मा
ऑथर	विश्वनाथ गोकर्ण
कंटेंट मैनेजमेंट	बैनुल बेशक
बिज़्नेस कोर्डिनेटर	अमित के सिंह
मार्केटिंग कोर्डिनेटर	एल के झा योगेश नारायण सिंह
क्रिएटिव कांसेप्ट	वर्मिलियन
पब्लिसिटी एंड प्रमोशन	सिद्धार्थ बिस्वास इंद्रजीत सिंह
डिस्ट्रीब्यूशन	प्रदीप पंत नवीन कुमार
प्रकाशन	जागरण प्रकाशन लिमिटेड 2, सर्वोदय नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश–208005

सर्वाधिकार सुरक्षित © 2017 जागरण प्रकाशन लिमिटेड

मूल्य: ₹1500



प्राक्कथन

ऐ बनारस, तुम्हारा वंदन और अभिनंदन!

बनारस. एक अजीब सा वाइब्रेशन है इस शब्द में. लगता ही नहीं कि ये किसी शहर का नाम है. वैसे तो इस शहर को और भी कई नामों से जाना जाता है. काशी या वाराणसी. लेकिन बनारस शब्द में जो खुसुसी है या जो कशिश है वो औरों में नहीं है. वैसे सच बताऊं बनारस अपने शहर होने का अहसास मुझे कभी कराता ही नहीं. दरअसल ये कोई शहर है भी नहीं. ये तो एक मिजाज, एक ऐंठ, एक ठसक, एक लाइफ स्टाइल, एक रवायत, एक कल्चर और एक फिलॉसफी का नाम है.

इन सबका मिक्सचर है बनारस. टोटल एक ऐसी पर्सनाल्टी जो इसे दुनिया के तमाम शहरों से जुदा करती है और इसकी हर अदा पर दुनिया की तमाम कौमें और नस्लें फिदा हो जाती हैं. वाह, बनारस. तुम्हें समझना या बूझना वाकई नामुमकिन है. तुम रहस्य के पर्याय हो. जीवन की तमाम योनियों के लिए तुम अलौकिक हो. तुम्हारे महाश्मशान के साथ जोड़ा गया आनंदवन शब्द इस बात की तस्दीक है कि यहां मृत्यु एक उत्सव है. काश्यां मरणान मुक्ति की सूक्ति इस बात का प्रमाण है कि यहां जीवन से ज्यादा मृत्यु अहम है. शायद यही वजह है कि तुम इतने जिंदादिल हो. जिसे मृत्यु का खौफ हो ही नहीं तो वो हर लमहा आनंदित ही रहेगा ना? ऐ बनारस तुम कितने खास हो मेरे दोस्त. जी हां, मैं ठीक कह रहा हूं. राबिता हो जाने के बाद बनारस को शायद आप भी दोस्त मानने लगेंगे. मेरी तरह इस शहर को ओढने बिछाने लगेंगे.

दोस्त तुम हो ही ऐसे. तुम पर किसी ग्रंथ की रचना सहज नहीं है. दरअसल ये एक दुस्साहस है. और ये दुस्साहस किया है बिल्कुल तुम्हारी अप्रतिम जागरण प्रकाशन लिमिटेड ने. इसके लिए पत्रकारिता के मुझ जैसे अदने स्टूडेंट को टूल बनाया गया. देखो दोस्त, वैसे भी इस कायनात में सम्पूर्ण तो सिर्फ एक ही शख्स हुआ है. वो बांसुरी वाला. उसके अलावा कोई पूरा है ही नहीं. ऐसे में मुझसे चूक होना सहज है. अगर तुम पर कुछ लिखते हुए मैं कहीं गिर पड़ गया होऊं तो माफ कर देना. मेरा हाथ थाम लेना. वैसे तो मैंने तुम्हारे किस्सागोई अंदाज को आत्मसात कर यह सब लिखा है और इसका यकीन भी है कि इसका रंग तुम्हारे मिजाज पर जरूर चढ़ेगा. देश विदेश के लोगों को पहली बार हिन्दी में बताएगा कि मेरा दोस्त बनारस ऐसा है.

सुनो, मैंने इसमें जो लिखा सो लिखा, जो कुछ बच गया वो अगले कॉफी टेबल बुक में पढ़ लेना. ऐ बनारस तुम्हारा वंदन और अभिनंदन.

विश्वनाथ गोकर्ण





विषय सूची

ऐ गंगा तुम बहती क्यों हो?	07 – 20
तेहजीब देख भरम में है धरम आस्था	21 – 40
खुदा गवाह बनारस	41 – 50
मौज है जिसका मिजाज	51 – 68
यहाँ है एक वाइब्रेशन सारनाथ	69 – 80
राग रागिनी यहां करती है साधना	81 – 92
है सर्व विद्या की राजधानी	93 – 102
भाषाई अदब यहां करता है आदाब	103 – 110
चौबीस कैरेट सा खरा हुनर	111 – 124
खाओ खूब, खिलाओ खूब	125 – 134

The Sunbeam advantage

Celebrating 4 Decades
Estd. 45 Years 1972
of Educational Excellence



Sunbeams are **WINNERS**

Victory to a Sunbeam is a **Habit!**



Sunbeams are **CHANGE MAKERS**

We are the **Change** that we wish to see in the **World!**

Sunbeams imbibe **INTERNATIONALISM**



My school is a Microcosm of the **Global Village!**

Selections 2017

JEE Advance : 75+
NEET : 25+
CLAT & SLAT : 15+
AIIMS : 05+
NIFT : 10+
UPTU : 05+

Sunbeam Schools' Average in CBSE Board Results since 2007



DUTY · DEVOTION · DISCIPLINE

Estd. 1972

Sunbeam

Group of Educational Institutions - Varanasi

Sikh Minority Private Unaided Educational Institutions

Gurmeet Kaur, Co-ordinator - Gurunanak Educational Centre, Sunbeam Group - Varanasi

"TRAVEL ZONE" IS A ONE STOP SHOP FOR ALL TRAVEL NEED

Travel Zone®

A Complete Travel Shopee

An ISO 9001:2008 Certified Company

Affiliated by: GOVT OF INDIA (TOURISM MINISTRY)

tks nsrk gS vkidks ;k=k lEcU/kr lHkh lqfo/kk;s
,d gh Nr ds uhps feysxh&

PRODUCTS

AIR TICKETS, HOLIDAY PACKAGE, CRUISE
HOTEL BOOKING, VISA ASSISTANCE,
PASSPORT ASSISTANCE,
CAR COACH, RENTALS,
FOREX SALE PURCHASE & FOREX REMITTANCE ,
EDUCATIONAL TOURS,
FIT TOURS,
M I C E TOURS & ALL TYPE OF GROUPS

IATA

SOTC World Famous Tours

Money Exchanger
Approved by Reserve Bank of India

52, Patel Nagar, Mint House, Nadesar, Varanasi
(U.P.) INDIA
Phone : 2507620, 2507628, 2507630, Mobile : 9415302919
Fax : 91-542-2507629

Website : www.travelzoneonline.com
E-mail : travelzonevaranasi@yahoo.com, travelzonetours@gmail.com

Introduction

"Travel Zone" established on 17th July 1995, and has been serving for 22 years to its valued clients. The company was formed with a vision to provide efficient and prompt travel related services under one roof, with a zeal to overpower all the hurdles and achieve the maximum for our client"s satisfaction. The foundation of the company "Travel Zone" is laid by Chaurasia brothers Mr. Pradeep Chaurasia & Mr. Sudeep Chaurasia. The company was started with only 2 Co-workers. Today the company is equipped with all the facilities as compared to a metro city.

Beginning with a small office in Varanasi, the Chaurasia brothers through their sincere efforts, patience and perseverance has today positioned the company as a leading travel brand in the eastern U.P. Rendering services and meeting standard of commitment.

The company grew like a tree under the proper care and guidance of the two brothers. On the path success the company has been regularly applauded and awarded by various Airlines and Travel Trade fraternity. The company has tie-up with major travel partners & affiliated to provide services round the clock. The company is renowned and leading travel & tour operator in India. Rendering the services to its valued guest and gaining strong support and appreciation for the same. Our main motto is to give the best and achieve the higher standard of services and commitment.

Travel Zone has been awarded and affiliated by various prestigious institutions which are the Parameters of Standard and Trust in Travel Industry i.e **TAAI , IATO, OTOAI, TAFI & UPTAA**. It shows that we have been passed through all the quality tests and with the passing of time have become more and more Trustworthy, honest and our commitment to deliver never fails and our main motto is to serve people and make their Trip memorable & lifetime experience . YOU WISH AND WE MAKE THE WAY.

Our Services:

Travel Zone has been in tourism industry for more than two decade and has knowledge of expertise to provide impeccable service and unbelievable bargains to its clients.

As an integrated part in Travel Industry we are destined to promote & provide the travel facilities as mentioned below:-

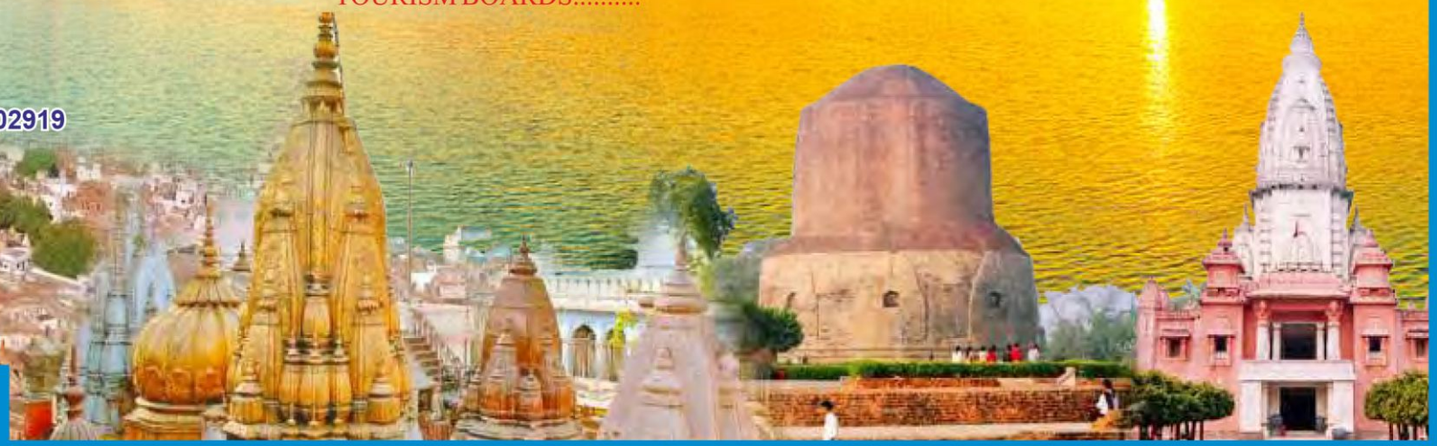
Flight Tickets (Domestic & International) Inbound and Outbound tour packages Domestic Tour Packages
Hotel Reservation Forex Sale & purchase Passport and Visa Assistance Car & Coach Rental Services
Guide Services MICE (Meeting Incentive Conference Exhibition) Travel Insurance Haj & Umrah Packages

Satisfaction Guaranteed :

We are committed to provide the best possible holidays experience to the clients and can tailor itineraries and activities to suit the specific requirement. We can arrange wide range of accommodation to meet the client budget. We will be there to meet and greet them on their arrivals. Our guest relations staff make sure they are well taken care off through out their stay. Guest will be provided with a 24x7 emergency contact number which will elicit immediate response and prompt action. Polite English speaking staff, chaufteur's and guides will be provided for their services. Put your guest on to us we will make sure they have magical experience of travelling through us.

AWARDED BY :

AIR INDIA / JET AIRWAYS /GULF AIR/SINGAPORE AIRLINES AND MANY TOURISM BOARDS.....



EXCELLENCE

IN HOSPITALITY ... AFFORDABLE FOR ALL

अत्याधुनिक, विश्वस्तरीय... सबके लिए

An **ISO 9001 : 2008** Certified Hospital

लक्ष्मी हास्पिटल

(A UNIT OF LAXMI MEDICAL & SURGICAL CARE CENTRE PVT. LTD.)





आत्म परिचय

डा. अशोक कुमार राय

प्रबन्ध निदेशक

पिता : श्री लक्ष्मी प्रसाद राय | जन्मतिथि : 01/12/1966 | शैक्षिक योग्यता : एम.बी.बी.एस.
पता : एस-17/329, रोडवेज, कैण्ट, वाराणसी, उ.प्र. | भाषा : हिन्दी, अंग्रेजी | राष्ट्रीयता : भारतीय
व्यवसाय : चिकित्सक | मोबाइल : 9161929292, 9628000005

लक्ष्मी हास्पिटल पूर्वान्चल ही नहीं उ.प्र. का अपनी विशिष्ट एवं कम दरों पर विश्वस्तरीय चिकित्सकीय सुविधाएं उपलब्ध करवाने वाला सुपर मल्टी स्पेशिलिटी चिकित्सालय है जहाँ समस्त विभागों के विशिष्ट चिकित्सक उपलब्ध हैं। लक्ष्मी हास्पिटल में अत्याधुनिक कार्डियक गहन चिकित्सा कक्ष, न्यूरो गहन चिकित्सा कक्ष, नेफ्रो गहन चिकित्सा कक्ष, नवजात शिशु गहन चिकित्सा कक्ष, बर्न गहन चिकित्सा कक्ष के साथ ही विश्वस्तरीय ज्वाइन्ट रिप्लेसमेन्ट विभाग के साथ ही स्पाइन व ट्रॉमा केयर सुविधाएं उपलब्ध हैं।

आवश्यक समस्त जाँच सुविधाएं जैसे - खून की जाँच, ई.सी.जी., ई.ई.जी., ए.बी.जी., अल्ट्रासाउण्ड, टी.एम.टी., 2D ईको, कलर डॉपलर के साथ ही डिजिटल एक्स-रे एवं सी.टी. स्कैन की सुविधा भी उपलब्ध है।

रोडवेज, कैण्ट, वाराणसी - 221002 • हेल्पलाइन : 9838881888, 7309991999

इमरजेन्सी : 9335337575 | फोन : 0542-2202000, 2205050, 2206060
www.laxmimedical.in | laxmimedical.vns@gmail.com







An **ISO 9001 : 2008** Certified Hospital

लक्ष्मी हास्पिटल

(A UNIT OF LAXMI MEDICAL & SURGICAL CARE CENTRE PVT. LTD.)

- लक्ष्मी हास्पिटल प्रा.लि., रोडवेज, कैण्ट, वाराणसी कारपोरेट हास्पिटल
- लक्ष्मी नर्सिंग ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, हरहुआ, वाराणसी
- लक्ष्मी इन्स्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल साइंसेस, हरहुआ, वाराणसी
- ट्रस्टी श्रीमती ईशरावती देवी चैरिटेबल ट्रस्ट, वाराणसी

डा. अशोक कुमार राय - एक जीवन परिचय

डा. अशोक कुमार राय का जन्म सन् 1966 में आजमगढ़ के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् डा. राय ने वाराणसी के प्रतिष्ठित क्वीन्स कालेज से इण्टरमीडिएट की शिक्षा प्राप्त की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई के दौरान ही डा. राय का चयन श्री देव राज अर्स मेडिकल कालेज टमका, कोलार, कर्नाटक में हुआ जहाँ से डा. राय ने एम.बी.बी.एस.की पढ़ाई पूर्ण की।

एम.बी.बी.एस. पूर्ण करने के पश्चात् डा. राय ने कम्युनिटी हेल्थ सेन्टर में लगभग 3 वर्ष तक कार्य किया। डा. राय ने 2 वर्षों तक वाराणसी स्थित भारतीय रेलवे कैन्सर अनुसंधान केन्द्र में कार्य किया और निरन्तर 5 वर्षों तक सेन्ट्रल इन्टेलीजेन्स ब्यूरों के अधिकृत चिकित्सक रहे।

वाराणसी एवं पूर्वान्चल की गरीब जनता एवं समाज में बढ़ रही बीमारियों के दृष्टिगत डा. अशोक कुमार राय ने 20 मार्च 2001 को 15 बेडों के साथ लक्ष्मी हास्पिटल को प्रारम्भ किया ताकि पूर्वान्चल की जनता को समुचित, सुगम एवं कम दरों पर चिकित्सा सुविधायें प्राप्त हो सकें। डा.राय ने अपनी मेहनत, लगन, सहयोगी चिकित्सकों के सहयोग से अपने चिकित्सालय का विस्तार किया और प्रगति के पथ पर अग्रसर होते हुए आज **''लक्ष्मी हास्पिटल''** 150 बेडों वाला सुपर मल्टी स्पेशियलिटी हास्पिटल हो चुका है। जहाँ सभी विभागों के विशिष्ट चिकित्सक सदैव उपलब्ध हैं। लक्ष्मी हास्पिटल में विश्वस्तरीय, अत्याधुनिक मशीनों एवं उपकरण उपलब्ध है और अपने विवेक एवं कार्य के प्रति लगन के साथ अपने हास्पिटल की इमरजेन्सी एवं ट्रामा सेन्टर को इस प्रकार विकसित किया है कि गंभीर से गंभीर बीमारियों से ग्रसित मरीज भी यदि समय पर चिकित्सालय पहुँच जाय तो उसके बचने की संभावनायें बढ़ जाती है।

चिकित्सकीय क्षेत्र के साथ ही साथ डा.अशोक कुमार राय सामाजिक कार्यों में भी संलग्न रहते हैं और गंगा घाटों की सफाई एवं निर्मल गंगा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। 'स्वच्छ भारत अभियान' में प्रधानमंत्री मा.नरेन्द्र मोदी जी के नवरत्नों की कड़ी में एक हैं। इस अभियान में प्रमुख रुप से सिंधिया घाट व संकठा घाट शामिल हैं साथ ही साथ कुण्डों और तालाबों की स्वच्छता व रख-रखाव के लिए प्रयत्नशील रहते हैं जिसमे सूरज कुण्ड, राम कुण्ड व लक्ष्मी कुण्ड शामिल हैं। और साथ ही चिकित्सा शिविरों, जाड़ों में कम्बल वितरण एवं अलाव की व्यवस्था कर समाज की सेवा करते हैं। सावन में काँवरियों के लिए निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन कर उन्हें चिकित्सा सुविधायें एवं दवायें उपलब्ध करवाते हैं। गरीब व असहाय ग्रामीण मरीजों एवं नक्सली प्रभावित क्षेत्रों में डा.अशोक राय के चिकित्सालय द्वारा निःशुल्क चिकित्सकीय शिविर का आयोजन किया जाता है ताकि ग्रामीण क्षेत्र की जनता तक विशिष्ट चिकित्सकीय सुविधायें पहुँच सके।

डा.अशोक कुमार राय सामाजिक क्षेत्र की संस्थाओं लायन्स क्लब विशाल, संकल्प सेवा समिति, गंगा सेवा निधि, हीमोफिलिया सोसायटी संस्कार सेवा समिति, भारत विकास परिषद् वाराणसी शाखा से भी जुड़े हैं साथ उ.प्र. की सबसे बड़ी संस्था इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन से पिछले 22 वर्षों से जुड़े हैं और विभिन्न पदों पर रहते हुए वर्तमान में अध्यक्ष पद पर रहकर समाज की सेवा कर रहे हैं।

डा. अशोक कुमार राय खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु वाराणसी की कई खेल संस्थाओं से जुड़े हैं जिनमें सेन्चुरी स्पोर्ट्स क्लब, वाराणसी क्रिकेट एसोसिएशन, वाराणसी जिला बाडी बिल्डिंग एसोसिएशन, बैडमिन्टन एसोसिएशन, वाराणसी फुटबाल संघ, चेस एसोसिएशन, बाक्सिंग एसोसिएशन, उ.प्र.पावर लिफ्टिंग एसोसिएशन और सरस्वती स्विमिंग एसोसिएशन शामिल हैं।

डा. राय पूर्वान्चल एवं वाराणसी की खेल प्रतिभाओं को राज्य स्तर एवं राष्ट्र स्तर तक बढ़ाने के लिए खिलाड़ियों को खेल किट प्रदान करने के साथ नगद राशि देकर भी प्रोत्साहित करते हैं।

डा. अशोक कुमार राय को उनके चिकित्सा क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं सराहनीय योगदान एवं खेलों में उल्लेखनीय योगदान के लिए काशी रत्न, काशी गौरव, निशाने बनारस, आई.सी.आई.सी.आई.लोम्बार्ड इन्शोरेन्स की तरफ से फेयर हास्पिटल ऑफ वाराणसी, दैनिक जागरण द्वारा पूर्वान्चल जेम्स, किसान फाउन्डेशन द्वारा समाज रत्न अलंकरण, छत्रपति शिवाजी महाराज सम्मान, उ.प्र.पत्रकार परिषद् द्वारा पूर्वान्चल रत्न अलंकरण सम्मान गंगा महा सभा, भारत उन्नत सेवाश्री एवार्ड द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

देश को नर्सिंग क्षेत्र में उत्कृष्ट नर्सिंग केयर प्रदान करने के उद्देश्य से डा. राय ने लक्ष्मी नर्सिंग ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट प्रारम्भ किया है ताकि उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा के साथ मरीजों की सेवा के लिए नर्सों को प्रशिक्षित किया जा सके।



डा. अशोक कुमार राय

वरिष्ठ भा.ज.पा.नेता (काशी क्षेत्र)

विशेष गतिविधियाँ :

विगत् 22 वर्षों से इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, बनारस शाखा के सक्रिय सदस्य होते हुए विभिन्न पदों का निर्वहन करते हुए अपनी विशिष्ट सेवायें प्रदान की तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों से भी जुड़ाव अनवरत।

दायित्व :

- सक्रिय अध्यक्ष, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, बनारस शाखा
- सक्रिय सदस्य, भारतीय जनता पार्टी
- सदस्य, रेल सलाहकार समिति उ. मध्य रेलवे इलाहाबाद
- नागरिक सुरक्षा संगठन, वाराणसी
- उपाध्यक्ष, जिला सहकारी संघ लिमिटेड
- आर्य महिला हितकारिणी समिति, वाराणसी
- सक्रिय सदस्य, भारत विकास परिषद, वाराणसी
- सक्रिय सदस्य, इंडियन रेडक्रास सोसाइटी, वाराणसी
- सक्रिय सदस्य, हीमोफिलिया सोसाइटी
- सक्रिय सदस्य, संस्कार भारती
- आजीवन सदस्य, मनीषी परिषद
- आजीवन सदस्य, संकल्प सेवा समिति
- वाराणसी क्रिकेट एसोसिएशन
- बैडमिन्टन एसोसिएशन
- वाराणसी फुटबाल संघ
- यू.पी. पावर लिफ्टिंग एसोसिएशन
- जिला बॉडी बिल्डिंग एसोसिएशन
- बॉक्सिंग एसोसिएशन
- वाराणसी एथेलिट्स एसोसिएशन

www.laxmimedical.in

Kajaria Galaxy
TRANSFORM YOUR WORLD

The Single Outlet of Eastern U.P.









THE WORLD OF TILES IS BEYOND YOUR IMAGINATION

Kerovit By Kajaria

Kajaria ETERNITY tiles forever

RC MARBLES

Beside Shakumbhari Complex, Chetmani Crossing Bhelupur, Varanasi

Contact : 9453047129

Kajaria

Kajaria TRANSFORM YOUR WORLD

Kajaria Galaxy
TRANSFORM YOUR WORLD

The Single Outlet of Eastern U.P.



जीवन परिचय

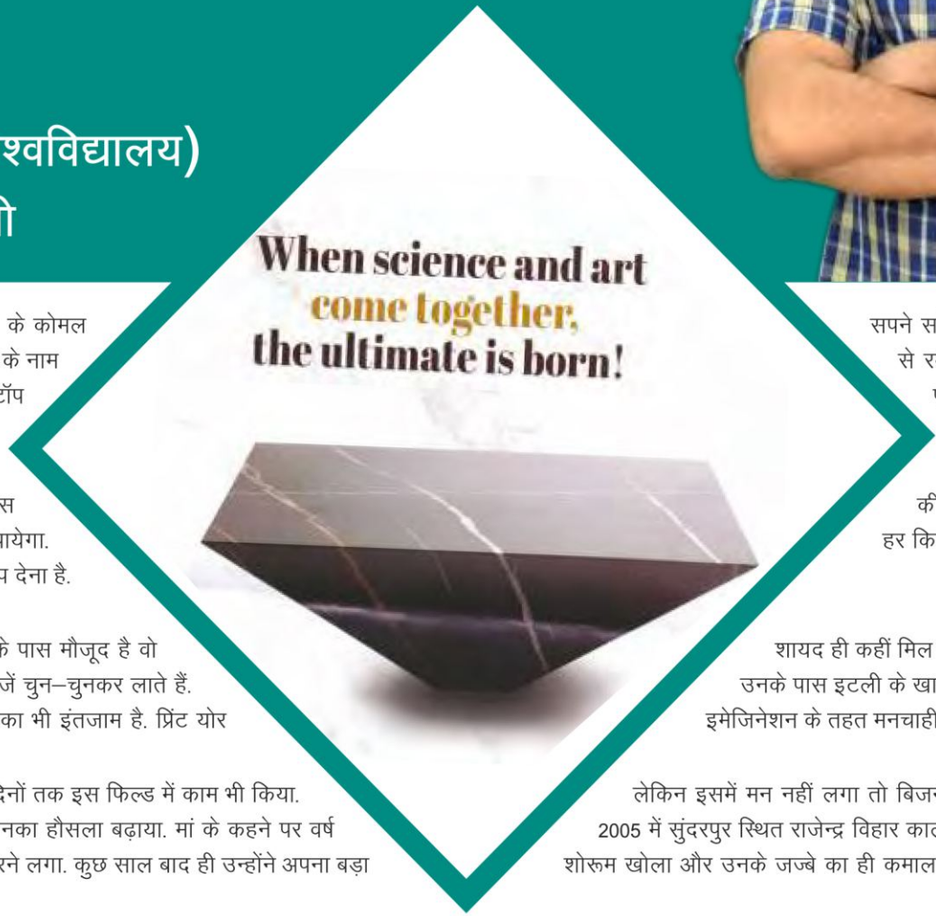
राजेश चौरसिया

पिता : श्री दीनानाथ चौरसिया

माता : श्रीमती शोभा चौरसिया

शैक्षणिक योग्यता : बी0ई0 (मनीपाल विश्वविद्यालय)

व्यवसाय : अधिष्ठाता, कजारिया गैलेक्सी



इस शख्स ने पढ़ाई की सख्त मशीनों का मिजाज जांचने की लेकिन लोगों के कोमल सपने सहेजते हैं. उसे सजाते और संवारते हैं. इनका नाम है राजेश चौरसिया. ये टाइल्स और बाथरूम एसेसरीज के कारोबार से जुड़े हैं. आरसी मार्बल के नाम से रवीन्द्रपुरी स्थित फर्म के अधिष्ठाता हैं. इस फर्म को यूपी का सबसे बड़ा फर्म माना जाता है. इनका शोरूम यूपी में नवम्बर वन और इंडिया के टॉप फाइव में शामिल है.

❐ बेहद हसीन है ये दुनिया :–

राजेश का शोरूम किसी हसीन ख्वाब सा है. कहीं बेहद खूबसूरत फ्लोर टाइल्स सजी हैं तो कहीं आर्टिस्टिक वॉल टाइल्स की पूरी शृंखला है. जिधर नजर डालिए बस खूबसूरती ही नजर आती है. इनके पास कजरिया टाइल्स की सारी रेंज मौजूद है. बाथरूम एसेसरीज के बेहद क्वालिटीफुल प्रोडक्ट हैं. सबकुछ ऐसा कि कई यहां आते तो खाली हाथ लौट नहीं पायेगा. हर किसी के मिजाज और बजट के मुताबिक सबकुछ मौजूद है. बस उसे अपनी कल्पना करनी है और सपने को सच करने की जिम्मेदारी राजेश को सौंप देना है.

❐ लाते हैं चुन–चुनकर :–

वैसे तो तमाम दुकानें टाइल्स या बाथरूम एसेसरीज की होंगी लेकिन जो राजेश के पास मौजूद है वो शायद ही कहीं मिल पाये. राजेश एक बिजनेसमैन जरूर है लेकिन वो जानते हैं कि सपनों का घर कितने करीने सजाया जाता है और इसके लिए दुनिया की खास चीजें चुन–चुनकर लाते हैं. उनके पास इटली के खास वॉश बेसिन हैं तो कोरियन शीट भी ला रहे हैं. अगर को घर की दीवारों पर अपने दिल की गहराइयों में मौजूद तस्वीर लाना चाहता है तो उसका भी इंतजाम है. प्रिंट योर इमेजिनेशन के तहत मनचाही तस्वीर टाइल्स पर उतारी जा सकती है.

❐ जज्बे से कर रहे काम :–

राजेश ने भारत के बाद विदेश से इंजिनियरिंग की ऊंची तालीम हासिल की. कुछ दिनों तक इस फिल्ड में काम भी किया. लेकिन इसमें मन नहीं लगा तो बिजनेस करने की सोच लेकर घर लौट आये. बिजली विभाग के अधिकारी रहे पिता दीनानाथ चौरसिया, मां शोभा चौरसिया ने उनके फैसला पर उनका हौसला बढ़ाया. मां के कहने पर वर्ष 2005 में सुंदरपुर स्थित राजेन्द्र विहार कालोनी से टाइल्स और बाथरूम एसेसरीज का काम शुरू किया. उनकी मेहनत, ईमानदारी और जज्बे का कमाल रहा कि यहां से ही बड़ा बिजनेस करने लगा. कुछ साल बाद ही उन्होंने अपना बड़ा शोरूम खोला और उनके जज्बे का ही कमाल रहा कि उन्हें कजरिया टाइल्स का गैलेक्सी मिला और इस फिल्ड में यूपी के बड़े बिजनेस शामिल हो गये.

❐ सब है इनके कायल :–

आज सैकड़ों छोटी–बड़े व्यापारी राजेश से जुड़कर कारोबार कर रहे हैं. मार्केट में उन्हें जबरदस्त कॉम्पटीशन मिल रहा है लेकिन उनके हौसले और शानदार सोच के आगे सब परास्त हो जाते है. राजेश के भाई गुडगांव स्थित फर्म में एजीएम दीपक चौरसिया और अमेरिका में प्रोफेसर बहन उनके कायल हैं. समय–समय पर उनकी हौसला अफजाई करते रहते हैं. राजेश का बिजनेस मंत्रा है सभी को संतुष्ट रखना. वो मानते हैं कि उनके पास कस्टमर बड़े सपने लेकर आते हैं उनका पूरा करना उनकी जिम्मेदारी है. ऐसे में वो अपने लाभ के बारे कम और कस्टमर की संतुष्टि के बारे में अधिक सोचते हैं. जल्द ही शहर के कुछ अन्य हिस्सों में शोरूम खोलने की राजेश की योजना है. इसे वो जल्द ही अमली जामा पहनायेंगे.



ऐ गंगा तुम बहती

क्यों हो ?



मुक्ति का है द्वार हमेशा ये खुला है...
काशी गवाह है कि यहां सत्य तुला है...
केवल नदी नहीं है संस्कार है गंगा...
पर्व है ये गीत है त्यौहार है गंगा...
केन्द्र है ये पुण्य का आधार है गंगा...
धर्म जाति देश का शृंगार है गंगा...

— कैलाश गौतम



गंगा. यह कोई शब्द नहीं एक अहसास है. एक खास रिश्ते के वजूद का परिचायक है. ये रिश्ता है मां का. गंगा और बनारस एक दूसरे के पर्याय है. एक सिक्के के दो पहलू हैं. एक का वजूद दूसरे के दम पर है. एक दूसरे के प्राकृतिक संरचना में भी इन दोनों का अहम स्थान है. बनारस के साथ खासियत ये है कि बनारस गंगा के पश्चिमी किनारे पर बसा हुआ है. यहां गंगा अपने प्रकृति के विपरीत उत्तर की ओर बहती हैं. पुराणों में काशी में गंगा के उत्तर वाहिनी हो जाने को लेकर कसीदे काढ़े गये हैं. कहते हैं कि शैव धर्म के उन्नयन में काशी का अहम योगदान था लेकिन इसके साथ ही यह भी हकीकत है कि काशी की उन्नति में गंगा के योगदान को आप नजरअंदाज नहीं कर सकते. काशी में गंगा का अर्द्ध चन्द्राकार स्वरूप इसके वैशिष्ट्य को और बढ़ा जाता है. वैसे तो काशी



दीये आस्था के



अरज गंगा मैय्या से

में गंगा किनारे सभी घाटों का अपना एक इतिहास रहा है लेकिन यहां के 84 घाट 84 योनियों से रूबरू कराते प्रतीत होते हैं.

काशी में गंगा के धार्मिक महत्व का वर्णन करने के लिए एक चौप्टर नहीं पूरा ग्रंथ भी लिखें तो भी शायद कम होगा. काशीवासियों की जिंदगी में गंगा कुछ इस तरह से रच बस गयीं हैं कि यहां गंगा तीरे गये बिना इंसानी जिंदगी का कोई भी संस्कार पूरा नहीं होता. काशी में मनुष्य के पैदा होने से लेकर उसके मरने तक के सारे संस्कार गंगा किनारे ही किये जाते हैं. इनमें से कुछ तो बहुत ही आवश्यक समझे जाते हैं. जैसे मुंडन, यज्ञोपवित, शादी के पहले कंगन और शादी के बाद होने वाली गंगा पुजैया की रस्म गंगा किनारे ही होते हैं. गंगा और काशी का जिक्र हो और यहां के महाश्मशान का उल्लेख न हो, यह संभव नहीं है. मणिकर्णिका घाट और हरिश्चन्द्र घाट काशी के लिए सिर्फ शवदाह स्थल नहीं हैं. इन्हें सिर्फ महाश्मशान की दृष्टि से ही नहीं देखा जाना चाहिए. ये मोक्ष प्राप्ति के मार्ग का एक अहम पायदान है. वैसे तो काशी में 84 घाट हैं. इसके अलावा गंगा के उस पार एक वृहद क्षेत्र रेत के मैदान के रूप में खुला पड़ा है लेकिन वहां कहीं भी शवदाह नहीं होता. पुराणों में भी इस बात का उल्लेख है कि अखंड काशी



गंगा में अर्पण के लिए फूल बांटता श्रद्धालु



शीतला घाट पर कथा–पाठ





सुबह–ए–बनारस, जिसका नजारा
देखने के लिए सात समंदर पार से भी
लोग खिंचे चले आते हैं





ये आरती की धधकती लौ नहीं आस्था की जिजिविषा है

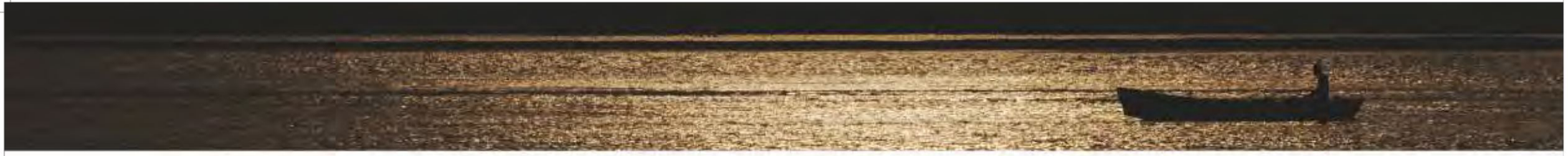
महाश्मशान है लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि काशी में कहीं भी शवदाह कर दिया जाए. काशी में मनुष्य के पार्थिव देह के दहन या विसर्जन की अगर कहीं कोई शास्त्रोक्त अनुमति है तो वह मणिकर्णिका और हरिश्चन्द्र घाट ही है. ऐसे में काशी में गंगा और उसके घाटों की अहमियत को समझा जा सकता है. हिन्दू धर्म में ढेर सारे तीज त्यौहारों के बारे कई कहावत जग प्रसिद्ध हैं. इनमें से बहुत सारे स्नान पर्व हैं. इन स्नान पर्वों को आप सिर्फ धर्म के चश्मे से नहीं देख सकते. इस मॉडर्न जमाने में भी ये पर्व नहीं एक मेले के रूप में काशी में उत्साह के साथ मनाये जाते हैं. गंगा दशहरा और कार्तिक पूर्णिमा पर काशी में गंगा किनारे होने वाली भारी भीड़ इस बात की जमानत है कि यहां गंगा मोक्षदायिनी ही नहीं हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा है. वैसे तो काशी में ये दो मुख्य स्नान पर्व हैं लेकिन इनके अलावा मौनी अमावस्या, देवोत्थान एकादशी, निर्जला एकादशी और महालया भी यहां के मुख्य स्नान पर्व हैं. काशी में पितृ कार्य का विशेष महत्व है. पितृ पक्ष में तर्पण और पिंडदान के कार्य गंगा किनारे घाट पर ही किये जाते हैं. वैसे तो ये कार्य घर पर भी किये जा सकते हैं लेकिन काशी में गंगा की अपरम्पार महिमा के कारण इसे यहां किया जाता है.

वैसे तो काशी में गंगा किनारे दीपदान नित्य की प्रक्रिया है लेकिन कार्तिक पूर्णिमा पर होने वाली देव दीपावली ने इस शहर में एक बड़े पर्व का रूप ले लिया है. इस दिन गंगा किनारे घाटों पर सूर्यास्त के साथ ही लाखों दीये एक साथ जलाये जाते हैं. वस्तुतः यह दीपदान का ही पर्व है. यह आयोजन पहले पंचगंगा घाट पर ही आयोजित होता था लेकिन अब सभी घाटों पर इसके आयोजन ने बनारस में एक नये उत्सव परम्परा की शुरुआत की है. काशी में गंगा की अहमियत को इससे भी समझा जा सकता है कि यहां कई बड़े सांस्कृतिक आयोजन घाट किनारे ही होते हैं. गंगा किनारे अखाड़ों का होना और उनमें सालाना दंगल का होना जैसे एक परम्परा है. गंगा महोत्सव जैसा गायन वादन का कार्यक्रम हो या रामलीला, नागनथैया की लीला या नरसिंह लीला के आयोजन गंगा किनारे ही कराने की रवायत है. बनारस में गंगा धार्मिक समभाव की प्रतीक भी है. यहां कई घाट ऐसे हैं जहां मुस्लिम बंधु गंगा स्नान करते हैं तो जकात से जुड़े दान भी करते हैं. कई घाटों पर मुहर्रम महीने की दसवीं तारीख को गंगा में ही ताजिये भी ठंडे किये जाते हैं.

वैसे तो काशी में असि और वरूणा के बीच कुल 84 घाट हैं. हर घाट का अपना एक खास इतिहास है. सबकी अपनी दास्तां है लेकिन इन सबके बावजूद अगर काशी के दो प्रमुख घाटों के नाम पूछे जाएं तो शायद पहला नाम दशाश्वमेध घाट होगा और दूसरा पंचगंगा घाट. इन दोनों घाटों पर गंगा स्नान करने की अपनी खास अहमियत है. कहते हैं ईसा की दूसरी सदी में भारशिव राजाओं ने युद्ध में कुषाणों को हराने के बाद दस अश्वमेध यज्ञ किया था. इसके बाद उन्होंने इसी घाट पर गंगा स्नान किया था. इसी वजह से इस घाट का नाम दशाश्वमेध घाट पड़ गया. वैसे एक किवदंती यह भी है कि भगवान ब्रह्मा ने यहां दस अश्वमेध यज्ञ किया था. पंच गंगा घाट के बारे में कहा जाता है कि यहां पांच नदियां गंगा में मिलती हैं. हालांकि ये दृश्यमान नहीं हैं लेकिन कहते हैं कि इन नदियों का स्रोत गंगा के भीतर है. पांच नदियों का संगम स्थल होने के कारण हर स्नान पर्व पर यहां आने वाली भीड़ दशाश्वमेध के बाद सर्वाधिक होती है. गंगा और उसके घाटों का इतना अधिक महत्व है कि यहां आने वाला हर शख्स भले ही वो किसी भी मजहब का हो लेकिन काशी की धरती पर कदम रखने के साथ ही उसका मन घाट किनारे पहुंचने के लिए मचलने लगता है. गंगा किनारे सूर्योदय का दृश्य अभिनव होता है. सुबह–ए–बनारस देखने के लिए हर रोज हजारों की तादाद में देशी विदेशी सैलानी गंगा किनारे पहुंचते हैं. उगते सूर्य की किरणें जब गंगा पर पड़ती हैं तो गंगा का जल जैसे सुनहरा सा हो उठता है. ऐसे लगता है जैसे कोई सोने की नदी बह रही हो. काशी में गंगा स्नान का एक अलग विधान है. हालांकि अब यह सब कुछ घाटों पर ही शेष रह गया है लेकिन यह रवायत आज भी कायम है. यहां घाट किनारे बैठे पंडे गंगा स्नान के लिए आए शख्स को कुश देकर स्नान का संकल्प बोलते हैं जिसे दोहरा कर स्नानार्थी अपना नाम गोत्र लेता है. इस कुश को लेकर वह शख्स गंगा स्नान करता है. लौटने के उपरांत पंडा स्नानार्थी के माथे पर चंदन का तिलक



देश विदेश में मशहूर बनारस की गंगा आरती



लगता है और यजमान ब्राह्मण को दक्षिणा देता है.

एक जमाने में काशी में सारे घाट कच्चे ही हुआ करते थे. बाद के वक्त में देश के तमाम रजवाड़ों ने यहां के एक–एक घाटों को पक्का कराने का काम किया. दरअसल इसकी सबसे बड़ी वजह काशी में गंगा किनारे अपने रजवाड़े के नाम को जीवंत होते देखने की उनकी चाहत थी. यकीनन काशी में गंगा विशिष्ट है लेकिन मानना पड़ेगा कि यहां के घाट भी बेहद विशिष्ट हैं इसीलिए घाटों को पक्का कराने के काम में मराठों ने भी खूब योगदान किया. इतिहास बताता है कि आदि शंकराचार्य से लेकर तमाम साधु संतों का वक्त बेवक्त काशी आवागमन लगा रहा. कहते हैं कि आदि शंकराचार्य को स्वयं बाबा विश्वनाथ ने गंगा तट पर ही अद्वैत का बोध कराया था. महाकवि तुलसीदास जी ने रामचरित मानस को संपूर्ण रूप काशी में गंगा किनारे ही दिया था. रामकृष्ण परमहंस ने स्वीकार किया था कि उन्हें गंगा तट पर ही भगवान तारकेश्वर से साक्षात्कार हुआ था. उन्होंने देखा था कि काशी में किस तरह भगवान तारकेश्वर शरीर छोड़ रहे लोगों के कान में तारक मंत्र का उपदेश देते हैं.



सूर्य की किरणों के साथ के साथ सुनहरी हो गई गंगा की लहरें

गंगोत्री से गंगा सागर तक की सैकड़ों मील की यात्रा में यकीनन गंगा को हर जगह माता का स्थान हासिल है लेकिन काशी में अल सुबह से देर रात तक जिस तरह से गंगा मैया की जय का उद्घोष सुनायी पड़ता है वो विरल है. आज भी यहां गंगा का पाट देश के कई शहरों की तुलना में बड़ा है लेकिन मानना पड़ेगा कि काशी में गंगा की धारा में अब वो वेग नहीं रहा. गंगा अब मैली हो गयी है. मैली भी इतनी कि आचमन तो छोड़िए अब वो प्रक्षालन के काबिल नहीं रही. गंगोत्री से यहां आने तक कई जगहों पर बने बैराज और बांध इसके प्रवाह को रोक रहे हैं. तमाम शहरों के गंदे नालों और सीवर के पानी को अपने में समाहित कर चल रहीं हैं गंगा माता. उसकी धारा में हम तमाम तरह के अपशिष्ट बहाने का काम कर रहे हैं. देव विग्रहों को चढ़े निर्माल्य से लेकर केमिकल तक गंगा में बहाने से हमें गुरेज नहीं है. खुद तो साबुन लगाकर नहाते धोते हैं ही साथ ही पशुओं को भी बेशर्मी के साथ स्नान कराते हैं. इंसानों से लेकर पशुओं तक के शव बहा देते हैं. काशी में दोनों महाश्मशानों पर हर रोज बहाया जा रहा शवदाह का सैकड़ों टन राख इसमें कितनी मात्रा में प्रदूषण बढ़ा रहा होगा इसका अंदाजा सहज में लगाया जा सकता है. एक लम्बे मुद्दत से गंगा प्रदूषित हो रही है और हमारा तंत्र इसे मौन साधे देख रहा है. ऐसा नहीं है कि गंगा निर्मलीकरण के लिए इस दौरान कुछ भी नहीं हुआ. काफी कुछ हुआ पर वो ऊंट के मुंह में जीरा जैसा रहा. गंगा की सफाई के लिए जो कुछ भी काम हुआ उनमें से बहुत सा कागज पर ही रहा. उसका असर हकीकत में कहीं दिखा नहीं. वैसे नरेंद्र मोदी सरकार ने गंगा को हर हाल में साफ करने का संकल्प लिया है. सरकार चाहती है कि काशी में गंगा के जल को इतना साफ कर दिया जाए कि उसे पीने पर भी कोई संक्रमण न हो. सरकार गंगा में ट्रांसपोर्ट सिस्टम भी शुरु करना चाहती है. इसके तहत कुछ शहरों में जल्द ही परिवहन सुविधा शुरु की जानी है.

बनारस में गंगा किनारे वैसे तो 82 घाट ही थे लेकिन अभी हाल ही में दो और नये घाटों के बन जाने से इनकी संख्या अब 84 हो गयी है.



घाट किनारे परिंदों की उड़ान

घाट घाट की बात....



राजेंद्र प्रसाद घाट



कर्नाटक स्टेट घाट



मेहता घाट



राज घाट



अस्सी घाट



मणिकर्णिका घाट



केदार घाट

i g y k Okks: e

KTM

390 DUKE



ENGINE TYPE	373 CC, SINGLE CYLINDER, LIQUID COOLED
POWER	43.5 PS @ 9,000 RPM
TORQUE	37 NM @ 7,000 RPM
TRANSMISSION	6 SPEED
BRAKES FRONT / REAR	DUAL DISC BRAKES 320 MM / 230MM
FRAME	SPLIT TRELLIS FRAME, POWDER COATED
WEIGHT	163KG TRELLIS FRAME, POWDER COATED
FUEL TANK CAPACITY	13.5 LITERS

RE

मज़बूत. बेहतर.
ज़्यादा दमदार



BAJAJ Maxima C

पावर हर लोड उठाने की!



पावर ज़्यादा कमाने की

एकसाथ वाहन मिलते हैं

पावर इंजन | पावर क्लच | पावर कप्लिंग | पावर सस्पेंशन

BAJAJ MOTORCYCLES

BAJAJ PLATINA



ENGINE TYPE	102 CC,
POWER	8.10 BPS @ 7,500 RPM
TORQUE	37 NM @ 7,000 RPM
TRANSMISSION	90KMPH SPEED
BRAKES FRONT / REAR	DUAL DISC BRAKES 320 MM / 230MM
FRAME	SPLIT TRELLIS FRAME, POWDER COATED
WEIGHT	108KG
FUEL TANK CAPACITY	11.5 LITERS



डॉमिनर 400 के साथ ' उदय ऑटोसेल्स प्राइवेट लिमिटेड वाराणसी ' डायरेक्टर उदय राज सिंह

उदय ऑटोसेल्स

वरूणापुल, वाराणसी, फोन : 0542-2504337, मो. 7705008603

जेसी चौराहा, जौनपुर
मो. 7705008604

भरूहना चौराहा, मिर्जापुर
मो. 7705008606

गोपीगंज, भदोही
मो. 7705008656

बिछिया, जी.टी.रोड, चन्दौली
मो. 7705008673

AN ISO 9001:2015 & GMP Certified

गैस, पेट का उभारपन,
पेट जलन एवं बदहजमी
आदि के लिए

शाही® चूर्ण

SINCE 1940

आपका हमदर्द

आपका साथी









Manufactured by : shaheez pharmaceuticals Pvt. Ltd.

For Distributor Enquiry : +91 9452597292, +91 8318375331

e-mail : salessupport@shaheez.com



तहजीब देख भरम में है धरम

आस्था



गंगा के नाम दीपदान



बाबा विश्वनाथ का स्वर्ण–शिखर

काशी में मुख्य देवता भगवान शंकर श्री काशी विश्वनाथ ही हैं लेकिन यहां उनके ही स्वरूप भगवान श्री केदारेश्वर और भगवान श्री तारकेश्वर भी प्रमुख देवता हैं. भगवान श्री काशी विश्वनाथ का शुमार द्वादश ज्योतिर्लिंगों में होता है. इनका देवस्थान ज्ञानवापी क्षेत्र में स्थित है.

दरअसल काशी को दो भागों में बांट कर देखा जाता है. एक है काशी खंड जिसके आराध्य श्री विश्वनाथ हैं और दूसरा है केदार खंड जिसके अधिपति श्री केदारेश्वर हैं. श्री केदारेश्वर का मंदिर केदारघाट एरिया में स्थित है. काशी खंड में शरीर छोडने वाले का अंतिम संस्कार मणिकर्णिका घाट पर किए जाने की रवायत है जबकि केदारखंड में देह त्यागने वाले की अंतिम क्रिया हरिश्चन्द्र घाट पर की जाती है. काश्यां मरणान मुक्ति के असल कारक देवता भगवान तारकेश्वर हैं.

कहते हैं कि जब कोई मनुष्य शरीर छोड़ रहा होता है तो भगवान श्री तारकेश्वर उस शख्स के कान में तारक मंत्र का उपदेश देते हैं. इस मंत्र का यह प्रताप है कि शरीर छोड़ रहा व्यक्ति तमाम योनियों में जन्म लेने के चक्र से मुक्त हो जाता है. इनका देवालय श्री काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर में ही स्थित है.

वैसे तो काशी की मुख्य देवी माता विशालाक्षी हैं लेकिन यहां माता अन्नपूर्णा का भी विशेष महत्व है. कहते हैं कि काशी में रहने वाला शख्स कभी भूखा नहीं रहता. इसकी सबसे बड़ी वजह माता अन्नपूर्णा का यहां विराजमान होना है. माता पार्वती की स्वरूप मां अन्नपूर्णा

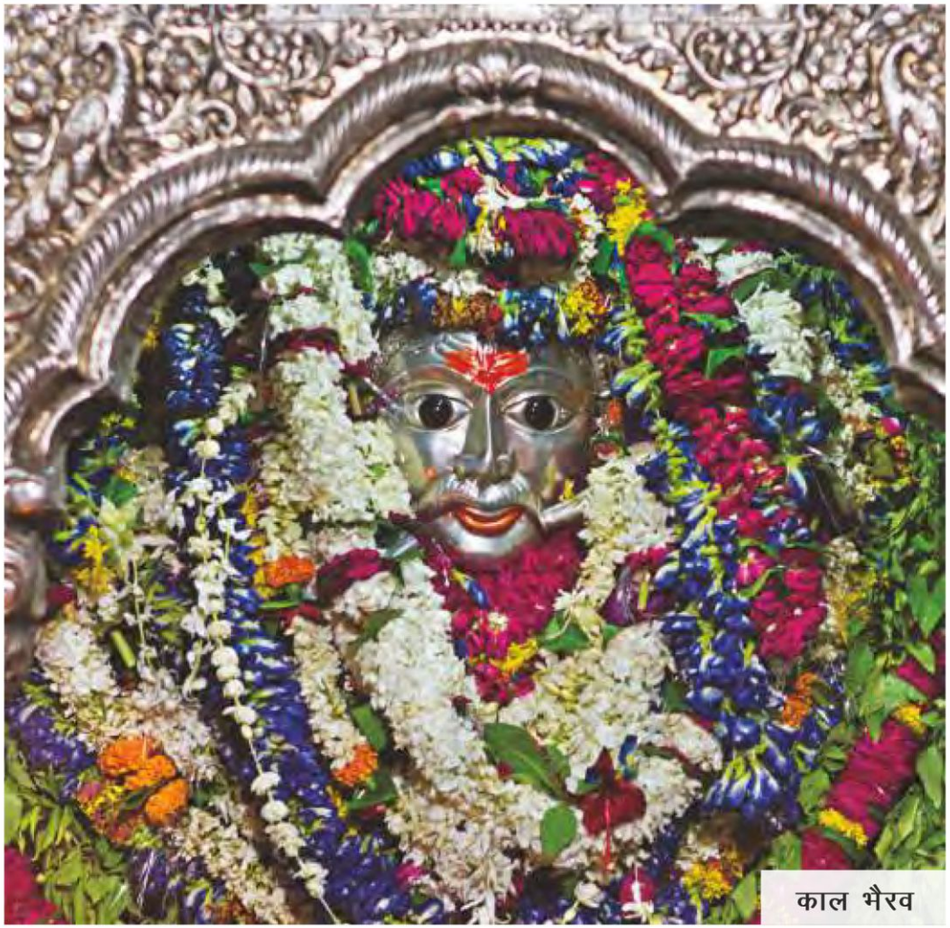


काशी की मुख्य आराध्य देवी हैं माता विशालाक्षी



का देवस्थान बाबा श्री विश्वनाथ के एकदम निकट ही स्थित है. काशी सती का भी स्थान है. शिव तांडव के वक्त यहां माता पार्वती का रूधिर भाग (कमर का हिस्सा) गिरा था. इसी स्थान पर अवस्थित है माता विशालाक्षी का मंदिर. कहते हैं कि आज भी बाबा श्री काशी विश्वनाथ रात्रि में इसी मंदिर में शयन करते हैं. रात में उनका यहां बाकायदे बिस्तर बिछाया जाता है. इसके बाद ही शयन आरती होती है. श्री विश्वनाथ मंदिर के पास ही स्थित मीरघाट एरिया में माता विशालाक्षी का मंदिर है.

काशी के तीसरे मुख्य देवता बाबा कालभैरव हैं. वैसे तो काशी में भैरव के अष्ट स्वरूपों के मंदिर हैं लेकिन इनमें से मुख्य कालभैरव का



काल भैरव



माता अन्नपूर्णा का स्वर्ण विग्रह

मंदिर भैरोनाथ मोहल्ले में है. कहा जाता है कि इनके दर्शन किये बगैर काशी यात्रा पूरी नहीं होती. काशी के कोतवाल होने के कारण यहां आने वाले हर सरकारी मुलाजिम को पदभार संभालने के पहले इनके यहां हाजिरी लगानी पड़ती है. कोई कितना भी बड़ा सरकारी अफसर हो वह इनके दर्शन के बगैर चार्ज नहीं लेता. यह रवायत आज भी कायम है. वैसे बनारस एक ऐसा खास शहर है जहां अष्ट भैरव, अष्ट विनायक, नौ दुर्गा और नौ गौरी के अलग–अलग मंदिर हैं. वो भी बिल्कुल अगल– अलग स्वरूपों में. यहां अगर शनिदेव विराजते हैं तो सर्प देवता का भी मंदिर है. भगवान श्री विष्णु के स्वरूपों के देवालय भी आपको यहां मिल जाएंगे.

हिन्दू तीर्थ स्थान के रूप में काशी की महिमा का बखान वेद, उपनिषद और महाभारत में भी किया गया है. महाभारत में उल्लेख है कि इस धरा पर कुछ ही स्थान ऐसे हैं जिन्हें पवित्र माना जा



दुर्गा मंदिर



भारत माता मंदिर



सकता है, इनमें भी काशी सबसे पवित्रतम तीर्थस्थान है. दरअसल भारत में तीर्थ स्थानों का वजूद किसी ऋषि, मुनि या संत महात्माओं के कारण बना लेकिन काशी के लिए खुद भगवान शंकर ने कहा कि यह वह नगरी है जहां मेरा निवास प्रासाद है. बाबा भोलेनाथ के त्रिशूल पर टिका होने के कारण इसका धार्मिक महत्व बढ़ जाता है.

काश्यां मरणान मुक्ति की उक्ति किसी भी मजहब को मानने वाले को जिदंगी के आखिरी पड़ाव के वक्त बनारस की ओर चलने को प्रेरित करती है. बनारस में घाट किनारे ढेर सारे ऐसे आश्रम हैं जहां काशीवास के लिए आये लोग अपनी जिंदगी के बाकी बचे हिस्से गुजारते हैं. तमाम ऐसे लोग भी हैं जिनकी काशी में शरीर छोडने की चाहत पूरी नहीं हो पाती ऐसे में उनकी चाह होती है कि कम से कम उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार ही काशी में हो जाए.

वैसे अखंड काशी ही महाश्मशान है लेकिन मणिकर्णिका घाट और हरिश्चन्द्र घाट के शवदाह स्थलों को महाश्मशान माना जाता है. इन दोनों घाटों पर 24 घंटे अनवरत रूप से शवदाह का काम चलता रहता है. किवदंती है कि काशी में अगर शवदाह रुका तो महाप्रलय आ जाएगा.

काली और तंत्र का विशेष तादात्म्य है. काशी वह नगरी है जहां इन दोनों का ही विशेष महत्व है. शिव के त्रिशूल पर ठहरा ये शहर तंत्र साधना का भी केंद्र रहा है. महाश्मशान होने के कारण यह अघोर साधना का भी केंद्र रहा है. बाबा कीनाराम ने काशी की मिट्टी की तासीर देख कर ही इस शहर को अपना ठीया बनाया.

तंत्र साधना में अहोरात का काफी महत्व है. जन्माष्टमी, शिवरात्रि और दीपावली की रात काशी के दोनों महाश्मशानों में अघोरियों की भीड़ आती है. यहां देवनाथपुरा मोहल्ले में स्थित शवशिवा काली के मंदिर में माता का विग्रह अपने आप में अनूठा है. किसी जमाने में काशी के देवी मंदिरों में पशु बलि का विधान था लेकिन अब कूष्मांड बलि ही दी जाती है. शहर में स्थित नौ दुर्गा मंदिरों और उनकी स्थापना से जुड़ी तमाम किवदंतियां प्रचलित हैं. अज्ञातवास के दौरान काशी आए पांडवों द्वारा स्थापित माता संकठा के मंदिर का भी अलौकिक महत्व है. दुर्गाकुंड स्थित मां दुर्गा के मंदिर में उपजने वाली श्रद्धा किसी भी नास्तिक को आस्तिक बना देने की ताकत रखती है.

जहां शक्ति की साधना होती है वहां भैरव की उपासना अवश्यम्भावी है. ऐसे में काशी में भैरव के अष्ट स्वरूपों की आराधना की अहमियत को समझा जा सकता है. इसमें भी काशी कोतवाल बाबा कालभैरव के पूजन अर्चन का अपना अलग विधान है. हालांकि अब यह नहीं होता लेकिन किसी जमाने में बाबा कालभैरव का कपड़छन भस्माभिषेक होता था. इसके तहत श्मशान से लाये गये भस्म को एक पतले कपड़े में डालकर उसे बाबा के विग्रह के उपर हिलाया जाता है. घंटा घडियाल और डमरू के निनाद के बीच चल रहे मंत्रोच्चार के साथ कपड़े से छन कर गिर रहे भस्म से अभिषेक के बाद इसे प्रसाद के रूप में भक्तों को वितरित किया जाता था. लेकिन अब ये रवायत बंद हो गयी है.

बौद्ध सर्किट का शायद ही कोई ऐसा मुल्क होगा

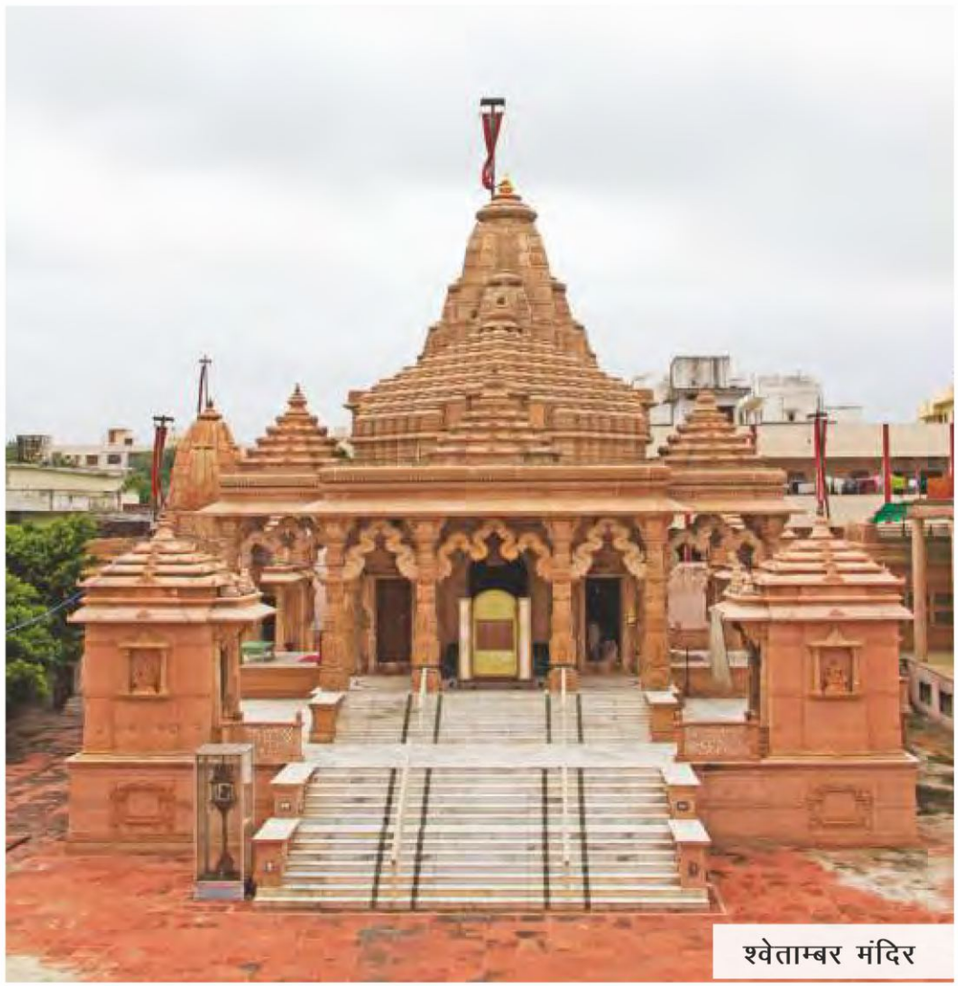


माता संकठा





दिगम्बर जैन मंदिर



श्वेताम्बर मंदिर

जहां का बुद्ध मंदिर सारनाथ में न हो. धम्मेक स्तूप के दर्शन के लिए दुनिया के तमाम मुल्कों के बौद्ध अनुयायी हर साल लाखों की संख्या में यहां आते हैं. धम्मेक स्तूप में भगवान बुद्ध के अवशेष रखे हुए हैं. इसके अलावा मूलगंध कुटी विहार में गौतम बुद्ध के दांत भी रखे हुए हैं. हर साल बुद्ध पूर्णिमा को जनता के दर्शनार्थ सारनाथ में इस अवशेष की शोभायात्रा निकाली जाती है. बौद्धों के अलावा काशी कई जैन तीर्थकंरो की भी जन्मस्थली रही है. इस लिहाज से यह जैन आस्था की भी केंद्र स्थली रही है.

शिव की यह नगरी वैष्णव साधना के लिए भी



देव दीपावली पर गंगा आरती



ख्यात है. यह वह शहर है जहां महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य ने श्रीमद भागवत पर महाभाष्य लिखा. उन्होंने इस शहर में ठहराव के दौरान जतनबर, पंचगंगा घाट और हनुमान घाट मोहल्ले में तीन बैठकों की स्थापना की. इन बैठकों में आज भी वे आसन रखे हुए हैं जिन पर बैठ कर श्री वल्लभाचार्य ने तमाम ग्रंथ लिखे. जतनबर मोहल्ले में सन् 1515 ई. में उनका चौतन्य महाप्रभु से शास्त्रार्थ भी हुआ था. इसी एरिया के पास गोलघर मोहल्ले में गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका की रचना की. शहर के असि मोहल्ले में तो गोस्वामी जी ने रामचरित मानस का अधिकांश भाग लिखा. काशी में संकट मोचन सहित कई हनुमान मंदिरों की स्थापना भी श्री तुलसीदास जी ने की थी. चौखम्बा स्थित गोपाल मंदिर को तो वैष्णवों के षष्ठपीठ के रूप में मान्यता प्राप्त है. गंगा किनारे बाला घाट पर सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट की ओर से बनवाये गये बालाजी मंदिर को भी विशेष स्थान हासिल है. भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां यहां के नौबतखाने में हर रोज शहनाई बजाया करते थे. कहते हैं उन्हें यहां भगवान श्री बाला जी ने दर्शन दिया था. इस बात का जिक्र खुद उस्ताद बिस्मिल्लाह खां ने कई बार अपने इंटरव्यू में किया था.



केदार खंड का केदारेश्वर मंदिर


संकट मोचन मंदिर

इसमें कोई शक नहीं कि बनारस की आस्था को आबादी की तराजू में तौला जाए तो हिन्दू और मुसलमानों का पलड़ा लगभग बराबर का निकल जाएगा. इन सबके बावजूद इस शहर की यह भी खासियत है कि सिख, ईसाई, बौद्ध और जैन धर्म की आस्था का अगर कोई बड़ा केंद्र है तो वह सिर्फ बनारस ही है. आज से ढाई हजार साल से भी पहले जब बोधगया में भगवान गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई तो उन्हें अपना पहला उपदेश देने के लिए बनारस में सारनाथ से विरल स्थान कोई दूसरा नहीं दिखा. दुनिया भर के करोड़ों बौद्ध धर्मावलम्बियों के जीवन की अगर एकमात्र कोई इच्छा होगी तो वह सारनाथ की माटी के दर्शन की ही होगी. यहां के गिरजाघरों में आपको वेटिकन जैसी पवित्रता महसूस होगी. इसकी वजह शायद इस शहर कि मिट्टी की तासीर है. इस शहर के धार्मिक वातावरण से



बिड़ला मंदिर





कबीर मठ



रविदास मंदिर

प्रभावित होकर सिख धर्म के गुरुओं ने अपनी संतानों को संस्कृत सीखने के लिए काशी ही भेजा. इसी तरह शाहजहां को जब अपने बेटे दाराशिकोह को संस्कृत की शिक्षा देने की सूझी तो उन्हें काशी की याद आयी. सब जानते हैं कि दुनिया के प्रमुख धर्मों में कई पंथ भी हैं. हिन्दुओं में ही वैष्णव, कबीर पंथी और रैदासी भी आते हैं. इन्हें मानने वाले दुनियाभर में करोड़ों की तादाद में हैं. इन्हें भी जब पूजा आराधना का खयाल आता है तो इनके जेहन में काशी का ही नाम आता है. वैष्णवों के षष्ठ पीठाधिश्वर काशी के चौखम्भा मोहल्ले में स्थित गोपाल मंदिर में विराजते हैं. कबीरदास जी की जन्मस्थली होने के कारण यहां हर साल आने वाले कबीरपंथियों की तादाद भी लाखों में है. ऐसी ही स्थिति रविदास जन्मस्थली पर आने वाले रैदासियों की है. सूफियों के लिहाज से भी बनारस आस्था का बड़ा केंद्र है.



तुलसी मानस मंदिर



जिंदगी के तमाम रंग अगर देखने हों तो एक बार इस शहर की यात्रा जरूर की जानी चाहिए. मामला जब धर्म कर्म से जुड़ जाता है तो यह शहर बनारस या वाराणसी का चोला उतार कर काशी बन जाता है. बेशक यह हिन्दू धर्म का दुनिया में सबसे बड़ा केंद्र है लेकिन इस बात को कहने में कोई गुरेज नहीं कि अगर सर्व धर्म समभाव देखना हो तो शायद बनारस से बेहतर कोई दूसरा शहर कहीं न मिले. यह अकेला ऐसा शहर है जहां मां गंगा भी अपनी धारा से उलट बहने लगती है. श्री काशी विश्वनाथ का दर्शन करने जा रहे लोगों के साथ ज्ञानवापी मस्जिद में नमाज के लिए जा रहे लोग भी कतार में दिखेंगे. गंगा जमुनी तहजीब का जिक्र अक्सर ही दो सम्प्रदायों के मेल मिलाप के संदर्भ में किया जाता है लेकिन अगर इसकी मिसाल देखनी हो तो बनारस



लाल खान का रौजा



लाल गिरजा

इसकी एक जिंदा नजीर है. नजीर कहते ही याद आया. यहां के नामचीन शायर नजीर बनारसी ने बनारस की आस्था पर एक बेहतरीन मिसरा उर्दू अदब को नजीर किया था. उन्होंने लिखा कि–

'गंगा में वजू करके हमने भी अदा की है अक्सर नमाजें...'

बनारस वो शहर है जहां कई ईदगाह हैं. कई बड़ी मस्जिदे हैं. पीरों के कई ऐसे दरगाह हैं जहां मुस्लिम बंधुओं से ज्यादा तादाद में हिन्दू हाजिरी लगाते हैं. ज्ञानवापी मस्जिद, लंगड़े हाफिज की मस्जिद, लाट सरैंया की मस्जिद, ढाई कंगूरे की मस्जिद

और आलमगीर की मस्जिद सिर्फ आकार में ही नहीं धार्मिक दृष्टिकोण से भी बड़ी मस्जिदों में शुमार होती हैं. दरगाहों में मंडुवाडीह स्थित हजरत तैयब शाह बनारसी की दरगाह को सबसे बड़े आस्ताने के रूप में देखा जाता है. हजरत को बनारस की कुतुबियत अता थी. इनके अलावा कैंटोनमेंट स्थित बहादुर शहीद बाबा का रौजा भी आस्था का बड़ा केंद्र है. इनके अलावा भी कई ऐसे दरगाह ऐसे हैं जहां हर जुमेरात को दूर दूर से आए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जमा होती है.

इसी तरह सिख धर्म के दो बड़े प्राचीन गुरुद्वारों का भी अपना इतिहास रहा है. इनमें गुरुद्वारा गुरुबाग और गुरुद्वारा नीचीबाग संगत की अपनी खास अहमियत रही है. बनारस में हजारों की तादाद में सिख धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं. कमोबेश ऐसी ही स्थिति ईसाई धर्म को मानने वालों के साथ भी है. यहां प्राचीन चर्च हैं तो कान्वेंट भी है जहां पादरी और नन्स को ईसाईयत की दीक्षा दी जाती है. ऐसी काशी को देख आप कह उठेंगे... तीन लोक से न्यारी काशी.

आलमगीर की मस्जिद



सेंट मैरी चर्च



हजरत तैय्यब शाह बनारसी
कुतुब का रौजा



गुरुद्वारा गुरुबाग

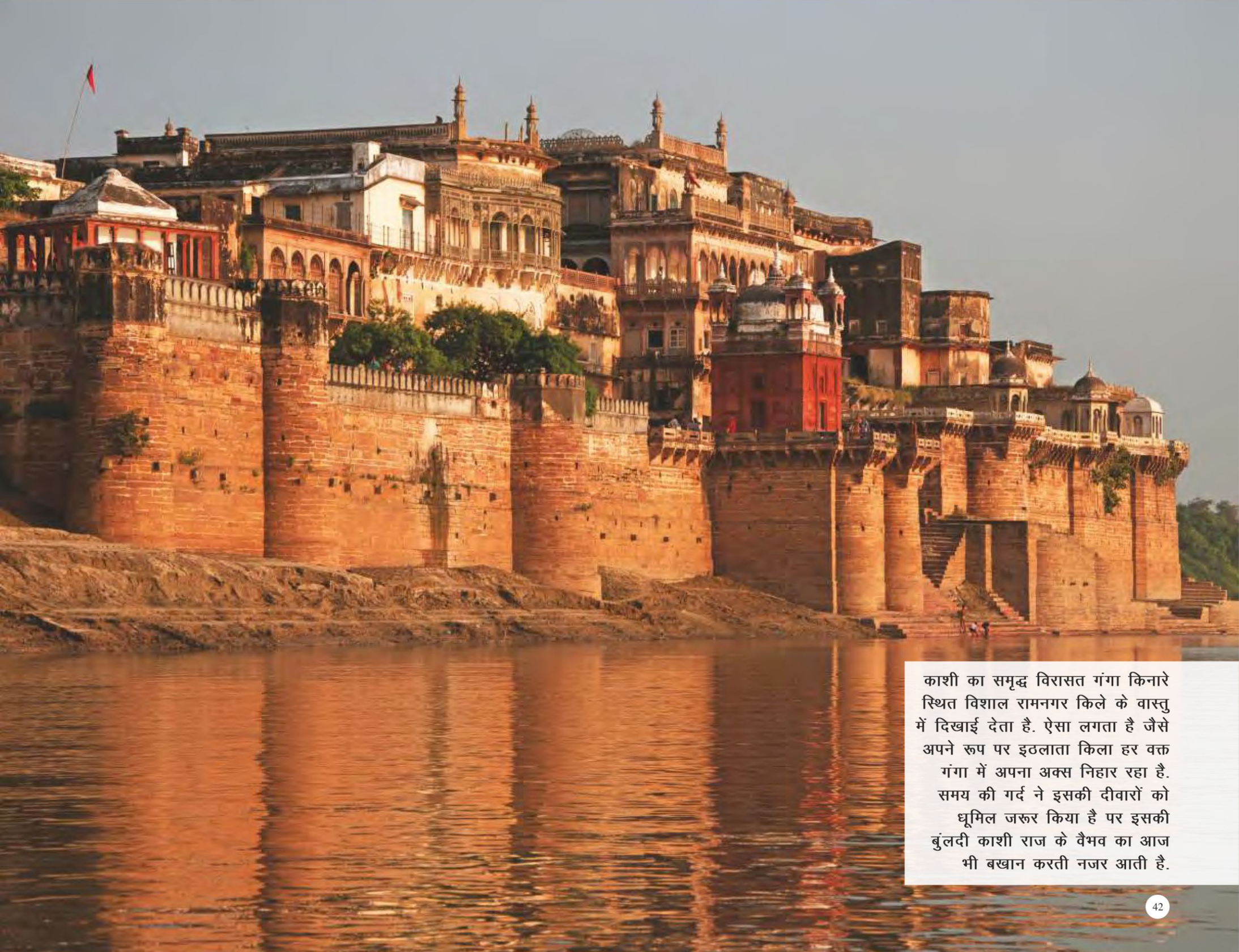


ललिता घाट स्थित नेपाली मंदिर में
पूजा करता श्रद्धालु



खुदा गवाह

बनारस



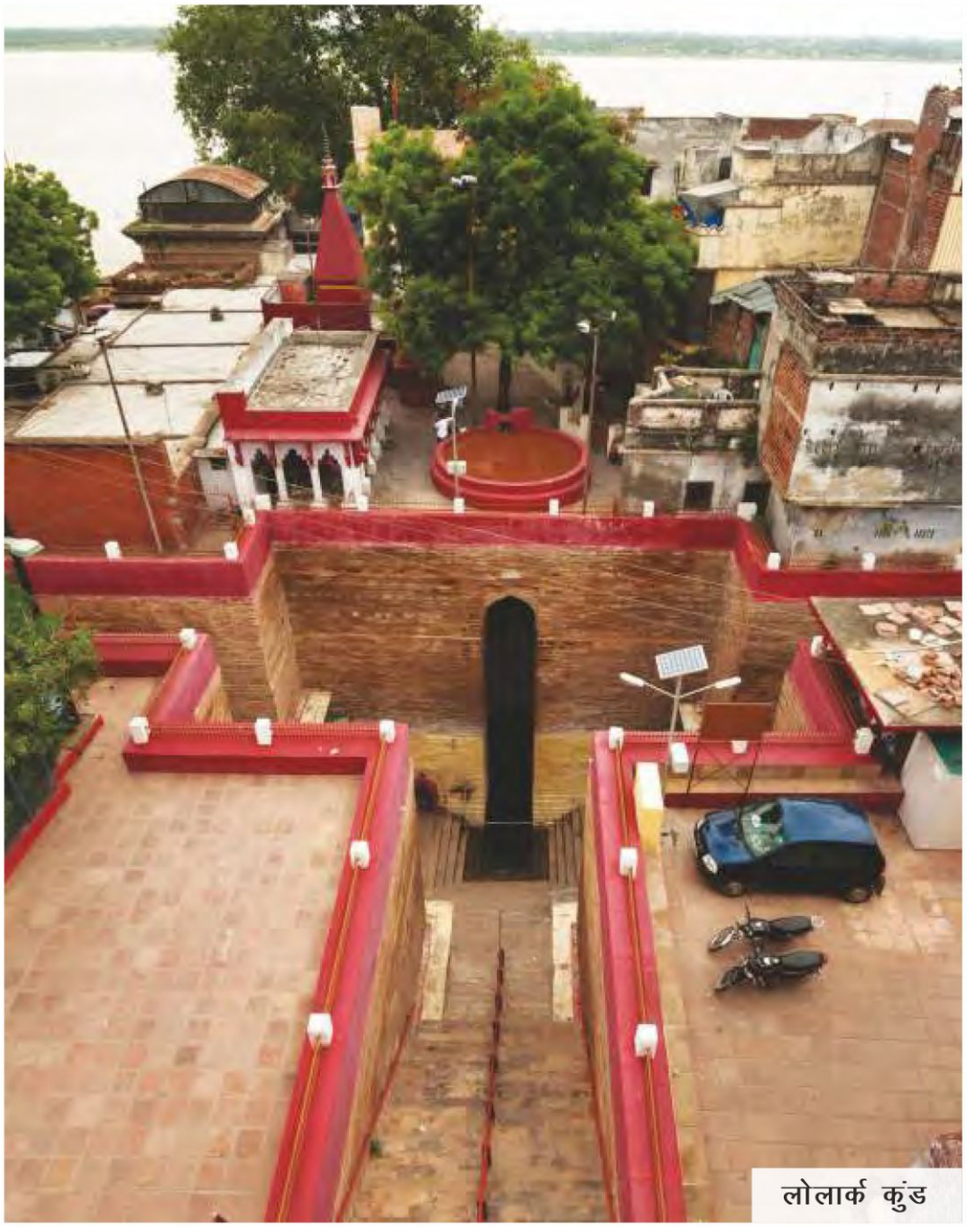
काशी का समृद्ध विरासत गंगा किनारे स्थित विशाल रामनगर किले के वास्तु में दिखाई देता है. ऐसा लगता है जैसे अपने रूप पर इठलाता किला हर वक्त गंगा में अपना अक्स निहार रहा है. समय की गर्द ने इसकी दीवारों को धूमिल जरूर किया है पर इसकी बुंलदी काशी राज के वैभव का आज भी बखान करती नजर आती है.





मान मंदिर वेधशाला





लोलार्क कुंड

काशी, बनारस और अब वाराणसी. इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो इस शहर का नाम बदलता दिखेगा लेकिन इसकी प्रकृति, इसकी स्वभावगत विशेषताएं और इसके स्वरूप में कोई खास परिवर्तन कभी दिखा नहीं. इसके धर्म और आध्यात्मिक स्वरूप में कभी कोई बदलाव नहीं दिखा. अविमुक्त क्षेत्र होने के अलावा यहां आनंदकानन और महाश्मशान होने के कारण इस नगरी को काशी कहा गया. अविमुक्त का मतलब जिसे शिव ने कभी न छोड़ा हो. ऋगवेद में इसे काशी या कासी के नाम से संबोधित किया गया है.

जिस शहर का जिक्र ऋगवेद में हो इससे उसकी प्राचीनता का अंदाजा लगाया जा सकता है. काशी शब्द का अभिप्राय चमकीला, ज्ञान, शिक्षा और संस्कृति का केंद्र होना है. इससे इसके हिस्टोरिकल लेवल का भी पता चलता है. काशी शब्द अथर्व वेद के पैपलाद शाखा से वजूद में आया है. शतपथ ब्राह्मण में भी इसका उल्लेख किया गया है. स्कंद पुराण के काशी खंड में पन्द्रह सौ श्लोकों में काशी की महिमा बखानी गयी है. इसमें भगवान शिव शंकर कहते हैं कि तीनों लोकों से समाहित एक नगरी है जिसमें मेरा निवास प्रासाद स्थित है काशी. महर्षि वेदव्यास ने भी काशी की शान में कसीदे काढ़े हैं

बाद के वक्त में इस शहर का उल्लेख बनारस के नाम से हुआ. यह मुगल काल था. मुगल भी इस शहर के मौजी मिजाज से बहुत प्रभावित थे. यहां की आबो हवा में रची बसी जिंदगी के तमाम रंगों और रस को देख मुगलों ने इस शहर का नाम बनारस रखा. इसका मतलब वो शहर जो रस में रचा बसा हो या रस से बना हो. मुगलों के भारत में आने से लेकर अंतिम मुगल बादशाह तक के काल में लिखे गये इतिहास और साहित्य में इस शहर का जिक्र बनारस के नाम से ही किया गया है. मिर्जा असदुल्ला खां गालिब तो बनारस से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इस शहर की तारीफ में चिराग–ए–दैर (मंदिर का दीया) नाम से एक पूरा काव्यात्मक ग्रंथ ही रच डाला.

कालांतर में काशी और बनारस बदलकर वाराणसी हो गया. इसकी मेन वजह इसके बाएं और दाएं बहने वाली वरूणा और असि नदी है. इन दोनों नदियों के बीच बसे शहर को वाराणसी कहा गया. ये दोनों नदियां गंगा में समाहित होती हैं. शायद इसकी एक और वजह यह भी रही हो कि आबादी बढने के साथ इसका धार्मिक महत्व और भी बढ़ गया था, इस लिहाज से शहर का नाम बदलना मजबूरी बन गया हो.

कहते हैं कि काशी की स्थापना भगवान शिव ने पांच हजार से भी ज्यादा साल पहले की थी. हिन्दू धर्म की पवित्र सप्तपुरियों में से एक होने के कारण इसका धार्मिक महत्व व्यापक है. वेदों में सबसे प्राचीन ऋगवेद के अलावा स्कंद पुराण, रामायण और महाभारत में भी काशी का विस्तार से महिमा मंडन किया गया है. वैसे तो काशी का लिखित इतिहास करीब तीन हजार साल पुराना है लेकिन कहते हैं कि यह शहर इससे भी ज्यादा पुराना है. गौतम बुद्ध के काल में भी काशी एक राज्य हुआ करता था और इसकी अपनी राजधानी होती थी.

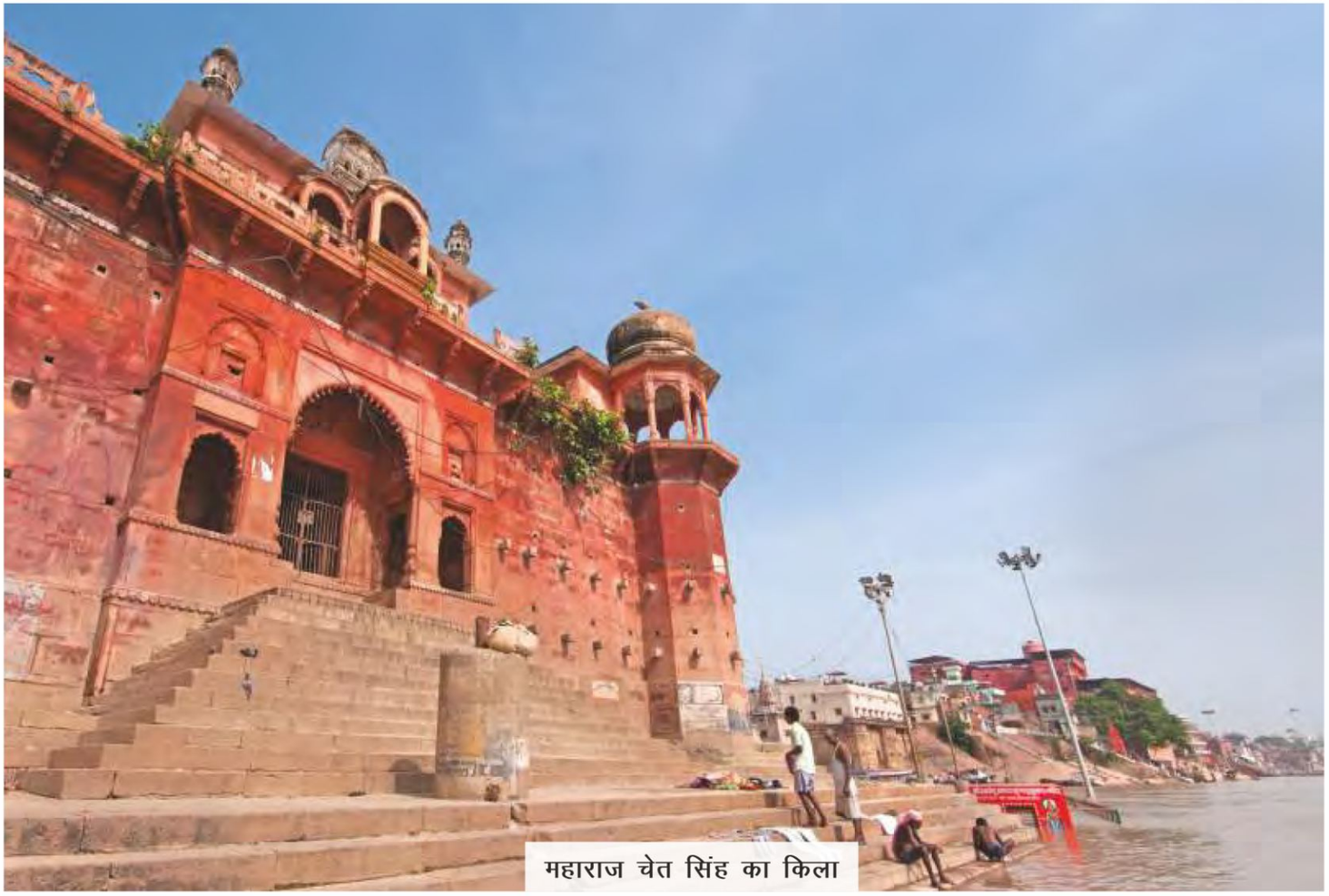
कहने का मतलब यह कि उस जमाने में काशी किसी शहर का नहीं बल्कि देश का नाम हुआ करता था. यह समय ईसा पूर्व 567 का था. प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन सांग भी अपनी भारत यात्रा के दौरान काशी आये और उन्होंने लिखा कि यकीनन यह शहर धर्म और आध्यात्म के लिहाज से काफी अहमियत रखता है लेकिन शिक्षा के दृष्टिकोण से भी इसका गहरा महत्व है. वो लिखते हैं कि काशी की कला पारखी दृष्टि अद्भुत है. ह्वेन सांग ने लिखा है कि गंगा किनारे बसे इस



रानी लक्ष्मीबाई की जन्मस्थली

शहर की छटा निराली है. यह महज पांच मील की दूरी में बसा है लेकिन यहां हर ईंट की अपनी दास्तां है जिसे समझने में आपको वर्षों लग सकते हैं. उस जमाने में भी यह शहर बिजनेस सेंटर हुआ करता था. यहां बनी रेशमी साड़ी और शिल्प से जुड़ी तमाम चीजों की बहुत डिमांड हुआ करती थी.

इतिहास कहता है कि प्राग ऐतिहासिक काल में बनारस की स्थापना का मकसद धर्म कतई नहीं था. हिन्दू धर्म से बनारस के रिश्तों की बात भी बहुत बाद की है. प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. मोतीचंद्र ने अपने ग्रंथ काशी का इतिहास में स्पष्ट किया है कि काशी को आप भारतीय संस्कृति का एक प्रतिनिधि शहर कह सकते हैं. क्योंकि देश की इस सर्वाधिक पुनीत नगरी का महत्व हमेशा उसकी भौगोलिक और व्यापारिक स्थिति के कारण रहा है. धार्मिक विश्वास के अनुसार बनारस दुनिया का सबसे प्राचीनतम शहर है लेकिन वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है. डॉ. मोतीचंद्र के अनुसार यह शहर दुनिया की तो छोड़िए भारत का भी सबसे पुराना शहर नहीं है. पुरातात्विक खोजों को अगर कसौटी माना जाए तो जोर्डान वैली स्थित जेरीको दुनिया का सबसे प्राचीन शहर है. लगभग नौ हजार साल पुराना यह शहर पाषाण युग के परकोटे से घिरा हुआ था. भारत में भी सिंधु घाटी की सभ्यता को प्रमाण के लिहाज से काशी से ज्यादा पुराना माना जाता है. काशी के सबसे पुराने शहर होने को लेकर हमेशा से बहस रही है लेकिन इस बात से किसी का कभी कोई इनकार नहीं रहा कि इस नगरी में एक अजीब सी कशिश और शिद्दत रही. इसके धर्म और आध्यात्म के महत्व को मानने से भी किसी को कोई गुरेज नहीं है. इस कशिश के चलते दुनिया के तमाम महापुरुष और संत काशी आये और फिर यहीं के हो कर रह गये. यहां जन्म लेने वाले तमाम संत आज भी पूजे जाते हैं. यहां हर धर्म का अपना आधार है और उनका अपना वजूद आज भी कायम है.



महाराज चेत सिंह का किला

महर्षि वेद व्यास, महर्षि पतंजलि, महर्षि अगस्त्य, गौतम बुद्ध, आदि शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, स्वामी रामानंदाचार्य, कबीर, तुलसी, रैदास, अघोराचार्य बाबा कीनाराम और तैलंग स्वामी ने काशी को हकीकत में जाना. बनारस के बारे में तमाम किवदंतियां भी हैं. कहते हैं कि हजारों साल पहले मध्यम कद काठी के कुछ लोगों ने इस शहर की स्थापना की थी. ये लोग सिल्क के कपड़े और चांदी के व्यापारी थे. इनका काम धंधा ठीक ठाक चल रहा था लेकिन अचानक आ धमके कुछ लड़ाकू किस्म के लोगों ने धीरे धीरे न केवल यहां के व्यापार धंधे पर कब्जा जमा लिया बल्कि इस शहर के पुराने बाशिंदों को शहर से मार भगाया.

ये नये लोग खुद को आर्य कहते थे. इनकी कद काठी कुछ इस तरह की थी कि आसपास के शहरों के लोग भी इनसे भय खाते थे. महाभारत



संस्कृत विश्वविद्यालय की वेधशाला





लाल बहादुर शास्त्री जन्मस्थली

में भी काशी का उल्लेख इस संदर्भ में किया गया है कि यह शहर उस जमाने में देश के समृद्ध शहरों में से एक था. कथा है कि एक स्वयंवर में कौरवों और पांडवों के पितामह भीष्म ने काशीराज की तीन पुत्रियों अंबा, अंबिका और अंबालिका का अपहरण किया था. कर्ण ने भी अपने मित्र दुर्योधन के लिए काशीराज की खूबसूरत कन्या का अपहरण किया था. इन सबका नतीजा ये रहा कि काशी और हस्तिनापुर के बीच हमेशा वैमनस्य रहा और महाभारत की लड़ाई में काशीराज ने पांडवों का साथ दिया.

गौतम बुद्ध के जन्म काल में भी बनारस राजधानी हुआ करता था. लेकिन उस काल के शहर की सीमा विस्तार का खास उल्लेख कहीं पढने को नहीं मिलता. बुद्ध काल के मिलने वाले जातकों में काशी का विस्तार तीन सौ योजन बताया गया है. महाभारत काल के बाद उत्तर वैदिक काल और महा जनपद काल में भी काशी का महत्व उसी तरह बरकरार रहा. इससे यह साबित होता है कि बनारस उस काल में भी धर्म और आध्यात्म के अलावा एजुकेशन और बिजनेस का हब हुआ करता था. कला और संस्कृति के लिहाज से भी यह शहर सेंटर हुआ करता था.

मुगलकाल में मंदिरों की इस नगरी में विध्वंस का अपना इतिहास रहा. मुगल बादशाह औरंगजेब ने न सिर्फ बाबा विश्वनाथ के मंदिर को नष्ट किया बल्कि उस जमाने के तमाम प्रमुख मंदिरों को उजाड़ा. मंदिरों में स्थित देव विग्रहों को क्षति पहुंचायी. इसी दौरान औरंगजेब ने बनारस के मदनपुरा मोहल्ले के करीब कर्नाटक के लिंगायत समुदाय के जंगमबाड़ी मठ के मुख्यद्वार का निर्माण भी कराया. इतना ही नहीं उन्होंने मठ के खर्च के लिए कई गांवों की जमींदारी भी लिख दी. जंगमबाड़ी मठ का खर्च आज भी इसी से चलता है. मठ का मुख्य द्वार आज भी हिन्दू मुस्लिम समुदाय के सद्भाव का प्रतीक है.

आधुनिक भारत में काशी से बनारस और फिर वाराणसी होने की अपनी विस्तृत कथा है. 18 वीं शताब्दी में काशी राज्य की स्थापना हो गयी थी. कालांतर में इस राज्य को भी ब्रिटिश शासन के अधीन आना पड़ा था. सन् 1910 में ब्रिटिश वाइसराय ने वाराणसी को एक नया राज्य घोषित किया. रामनगर को इस नये राज्य की राजधानी बनाया गया. इन सबके बावजूद काशीराज परिवार को कोई संवैधानिक या राजपत्रित अधिकार नहीं दिये गये. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दूसरे राज्यों की तरह काशी राज का भी भारत संघ में विलय हो गया. काशी राज का परिवार आज भी रामनगर किले में रहता है. बनारस में इस परिवार को धार्मिक महत्व से देखा जाता है इसलिए इस कुल की यहां काफी अहमियत है.

काशी नरेश को भगवान शंकर के प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है इसलिए उन्हें देखते ही हर हर महादेव का उद्घोष किया जाता है. काशी, बनारस या वाराणसी के इतिहास की प्राचीनता को कोई स्वीकार करे या न करे लेकिन बनारस के धरोहर होने पर पूरी दुनिया का इकरार है. ऐसे में इसके आलोचक भी कहते हैं, वाह! बनारस तेरा कोई जवाब नहीं.

शिव काशी के आराध्य हैं यहां के राजा उनके प्रतिरूप. मेले या किसी अन्य बड़े आयोजन में जब भी प्रजा का अपने राजा से मिलना होता है तो लोग उनके जनार्दन स्वरूप का अभिनंदन हर हर महादेव के उद्घोष के साथ करते हैं. प्रजा से मिलने की यह परंपरा काशी में अब तक कायम है. नाटी इमली के भरत मिलाप पर काशीराज अनंत नारायण सिंह हाथी पर सवार होकर आते हैं. यह बनारस की परंपरा है और यही बनारस की संस्कृति.



रानी लक्ष्मीबाई की जन्मस्थली



मौज है जिसका मिज़ाज़



बनारस. इसे आप शहर नहीं एक शख्सियत मान सकते हैं. हां, यकीन मानिये बनारस है ही कुछ ऐसा. मैं कह सकता हूं कि देश, काल और परिस्थितियों से परे है ये शहर. इसकी अपनी रवायत है. और है अपना तौर तरीका. अनादी काल से लेकर आज तक बनारस स्थापित नियमों में बंधने का कभी आदी रहा ही नहीं. इस शहर का मिजाज मस्त फक्कड़ का है. आमतौर पर एक बनारसी को इस बात की कतई फिक्र नहीं होती कि सामने वाला उसके बारे में क्या सोचता है. वो दुनिया को अपने ठेंगे पर रखता है और जिंदगी को अपनी शर्तों पर जीता है. संगीत, नृत्य, कला और साहित्य में उसकी गहरी पैठ है. इन सब विधाओं में बनारस घराने की पूरी दुनिया में एक खास हनक है. आमतौर पर बनारस की आबो हवा में फकीरी शिद्दत से नजर आती है. गौर करेंगे तो आपको बनारस वालों की पर्सनाल्टी में यह सब नजर आएगा. आप फील करेंगे कि बनारस के बाशिंदे को मीडियॉकर होना गवारा नहीं है. दुनियावी जिंदगी हो या कॅरियर की फील्ड, बनारस का शख्स इसमें कोई छोटा–मोटा रोल प्ले करना पसंद नहीं करता. उसे अवार्ड या अलंकरण भी कोई छोटा मोटा नहीं चाहिए. पद्म पुरस्कार पाने वालों में बनारसी नामों की लम्बी लिस्ट इस बात की जमानत है कि यहां के लोग अपने फन के उस्ताद है. आला दर्जे के हैं. एक आम बनारसी खुद को हमेशा शीर्ष पर देखना पसंद करता है. अगर इस मकसद में वो कामयाब हो गया तो वेल एंड गुड. और अगर नहीं हो पाया तो इसको लेकर उसके अंदर कोई फ्रस्ट्रेशन नहीं होता. बनारसियों के मिजाज की एक खासियत होती है. बेशक उनकी टेंट में एक चवन्नी नहीं होगा लेकिन वो खुद को काशी नरेश से कमतर नहीं समझते. एक अलग तरह की ठसक उनकी पर्सनाल्टी में दिखायी देता है.



गंगा किनारे हर्रउल मस्ती

चाय पान की दुकान पर सुबह से शाम तक अड़ी लगाना एक बनारसी की फितरत है तो अबे–तबे के अंदाज में बतियाना उसकी अदा है. बात–बात पर अरे रजा, क्या गुरु के तकिया कलाम के साथ किस्सागोई करना बनारस वालों के व्यक्तित्व का अहम हिस्सा है. बनारस का आदमी आमतौर पर एक दूसरे का अभिवादन महादेव, महादेव कह कर करता है. पान खाना वो शान समझता है तो विजया (भांग) का सेवन उसकी मस्ती में ऊर्जा घोलने का काम करती है. एक बार किसी परदेसी ने एक बनारसी से बनारस के बारे में कुछ सुनना चाहा तो उसने जो सुनाया वो बड़ा रोचक था. मस्ती से सराबोर इस कवित्त पर आप भी जरा गौर फरमाइए..

गड्डु भांग

दिव्य निपटान
साफा पानी
सरगंड भोजन
हर्रउल मस्ती
अहा, इहे हौ रजा बनारस

इस कवित्त को जरा समझिए आपको मजा आ जाएगा. दरअसल यहां का शख्स अल सुबह ही बूटी (भांग) छान लेता है. अब इस भांग को घोटने मतलब पीसने की प्रक्रिया इतनी लम्बी है कि आमतौर पर कोई दूसरे शहर का बंदा इससे तौबा कर ले लेकिन बनारस का आदमी अपने इस शौक को बड़े मौज के साथ करता है. भांग भी वो कोई थोड़ा मोड़ा नहीं छानता बल्कि पूरा गोला जिसे वो गड्डु कह रहा है, उदरस्त कर लेता है. आप सुन कर हंसेंगे कि जिसे वो निपटान कह रहा है उसका मतलब फ्रेश होने या शौच से है. उसे भी वो मामूली तरीके से नहीं करता. उसमें भी उसे दिव्यता चाहिए. साफा पानी का मतलब कपड़े धोने से लेकर देर तक नहाने से है. इन सबके लिए उसे बेशुमार पानी की जरूरत पड़ती



अस्सी मोहल्ले में पप्पू की अड़ी, आज भी खड़ी!



घाट किनारे मस्ती की नींद





बनारसी रंग में रंग दीनी बिदेसिया

है. चूंकि वो गंगा किनारे का वासी है इसलिए आम बनारसी को पानी की किल्लत जरा भी रास नहीं आती. उसे अपना एक गमछा धोने में दो चार बाल्टी पानी की जरूरत पड़ती है. वह लंगोट और गमछा धोने में बेहतरीन ब्रांडेड बाथ सोप की पूरी बट्टी घिस डालेगा. ताकि उसमें खुशबू रच बस जाए.

इन सब कामों को निबटाने के बाद काशी का आदमी भोजन भी प्रचुर मात्रा में करता है. इसलिए उसे भोजन की क्वांटिटी और क्वालिटी दोनों ही ठीक ठाक चाहिए. ऐसे में वो क्वांटिटी के लिए सरगंड शब्द का इस्तेमाल करता है. सुबह भोजन में अगर स्वादिष्ट मिठाई चाहिए तो रात के खाने में उसे रबड़ी और मलाई की ख्वाहिश होगी. और अगर यह सब न मिले तो उसे भोजन कुछ अधूरा सा लगता है. अब देखिए वो मस्ती भी कोई थोड़ा मोड़ा नहीं बेहिसाब करता है. इसके लिए वह जिस जुमले का इस्तेमाल करता है वो भी कितना मस्त कर देने वाला है हर्रउल. बनारस के बारे में एक और चीज काफी अहम है. एक तो ये कि यह शहर न तो किसी बाहरी को आत्मसात कर पाता है और न ही कोई बाहरी यहां की जिंदगी में फिट हो पाता है. बाहरी को आत्मसात करने की बनारस की अपनी शर्त है कि वो शख्स यहां बनारसी बन कर रहे.

यकीनन यह शहर कॉस्मोपोलिटिन है. यहां देश के हर प्रांत के लोग आपको मिल जाएंगे. सूबाई लोगों के हिसाब से मोहल्ले आबाद हैं. जो जिस राज्य का है वो अपनी भाषा बोलता है लेकिन तबीयत और तरबीयत से वो खालिस बनारसी होता है. यहां बंगाली टोला में रहने वाला सिंधी बांग्ला बोलता मिलेगा तो हनुमान घाट के यादव को आप कन्नड़ या तमिल बोलते पाएंगे. यहां कुमाऊं के लोग आज भी पहाड़ की परम्परा को जिंदा रखे हुए हैं तो चौखम्भा के गुजराती नवरात्र में डांडिया गरबा की अपनी रवायत को बनाये हुए हैं. गुरु नानक नगर सिगरा के सिख लोहड़ी मनाते हैं तो सिंधु नगर की सिंधी बस्ती में झूलेलाल जयंती पर पास की ईसाई बस्ती के लोग भी भजन गाते मिल जाएंगे. दुर्गाघाट के मराठी गणेशोत्सव को झूम कर मनाते हैं.

मदनपुरा के इकराम खान साहब के घर में काली जी का प्राचीन मंदिर है जिसकी हर रोज वो पंडित मदन

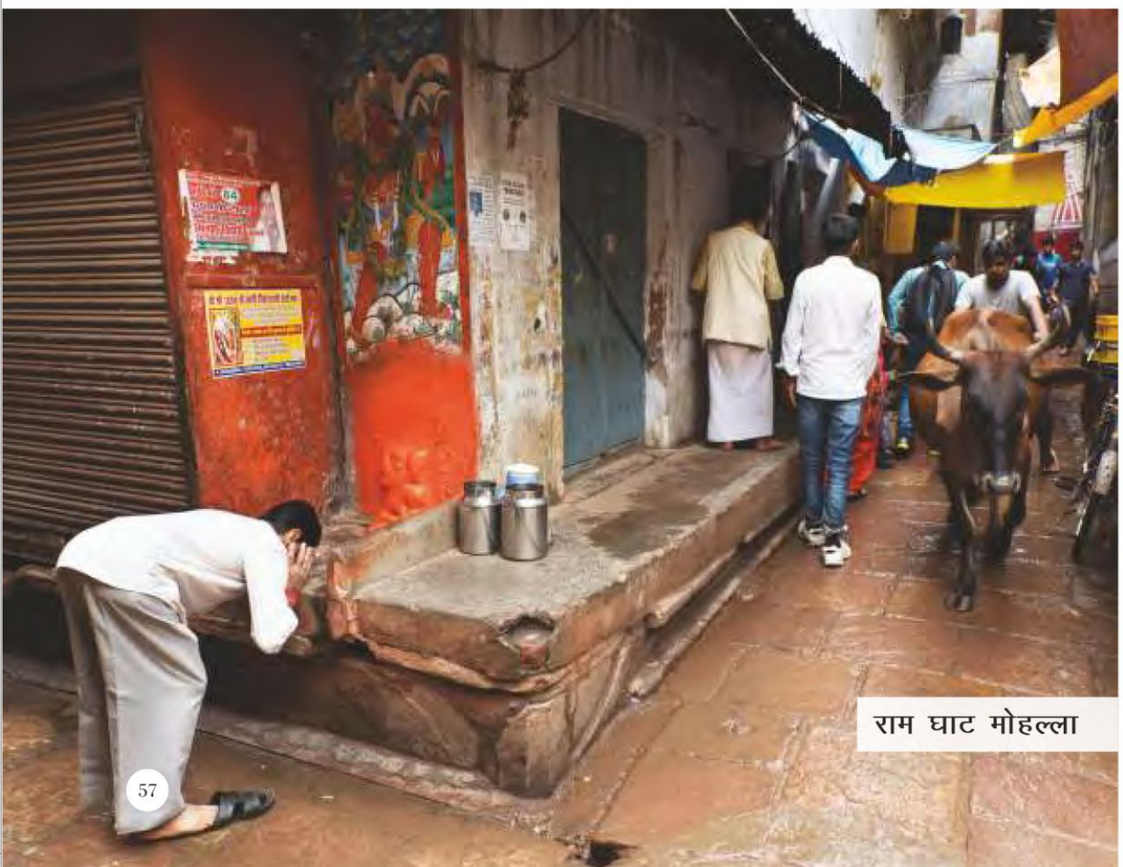




बनारस की गलियां... भूलभुलैया



ठठेरी बाज़ार



राम घाट मोहल्ला



मोक्षद्वार बोले तो मणिकर्णिका घाट जाने वाली गली



लख्खी चौतरा गली



विश्वनाथ गली



ब्रह्मनाल गली



दूध विनायक गली



महराज को दक्षिणा देकर पूजा कराते हैं. इसी तरह गायघाट में पंडित मोहन पाठक के घर में भोलेशाह बाबा की मजार है जिसका सालाना उर्स वो पूरे अकीदत के साथ मनाते हैं. मंडुवाडीह में कुतुब हजरत तैयब शाह बनारसी के रौजे पर हर जुमेरात को होने वाली बेशुमार भीड़ में मुसलमानों से ज्यादा तादात हिन्दुओं की होती है. ठीक इसी तरह दुर्गापूजा पंडाल देखने वालों में आपको ढेर सारे मुस्लिम बंधु भी दिखायी देंगे. शहर के कैंटोंनमेंट एरिया में स्थित सेंट मेरीज चर्च में क्रिसमस पर मिड नाइट प्रेयर में ईसाई समुदाय के बीच आपको ढेर सारे हिन्दू और मुसलमान आंखें बंद किये दुआ मांगते मिल जाएंगे. क्रिसमस पर इसी चर्च में लगने वाले में तीन दिन के मेले में हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई के बीच का फर्क कर पाना शायद खुद ईश्वर के लिए भी संभव नहीं होगा. क्योंकि रब को हर बंदे में अपना ही अंश दिखता है तो बंदे को हर आकार या निराकार में अपनी आस्था का प्रतीक दिखायी देता है. आप कह सकते हैं कि बनारस सबको अपने में समेट कर चलने वाला शहर है. दुनिया से लुप्त हो रही कौमें और नस्लें यहां पनाह पाती हैं. पारसी और यहूदियों का भी यहां मिलना इस बात का गवाह है कि बनारस मजहब नहीं इंसानियत की इबादत करता है. यह सब देख किसका जी यह कहना नहीं चाहेगा कि वाह बनारस! वाह.



गंगा तट पर दक्षिण भारत



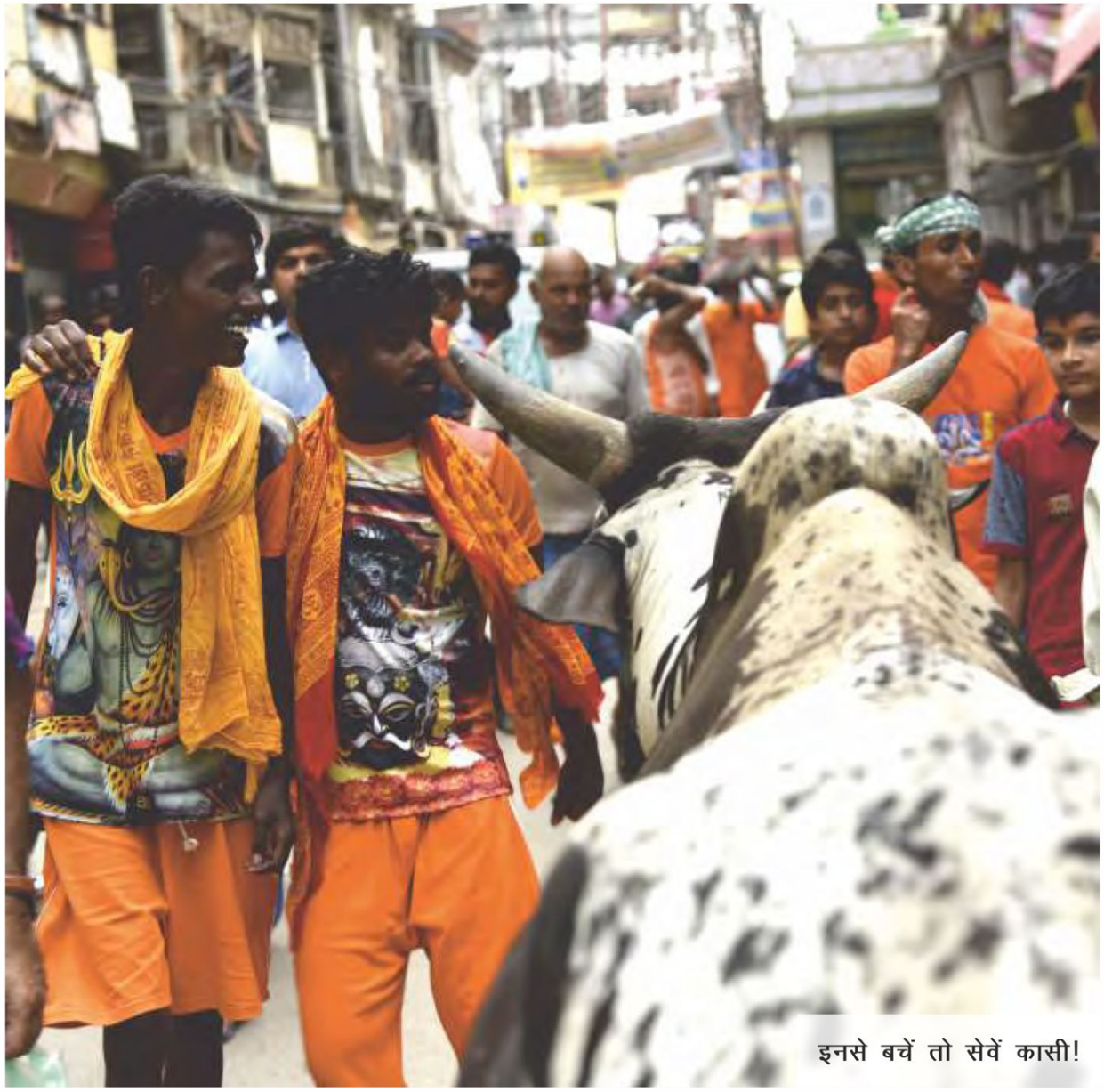
बाजुओं के जोर की गदा से आजमाइश



मियां तुम्हें सलाम करें या प्रणाम



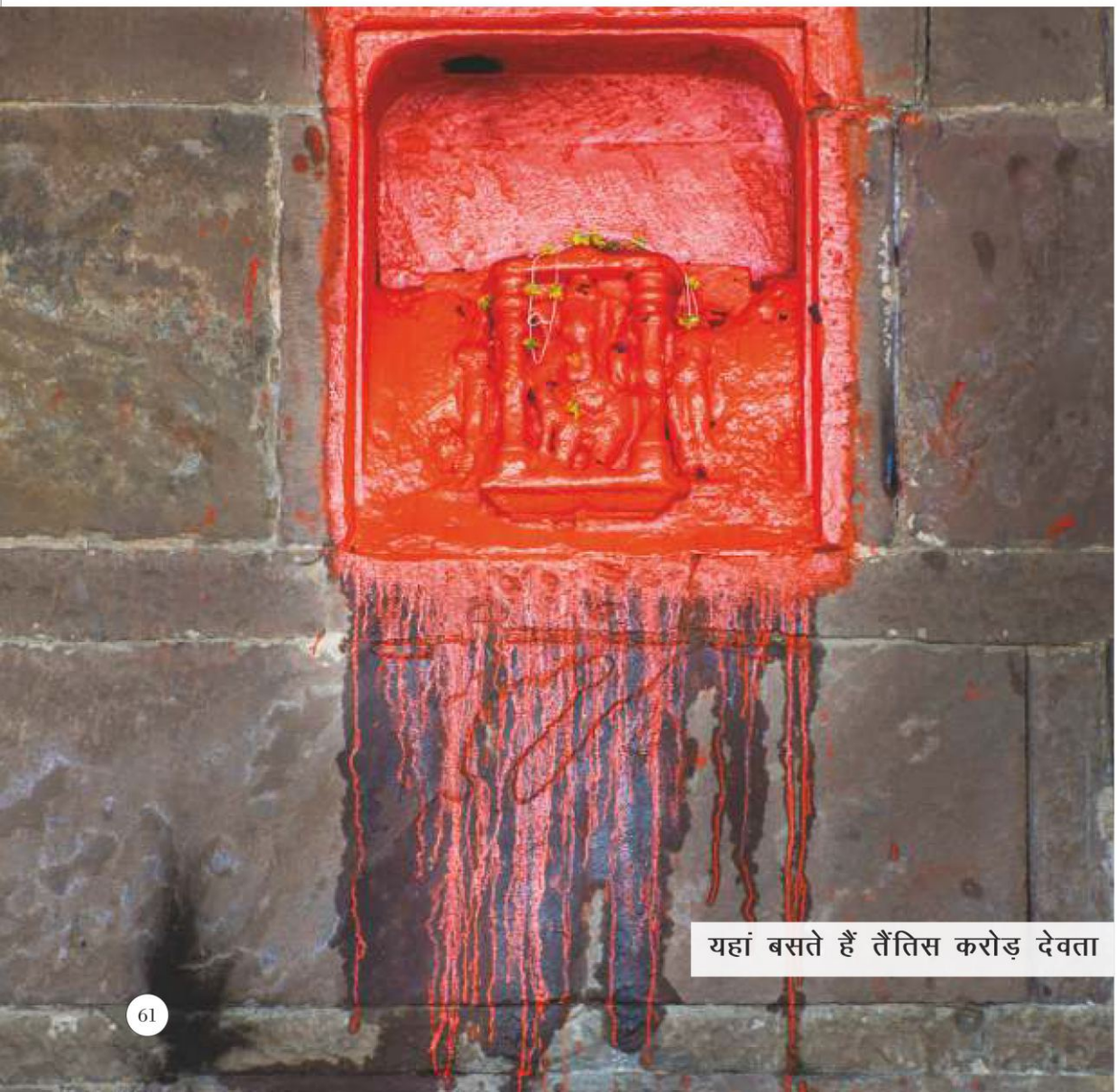
गगरी श्रद्धा की



इनसे बचें तो सेवें कासी!

जिन्दगी के रंग बनारस में

बनारस में जिन्दगी बहुरंगी है. हर लम्हा, हर घड़ी बदलती हुई. गंगा किनारे घाटों पर, तंग गलियों में या बदलते शहर की कॉलोनियों में. जिन्दगी का अक्स देखना हो तो टहल आइए घाटों पर, आपको जीवन के मायने समझ में आ जाएंगे.



यहां बसते हैं तैंतिस करोड़ देवता



घाट पर हजामत



घाट पर एक अलसाइ दोपहर



फोटो खिंचवाएंगे जनाब?



घाट पर ठलुआगिरी



पान की शान



यायावरी बनारस में



देहरी माता विशालाक्षी की



नाग पंचमी पर संपेरे ने तांत्रिक पर मारा महुवर का दांव



बनारस में सबको भाता है गंगा का घाट



काशी का एक रंग यह भी है.



लौ गंगा आरती की.



देव दीपावली पर दीयों की शक्ल में
जमीं पर उतर आए तारे



हर घाट की है अपनी आरती



आस्था के प्रति जिज्ञासा



खिदमत नंदी की



कंकर में शंकर



रक्षा बंधन पर श्रावणी उपाकर्म


यहां है एक वाइब्रेशन
सारनाथ



सारनाथ में प्राचीन अवशेषों के बीच खड़ा धम्मेक स्तूप



मूलगंध कुटी विहार



परिक्रमा धम्मेक स्तूप की



श्रीलंका मंदिर स्थित बुद्ध की
विशाल प्रतिमा



सीता रसोई सारनाथ



किसी जगह का नाम लिया जाए और पत्थर में जुंबिश आ जाए तो समझ लें कि वो और कोई नहीं सारनाथ ही है. इस नाम में एक ठंडक का अहसास है. यहां के जर्रे जर्रे में रूहानियत की सोंधी खुशबू है. इस इलाके की हर लखौरिया ईंट खुद के धरोहर होने की तस्दीक करती है. वैसे तो सारनाथ बनारस में बसता है लेकिन पूरी दुनिया में उसका अपना एक अलग वजूद है.

सारनाथ की अहमियत को सबसे पहले जाना गौतम बुद्ध ने. आज से तकरीबन छब्बीस सौ साल पहले जब तथागत को बोध गया में ज्ञान की प्राप्ति हुई तो उन्हें हुक्म हुआ कि उठो और अपने पांच शिष्यों को इस ज्ञान का उपदेश दो. गौतम चाहते तो उसी क्षण, उसी स्थान पर अपने पांच शिष्यों को उपदेश दे सकते थे. लेकिन उन्हें कहीं न कहीं इस बात का इलहाम था कि दुनिया में कोई तो एक जगह ऐसी है जो इसके अनुकूल है. जहां की आबो हवा में एक ऐसी तासीर है जो इस उपदेश को देने और पाने के लिए उपयुक्त माहौल बनाती है. वहां की मिट्टी में एक ऐसी ऊर्जा है जो गुरू के द्वारा दिये गये ज्ञान के शक्तिपात को बर्दाश्त करने की ताकत देता है.

इन सबके असर के चलते गौतम बुद्ध अपने पांच शिष्यों के साथ चल पड़े उस अज्ञात स्थान की तरफ जहां जाने का उन्हें आसमान से हुक्म हुआ था. जाहिर सी बात है कि उस जमाने में कोई जहाज, रेलगाड़ी,



सारनाथ में प्रार्थना करते बौद्ध धर्मावलम्बि

मोटर या कोई और सवारी तो थी नहीं. सो वो चल पड़े पैदल ही. दुर्गम रास्तों से होते हुए उन्हें जाना था उस स्थान पर जहां पहुंचने के लिए उनके पास न कोई नक्शा था और न कोई साधन. हालांकि इस बात का कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता कि तथागत को सारनाथ पहुंचने में कितना समय लगा लेकिन कहते हैं कि चलते चलते तथागत एक ऐसे स्थान पर आ पहुंचे जहां हिरणों का झुंड विचरण कर रहा था. बेशुमार हरियाली से सरसब्ज इस इलाके में बेखौफ चौकड़ी भरते हिरणों को देख गौतम के कदम अपने आप थम गये. वैसे भी उन्हें मृगों से बेहद लगाव था. उस जमाने के तमाम सामाजिक सरोकारों को लेकर फिक्रमंद तथागत को हवाओं ने संकेत दे दिया कि उनकी तलाश पूरी हो चुकी है. कुंड, तालाब, पोखरे और सरोवर. उसमें किल्लोल करते हंस और बत्तख. तमाम तरह के चरिंद और परिंद. मतलब पूरा इलाका नैसर्गिक रूप से इतना रमणीक कि किसी भी रहगुजर को रोक ले. सो तथागत यहीं ठहर गये.

हिरण का एक नाम सारंग भी है. उन्हें इस इलाके का नाम नहीं सूझा तो उन्होंने सारंग कह दिया. तो कुछ इस तरह से इस इलाके का नाम सारंग कहलाया जो कालांतर में सारनाथ कहलाया. नाथ शब्द गौतम बुद्ध के लिए था यानि सारंग के देवता. सुनने में भी अजीब लगता है कि ईसा पूर्व लगभग 533 साल पहले दिये गये भगवान बुद्ध के प्रथम उपदेश के करीब तीन सौ साल बाद तक का सारनाथ का इतिहास आज भी अप्राप्य है. गौतम के पहले उपदेश को धर्म चक्र परिवर्तन नाम दिया गया था. इस उपदेश स्थली को कोई धम्मेक स्तूप के करीब आज के मूलगंध कुटी विहार को बताता है तो कोई चौखंडी स्तूप को. दोनों स्थानों के बीच करीब पांच सौ मीटर की दूरी है. यह अष्टकोणीय स्तूप सारनाथ के अन्य धरोहरों के बीच बिल्कुल अलग दिखायी देता है.

चौखंडी स्तूप का अलग निर्माण शैली का होना और इस स्तूप के बाहर फारसी में लिखा एक शिलापट्ट कोई दूसरी कहानी ही बयान करता है. एक कहानी ये भी है कि अपनी सेना से बिछड़ गये मुगल सम्राट हूमायूं ने एक रात यहां बितायी थी. दरअसल सारनाथ के तमाम पूजा स्थलों को मुहम्मद गोरी ने नष्ट कर डाला था. वो तो 1905 भारतीय पुरातत्व विभाग की ओर से शुरु की गयी खुदाई से लोगों को सारनाथ की अहमयित का पता चला. बौद्ध धर्म के अनुयायियों और इतिहासकारों को पता चला कि सारनाथ कितना बड़ा तीर्थस्थान है. सारनाथ आज देश का एक बड़ा पर्यटक स्थल बन गया है. सारनाथ में आज तमाम देशों ने अपना बौद्ध मंदिर बनवा रखा है. यहां के म्यूजियम में गुप्तकाल से लेकर मौर्यकाल तक की सैकड़ों एंटीक चीजें संग्रहित कर रखी गयी हैं. खुदाई में मिला चतुर्मुख सिंह स्तम्भ भी यहां के संग्रहालय में सुरक्षित है. अशोक काल में बने इस स्तम्भ को भारत का राज चिन्ह होने का गौरव हासिल है.

सारनाथ का जिक्र हो और जैन धर्म का उल्लेख न हो ये हो ही नहीं सकता. जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म यहीं हुआ था. जैन धर्म ग्रंथों में इस स्थान का उल्लेख सिंहपुर के नाम से किया गया है. धम्मेक स्तूप के बिल्कुल करीब बना जैन मंदिर इस बात की तस्दीक करता है कि उस काल में जैन धर्म की यहां खास महत्ता थी. सारनाथ हिन्दू धर्मावलम्बियों की आस्था का भी केंद्र है. यहां सारंगनाथेश्वर का मंदिर है जो तमाम लोगों की श्रद्धा का केंद्र है. सावन के महीने में यहां मेला लगता है. ठेठ बनारसी सावन में तो यहां आते ही हैं,

बहरी अलंग का मजा लेने के लिए सारनाथ उन्हें अक्सर मौजूं जान पड़ता है. गोइंठा पर बने बाटी चोखा और हंडिया में पकी दाल की गमक बनारसियों को अक्सर ही सारनाथ खींच लाती है. हरियाली के बीच देसी भोजन पेट को तृप्त को करता है, इसके अलावा आध्यात्म से रची बसी यहां की आबो हवा आत्मा को भी सुकून देती है. रमणीक होने के कारण सारनाथ यंगर जेनेरेशन के अट्रैक्शन का सेंटर पॉइंट भी है. जब सबका जी सारनाथ में बसता हो तो हम क्यों न कहें, वाह बनारस, वाह सारनाथ.



तथागत की प्रथम उपदेश स्थली



आयुर्वेद में अपने प्रयासों के लिए सम्मानित होते हुए वैद्य डॉ0 प्रमोद जायसवाल



प्रो० रामहर्ष सिंह जी (पूर्व कुलपति जोधपुर विश्वविद्यालय, राजस्थान) काय–चिकित्सा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के साथ वैद्य प्रमोद जायसवाल जी



प्रो० डॉ० चन्द्रभूषण झा जी (डीन–आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) के साथ वैद्य प्रमोद जायसवाल जी



द्वारिका एवं बद्रीनाथ पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द महाराज जी (विद्यामठ) के साथ वैद्य प्रमोद जायसवाल जी



मुख्य न्यायाधीश श्री डी.वी. भोसले (इलाहाबाद उच्च न्यायालय) के द्वारा ''छत्रपति शिवाजी महाराज मराठा, सम्मान 2017'' प्रदान किया गया।



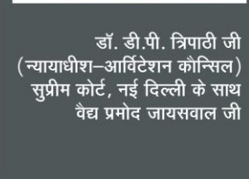
प्रो० रविदत्त त्रिपाठी जी (पूर्व निदेशक–आयुर्वेद एवं यूनानी सेवाएं उ०प्र० सरकार) के साथ वैद्य प्रमोद जायसवाल जी



प्रो० डॉ० छोटे लाल यादव जी (प्राचार्य एवं अधीक्षक–राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय) के साथ वैद्य प्रमोद जायसवाल जी



प्रो० डॉ० कमलनयन द्विवेदी जी (विभागाध्यक्ष–द्रव्यगुण, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) के साथ वैद्य प्रमोद जायसवाल जी



डॉ. डी.पी. त्रिपाठी जी (न्यायाधीश–आर्बिटेशन कौन्सिल) सुप्रीम कोर्ट, नई दिल्ली के साथ वैद्य प्रमोद जायसवाल जी



स्वास्तिक आयुर्वेद का प्रयास, स्वस्थ शरीर एवं स्वस्थ समाज का निर्माण

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त आयुर्वेद संस्थान

स्वास्तिक

आयुर्वेद योग एवं मनोविकार केन्द्र {Govt Regd.}

आयुर्वेद के क्षेत्र में स्वास्तिक आयुर्वेद, योग एवं मनोविकार केन्द्र एक अग्रणी संस्थान



वैद्य प्रमोद जायसवाल

एम0डी0 (आयुर्वेद)

(आयुर्वेद विशेषज्ञ)

- काशी नवरत्न – 2010
- काशी लोक गौरव सम्मान – 2010
- पूर्वांचल आयुर्वेद शिरोमणि रत्न – 2012
- युवा आयुर्वेद क्रान्ति सम्मान – 2014
- छत्रपति शिवाजी महाराज मराठा सम्मान – 2017

आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से जटिल से जटिल रोंगों का निवारण बिना साइड इफेक्ट के होता है। यह चिकित्सा पद्धति रोग को जड़ से समाप्त करती है। सोरायसिस जो कि एक गम्भीर बीमारी है, जिसमें आम तौर पर लाल रंग के उभरे हुए चकत्ते हो जाते हैं, जिसमें दर्द एवं जलन लगातार बनी रहती है। साथ ही साथ सामाजिक अवहेलना भी झेलनी पड़ती है, जो असहनीय हो जाती है। यह रोग मुख्यतः घुटने, पैर, कोहनी, सिर की त्वचा व नाखूनों के आस–पास होता है। परन्तु यह रोग शरीर के अन्य हिस्से पर भी हो सकता है। विश्व जनसंख्या का लगभग 2–3 प्रतिशत हिस्सा सोरायसिस से पीड़ित है, जिसमें स्त्री या पुरुष का समान अनुपात है। यह संक्रमण या किसी प्रकार की एलर्जी से नहीं होता है बल्कि वंशानुक्रमण प्रतिरोधक समानता पर्यावरणीय कारणों से होता है। आज के युग में आयुर्वेद का चमत्कार है कि इस लाइलाज बीमारी को पूरी तरह से ठीक किया जा सकता है। स्वास्तिक आयुर्वेद योग एवं मनो विकार केन्द्र के वैद्य प्रमोद जायसवाल के अथक प्रयासों से इस रोग से पीड़ित कई मरीज खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। स्वास्तिक आयुर्वेद में इलाज करा चुके मरीजों की टिप्पणियाँ:–



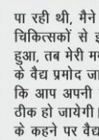
मुझे विगत वर्षों से सारोयसिस था, यह बहुत ही कष्टकारी बीमारी है। मैं सारायसिस से इतना परेशान हो चुका था कि लगता था कि मेरा यह जीवन ही निरर्थक हो गया है। लेकिन एक दिन मैंने अमर उजाला में स्वास्तिक आयुर्वेद योग एवं मनोविज्ञान केन्द्र के वैद्य प्रमोद जायसवाल जी का विज्ञापन देखा। मैंने सोचा जब इतने डाक्टरों से मैं इलाज करा चुका हूँ तो क्यों न एकबार स्वास्तिक आयुर्वेद में भी इलाज करवाकर देखा जाय। वहाँ मेरा इलाज आठ माह से चल रहा है, मुझे लगता है कि चमत्कार सा हो रहा है और तीन माह में ही मेरा सोरायसिस पूरी तरह से ठीक हो चुका था लेकिन वैद्य जी ने बताया है कि आपका इलाज दस बारह माह इसी तरह चलता रहेगा। मैं बहुत–बहुत आभारी हूँ। मैं आज खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

सुरेन्द्र अग्रहरी (इलाहाबाद)



मेरी उम्र 48 वर्ष है मुझे मेरी गलतियों का अहसास तब हुआ जब मैं विवाहित जीवन में निराशा महसूस करने लगा। मैं एकदम से डर गया और चिन्तित रहने लगा, मैंने कई वर्षों तक उत्तर प्रदेश के जाने माने चिकित्सकों से इलाज कराया, लेकिन कोई लाभ न हो सका, तभी मेरे मित्र संतोष जी ने स्वास्तिक आयुर्वेद के बारे में बताया। और मैं वहाँ गया और वैद्य डा. प्रमोद जायसवाल जी से अपना इलाज शुरू किया और आठ माह के बाद मेरी पत्नी गर्भवती हुई, और आज मैं एक संतान का पिता हूँ। ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि मेरे जैसे व्यक्ति समय रहते स्वास्तिक आयुर्वेद जाकर अपनी परेशानी दूर करें।

राज किशोर सिंह, गहमर, गाजीपुर



मुझे पिछले 18 वर्षों से गर्दन, हाथ, पैर, कुहनी, चेहरे एवं सीने पर काफी बड़े–बड़े सफेद दाग थे, जिसकी वजह से मैं और मेरे मम्मी पापा काफी चिन्तित रहते थे। जैसे–जैसे मेरी उम्र बढ़ती जा रही थी, वैसे–वैसे मेरे मम्मी पापा की चिन्ता बढ़ने लगी क्योंकि मेरी शादी सफेद दाग की वजह से नहीं हो पा रही थी, मैने उत्तर प्रदेश व पूरे भारत के अनगिनत चिकित्सकों से इलाज कराया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, तब मेरी मम्मी की एक सहेली ने स्वास्तिक आयुर्वेद के वैद्य प्रमोद जायसवाल जी के बारे में बताया और कहा कि आप अपनी बेटी का इलाज वहाँ करायें, वह जरूर ठीक हो जायेगी। मुझे तो विश्वास नहीं हुआ लेकिन मम्मी के कहने पर वैद्य जी का ईलाज शुरू कर दिया और 10 माह में मुझे सफेद दाग से मुक्ति मिल गयी और अगले साल ही मेरी शादी हो गयी, आज यह सुखी जीवन वैद्य जी की देन है, वर्ना मैं हार चुकी थी, मैं सहृदय वैद्य प्रमोद जायसवाल जी का आभार व्यक्त कर रही हूँ।

अपराजिता वर्मा, 28 वर्ष
राजेन्द्र नगर कालोनी, बरेली (उ.प्र.)



मुझे पिछले कई वर्षों ल्यूकोरिया व मोटापे की शिकायत थी। मेरा वजन 78 किलो था कई शहरों के चिकित्सकों से इलाज कराया, लेकिन मेरी समस्या दिनों दिन बढ़ती गई और दवाओं के साइड इफेक्ट से मेरा वजन 86 किलो हो गया था। मैं धन्यवाद देती हूँ स्वास्तिक आयुर्वेद के वैद्य प्रमोद जायसवाल जी को क्योंकि मैंने वहीं अपना ईलाज कराया और मात्र चार माह में मेरा वजन 56 किलो हो गया और ल्यूकोरिया की समस्या भी पूर्णतः समाप्त हो गयी।

रागिनी राय, मीरजापुर



मुझे पिछले आठ वर्षों से अस्थमा (दमा) की शिकायत थी, दिनभर खाँसते–खाँसते परेशान हो जाती थी, न जाने कितने दिनों से मैं पूरी नींद नही पायी थी इस दमा की वजह से। बहुत से चिकित्सकों से ईलाज कराया लेकिन यह रोग ठीक होने का नाम ही नही ले रहा था, अन्ततः एक दिन मुझे चन्दौली के डा. अमित जी ने स्वास्तिक आयुर्वेद के वैद्य प्रमोद जायसवाल जी का पता दिया और कहा कि वहाँ जाओ तुम ठीक हो जाओगी, मरती क्या न करती, वहाँ गई और ईलाज शुरू किया, मात्र 6 माह में मैं पूर्ण रूप से ठीक हो गयी हूँ, मैं हृदय से आभारी हूँ। वैद्य प्रमोद जायसवाल जी की वजह से मैं निरोग हो चैन की नींद सो रही हूँ।

सुप्रिया गुप्ता (चन्दौली)



मेरी उम्र 53 वर्ष है मुझे कई वर्षों से डायबिटीज की शिकायत थी। मैंने काफी समय तक उ०प्र० के जाने माने चिकित्सकों से अपना इलाज करवाया परन्तु डायबिटीज की समस्या जहाँ की तहाँ बनी रही। फिर मैने अमर उजाला में स्वास्तिक आयुर्वेद का विज्ञापन पढ़ा जिसमें मुझे डायबिटीज से मुक्ति की राह दिखाई पड़ी। स्वास्तिक आयुर्वेद में इलाज कराते हुए मुझे मात्र तीन माह हुआ है जब मैं यहाँ आया था तब शुगर लेवल 270 (खाली पेट), 342 (भोजन के बाद) और अब इलाज के बाद 83 (खाली पेट), और 156 (भोजन के बाद) हो गया है। वैद्य प्रमोद जायसवाल से इलाज कराकर मै पूरी तरह से सन्तुष्ट और स्वस्थ हूँ।

हीरामन, नरायनपुर, मीरजापुर



मैं पिछले एक वर्ष से जोड़ों के दर्द, कमर दर्द, गैस, कब्जियत व पेट की समस्याओं से काफी परेशान हो गया था। मेरी इस स्थिति का जिम्मेदार स्वयं मैं ही था। क्योंकि सुबह 9 बजे से रात 10 बजे तक लगातार बैठकर यजमानों को देखता रहता था। जब दर्द असहनीय होने लगा तो कई जाने माने चिकित्सकों से सम्पर्क किया लेकिन स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ तब मुझे मेरे एक यजमान ने स्वास्तिक आयुर्वेद के वैद्य प्रमोद जायसवाल जी के बारे में बताया कि महाराज जी आप वहाँ जाएं, वे आपका कष्ट दूर करेंगे। वास्तव में चमत्कार सा हो गया, मात्र तीन माह के इलाज से ही मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया हूँ। मैं वैद्य प्रमोद जायसवाल का आभारी हूँ, और सदैव आभारी रहूँगा जिनकी वजह से आज मैं पुनः अपने यजमानों के बीच उतना ही समय गुजार रहा हूँ।

स्वामी कन्हैया–शनि उपासक व राज ज्योतिष, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

यह प्रत्यक्ष है कि स्वास्तिक आयुर्वेद सोरायसिस के उपचार में अग्रिम योगदान दे रहा है। वाराणसी की जनता ही नहीं, बल्कि दूर दराज से भी लोग अपना उपचार कराने स्वास्तिक आयुर्वेद आते हैं। इसके अलावा स्वास्तिक आयुर्वेद में अन्य बहुत सी बीमारियों का भी ईलाज होता है, जैसे – कैन्सर, मधुमेह, गठिया (जोड़ों का दर्द), मोटापा, लकवा, मिर्गी, अस्थमा, साइनस, मूत्रविकार, उदर रोग, लीवर रोग, यौन रोग एवं चर्म रोग स्वास्तिक आयुर्वेद में वैद्य प्रमोद जायसवाल द्वारा सटीक तरीके से रोगों को पहचान कर उनका उचित इलाज किया जाता है।

कैंसर, मधुमेह (शुगर), मोटापा, गठिया (जोड़ो का दर्द, कमर दर्द) लकवा, मिर्गी, अस्थमा, साइनस, सियाटिका, किडनी रोग, मूत्र विकार, कब्ज, उदर एवं लीवर रोग।

चर्म रोग-खुजली, सोरायसिस, सफेद दाग,/ल्यूकोडर्मा, एक्जीमा, जलपुत्ती (शीतपित्त), केश विकार, (गंजापन, बालों का झड़ना असमय सफेद होना), सौन्दर्य विकार (मुहाँसे, तिल, झाँई, दाग-धब्बे)

शिवा काम्प्लेक्स (प्रथम तल) कुबेर काम्प्लेक्स के सामने, रथयात्रा चौराहा, वाराणसी

सम्पर्क करें : 9838615666, 9839411584



वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल

एम0डी0 (आयुर्वेद)

प्रमुख चिकित्सक, स्वास्तिक आयुर्वेद, योग एवं मनोविकार केन्द्र

पिता का नाम – श्री ईश्वर चन्द्र जायसवाल

माता का नाम – श्रीमती शकुन्तला जायसवाल

जन्मतिथि – 30/03/1978

पता– शिवा काम्प्लेक्स प्रथम तल (कुबेर काम्प्लेक्स के सामने) रथयात्रा चौराहा, वाराणसी

रूचि–

आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा रोगियों की चिकित्सा एवं सेवा

शैक्षिक योग्यता –

1.हाईस्कूल – 1992 – बंगाली टोला इण्टर कालेज, वाराणसी यू0पी0बोर्ड – उत्तीर्ण प्रथम श्रेणी

2.इण्टरमीडिएट – 1994 – राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज, मिर्जापुर, – यू0पी0बोर्ड – उत्तीर्ण प्रथम श्रेणी

3.बी0ए0एम0एस0 – 2004 – ललितहरि राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, पीलीभीत – सी0एस0जे0एम0 वि0वि0, कानपुर – उत्तीर्ण प्रथम श्रेणी

एम0 डी0 ; आयुर्वेद क्रिया शारीर – हिमालयीय आयुर्वेदिक कालेज एवम् चिकित्सालय, देहरादून उत्तराखण्ड आयुर्वेद विश्वविद्यालय देहरादून उत्तराखण्ड – उत्तीर्ण प्रथम श्रेणी से ग्रेड 'ए' प्राप्त

उपलब्धियां

- ललितहरि राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, पीलीभीत में छात्रसंघ – अध्यक्ष (सन् 1999 से 2003 तक निर्विरोध चयनित) ।
- वर्ष 2003 में ललितहरि राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, पीलीभीत के 100 वर्ष पूर्ण होने पर शताब्दी समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया जिसके उपलक्ष्य में डॉ0 विनोद तिवारी जी (पूर्व स्वास्थ्य राज्य मंत्री, उ0प्र0 शासन) के द्वारा सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2004 में स्वास्तिक आयुर्वेद, योग एवं मनोविकार केन्द्र प्रा0 लि0 नामक सस्था की जनपद वाराणसी में स्थापना की, इस संस्था में समस्त प्रकार के रोगियों को चिकित्सकीय सेवा प्रदान की जाती है।
- चिकित्साभ्यास के दौरान वाराणसी के सुप्रसिद्ध चैनल (श्रद्धा चैनल) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को काशी नवरत्न – 2010 से नवाजा गया।
- चिकित्साभ्यास के दौरान वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को डॉ0 डी0पी0 त्रिपाठी, न्यायाधीश–आर्बिटेशन काउन्सिल, सुप्रीम कोर्ट, नई दिल्ली, डॉ0 अत्री भारद्वाज, अध्यक्ष–प्रेसक्लब वाराणसी व शिव रूद्राक्ष रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष – डा0 अनूप कुमार जायसवाल जी की अध्यक्षता में विश्व शान्ति सदभावना क्रान्ति की भावना जन–जन के मन में जाग्रत करने के लिये श्री काशी विश्वनाथ लोकगौरव सम्मान–2011 प्रदान किया गया।
- आयुष मेडिकल आर्गेनाइजेशन, वाराणसी की तरफ से वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को पूर्वान्चल आयुर्वेद शिरोमणि रत्न–2012 प्रदान किया गया।
- सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य डा0 लक्ष्मण दास जी के द्वारा वर्ष 2013 में वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सर्वोत्कृष्ट आयुर्वेदिक चिकित्सक सम्मान–2013 से नवाजा गया।
- सुप्रसिद्ध राजज्योतिष श्री शनि महाराज जी के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को युवा आयुर्वेद क्रान्ति सम्मान–2014 से नवाजा गया।
- प्रोफेसर डा0 रामहर्ष सिंह जी (पूर्व कुलपति–जोधपुर विश्वविद्यालय–राजस्थान, पूर्व विभागाध्यक्ष–काय चिकित्सा, काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी, पदमश्री विभूषित) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- प्रो0 डा0 रविदत्त त्रिपाठी जी (पूर्व निदेशक–आयु0 एवं यूनानी सेवायें, उ0प्र0 सरकार, पूर्व प्राचार्य, हण्डिया आयु0 कालेज, पूर्व आयु0डीन, सी0एस0जे0एम0 वि0वि0, कानपुर) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मान दिया गयां।
- प्रो0 डा0 चन्द्रभूषण झा जी (पूर्व डीन–आयु0 संकाय, काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- प्रो0 डा0 छोटे लाल यादव जी, (पूर्व प्राचार्य एवं अधीक्षक– राज0आयु0महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि0वि0, वाराणसी के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- प्रो0 डा0 कमल नयन द्विवेदी जी, (पूर्व विभागाध्यक्ष–द्रव्यगुण काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- द्वारिका एवं बद्रीनाथ पीठीधीश्वर जगदगुरू शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी महाराज जी के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- श्री राजीव मल्होत्रा जी, (पूर्व पुलिस अधीक्षक, शहर वाराणसी) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- श्री राजेश जी, (एडीशनल पुलिस अधीक्षक, गाजियाबाद, उ0प्र0) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- श्री राजेश मिश्रा जी, (पूर्व सांसद, जनपद वाराणसी) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- श्री श्याम देव राय चौधरी जी, (पूर्व कैबिनेट मंत्री, उ0प्र0 शासन, वर्तमान विधायक, शहर दक्षिणी वाराणसी) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- श्री राधेलाल श्रीवास्तव जी (पूर्व अध्यक्ष, सेन्ट्रल बार एशोसियेशन, जनपद वाराणसी) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- श्री अभय सिंह जी, (पूर्व विधाायक, गोसाईंगंज, जनपद फैजाबाद) के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- वाराणसी के सुप्रसिद्ध चैनल '' अभी तक '' के द्वारा वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- वाराणसी के अर्न्तराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त महामूर्ख सम्मेलन (1 अप्रैल) में महामूर्ख की उपाधि से नवाजा गया एवं मुख्य अतिथि के रूप में वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2016 को वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल ने रोगियों के कल्याण हेतुं औषधि निर्माण के लिये स्वास्तिका हर्बल नामक दवा की फैक्ट्री की शुरूआत की।
- वर्ष 2016 में वैद्य (डा0) प्रमोद कुमार जायसवाल ने जनहित को ध्यान में रखते हुये स्वास्तिका फाउण्डेशन नामक ट्रस्ट की स्थापना की जिसका उद्देश्य गरीब व असहाय मरीजों की निःशुल्क चिकित्सा, गरीब व आदिवासी बच्चों की शिक्षा व गरीब युवतियों की शादी कराकर देशहित में योगदान दे सके, ऐसा ट्रस्ट का उद्देश्य है।
- वर्ष 2017 में वैध प्रमोद जायसवाल जी ने जनहित को ध्यान में रखते हुये Swastika Beverages के नाम से एक यूनिट करिखियॉव एग्रो पार्क फूलपुर, वाराणसी में शुरू किया।

न्यू काशी कुटुम्ब

NEW KASHI INFRAVISION PVT. LTD.





2 , 3 , एवं 5 BHK Singlex एवं Dupels...

- 100% सीसीटीवी कैमरा से सुरक्षित
- 24 घंटे , पानी, बिजली की व्यवस्था
- वास्तुशास्त्र के मानक अनुरूप
- सिक्योरिटी गार्ड की सुविधा
- 30 फीट चौड़ी सड़क
- सोलर लाइट सिस्टम
- खेल-कूद का मैदान
- सुसज्जित पार्क







NEW KASHI INFRAVISION PVT. LTD

SITE ADD.: सराय तक्की, K.J. HOTEL के पीछे, सन्मुख हास्पिटल के बगल में, बाबतपुर, वाराणसी।

OFFICE ADD.: IMLOK II, NEAR TAJ HOTEL, NADESAR, VARANASI

सम्पर्क नं. 9565395151, 7521800305, 7521800304, 7521800303



मो. कलीम

डायरेक्टर

न्यू काशी इंफ्राविजन प्राइवेट लिमिटेड

✦ कमाल का जज्बा है कलीम का

लहरों की सवारी करने वाले मो0 कलीम पूरी दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का माद्दा रखते हैं लेकिन उन्हें एहसास है कि जिंदगी सिर्फ खुद के लिए जी नहीं जाती दूसरे के लिए जीने वाला है सच्चा इंसान होता है जरूरतमंदों के लिए कुछ करने की गहरी सोच रखकर मर्चेंट नेवी की प्रतिष्ठापरक नौकरी छोड़कर घर लौट आए और रियल स्टेट कम्पनी के जरिये उनके लिए घर बना रहे हैं जिनका सपना अपना घर बनाना है लेकिन रुपयों की कमी की वजह से नहीं बना पा रहे हैं।

✦ सबका है ख्याल

अकथा के रहने वाले मर्चेंट नेवी में नेवीगेशन ऑफिसर रहे मो0 कलीम ने न्यू काशी इंफ्राविजन प्राइवेट लिमिटेड के नाम से रियल स्टेट फर्म बनाया है और बाबतपुर में ही एक बड़ा प्रोजेक्ट लांच किया है इसमें ऐसे घर बना रहे हैं जो हर किसी की जरूरत को पूरा कर सकें। प्रोजेक्ट लांच करने के पीछे मो0 कलीम की सबसे महत्वपूर्ण सोच यह है कि इसकी कीमत ऐसे हो जो हर कोई आसानी से हासिल कर सके उन्हें एहसास है कि अपने घर की खुशी क्या है लेकिन मुश्किलों भरी जिंदगी में हर किसी को घर नसीब नहीं है, तमाम ऐसे लोग हैं जो मकान तो लेना चाहते हैं लेकिन वो महंगे मकान नहीं खरीद सकते हैं पर मो0 कलीम गुणवत्ता से समझौता किये बिना लोगों के लिए सस्ता घर तैयार करा रहे हैं।

✦ नेचर पर खास नजर

मो0 कलीम जो टाउनशिप डेवलप कर रहे हैं उसमें लोगों के लिए हर सुविधा मौजूद है खासियत है कि प्लांड इंफ्रास्ट्रक्चर है जिसे देखने के बाद एहसास हो कि इसका प्रकृति से बेहद जुड़ाव है और हर तरफ ग्रीनरी नजर आती है, पार्क और सीवेज सिस्टम बेहद एडवांस हैं यहां एनर्जी के लिए भी प्रकृति पर खास ध्यान दिया गया है। प्रोजेक्ट में सोलर एनर्जी प्लांट लगाया जा रहा है ताकि बिजली की जरूरत को पूरा किया जा सके, खुली ताजी हवा सबके को मिले इसलिए पार्क और गार्डन हैं।

✦ मजबूत है इरादा

मुम्बई से बीसीए की पढ़ाई पूरी करने के बाद अन्य नौजवानों की तरह मो0 कलीम भी बड़े सपने लेकर जिंदगी के जंग में उतरे उन्होंने अपने मजबूत इरादों के मुताबिक ही काम भी चुना मर्चेंट नेवी में नेवीगेशन ऑफिसर की प्रतिष्ठापरक नौकरी शुरू की इसके साथ एक आलीशान जिंदगी बिता रहे थे फिर उन्हें एहसास हुआ कि वो समाज के प्रति अपने दायित्व को निभा नहीं पा रहे हैं उन्होंने नौकरी को छोड़कर सोसायटी के लिए कुछ करने का मन बनाया और घर आ गए। हालांकि परिवार को यह रास नहीं आया कुछ ने उनके निर्णय



राग रागिनी यहां करती हैं

साधना



बनारस का संगीत घराना और यहां के संगीतज्ञ रियाज को काफी अहमियत देते हैं. गिरिजा देवी तो जिन्दगी के आखिरी लम्हों तक करती रहीं नादब्रह्म की उपासना



बनारस की आबो हवा का असर यहां की कला और संस्कृति पर भी पड़ा है. यहां के संगीत में एक अजीब सी कशिश है. एक शिद्दत है जो सुनने वाले की आत्मा को परमात्मा से मिलाने का सबब बनता है. हर मंदिर के नौबतखाने में अल सुबह बजने वाली शहनाई भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खां की होती है तो कई मस्जिद ऐसे हैं जहां पेश–ए–इमाम को अजान देने के लिए जगाने का काम कोई हिन्दू नौजवान करता है. यहां घाटोंऔर मंदिरोंमेंबजने वाली घंटियोंमें एक रिदम है तो अजान की सदा मेंएक ऐसा सुर है जिसे सुन कर परमपिता अपने बंदों से तुरंत मुखातिब हो जाता है.

बनारस घराने के संगीत की चर्चा हो और उसमें अगर यहां के दिग्गजों का जिक्र हो तो फेहरिस्त इतनी लम्बी हो जाए कि उसी पर आप एक पूरा ग्रंथ लिख डालें. यह पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, कंठे महराज, गुदई महराज और सिद्धेश्वरी देवी का शहर है. यहां उस्ताद बिस्मिल्ला खां, पंडित रविशंकर और पंडित किशन महराज ने शहनाई, सितार और तबले को एक नई ऊंचाई प्रदान की. सिताारा देवी, गोपीकृष्ण और बिरजू महराज के नृत्य ने पूरी दुनिया को कथक की एक ऐसी शैली से रूबरू कराया जिसे दुनिया ने बनारस घराने के नाम से जाना. सिद्धेश्वरी देवी, बागेश्वरी देवी और गिरजा देवी की ठुमरी, चैती, कजरी और होरी फोक आर्ट का पर्याय बन गये. पंडित अनोखे लाल मिश्र और सामता प्रसाद के तबले की थाप भी सुदूर देशों तक सुनी गयी.

बनारस घराने का संगीत पूरी दुनिया में देदिप्यमान नक्षत्र की तरह आज भी चमक रहा है. पद्मभूषण पंडित राजन–साजन मिश्र, पद्मभूषण पंडित छन्नू लाल मिश्र इस परचम को थामे हुए हैं. उम्र की अस्सी दहलीज पार करने के बाद पद्मविभूषण गिरजा देवी की गायकी अभी कुछ दिनों पहले ही खामोश हो गई. उनकी शिष्या फोक सिंगर मालिनी अवस्थी ठुमरी, चौती, कजरी और होरी सहित लोक संगीत की तमाम विधाओं को दुनिया भर में प्रेजेंट कर रहीं हैं.

बनारस की एक खासियत है. वो धरोहरों को संजोने का काम करता है. इसके लिए ईवेंट कराते रहना उसका शगल है तो कल्चर की उन ब्रांचेस या सब ब्रांचेस के वजूद को हर हाल में कायम रखना वह अपना फर्ज समझता है. यहां के प्रसिद्ध संकट मोचन हनुमान मंदिर में हर साल होने वाला संकट मोचन संगीत समारोह इसकी एक नजीर है. पं. जसराज, पं शिवकुमार शर्मा, पं. शिवकुमार चौरसिया, उस्ताद अमजद अली खां और डांस की मणिपुरी शैली के



उस्ताद बिस्मिल्ला खां



पं0 राजन साजन मिश्र



ध्रुपद मेला



सितारा देवी



पर्याय रतिकांत महापात्र और सुजाता महापात्र जैसे देश के दिग्गज आर्टिस्ट हर साल इस समारोह में हाजिरी लगाते हैं. इस समारोह की खासियत ये है कि एक हफ्ते तक रातभर चलने वाले कार्यक्रम में नामचीन के आलावा देश के नवोदित कलाकारों को भी परफॉर्म करने का मौका दिया जाता है.

जैसा हमने कहा कि बनारस अपनी थाथी को संजोने का काम करता है, इसका उदाहरण है यहां का ध्रुपद मेला. गंगा किनारे तुलसी घाट पर एक भव्य लॉन में होने वाले इस आयोजन में देश के नामचीन डागर बंधुओं के साथ ही अन्य ध्रुपद गायक भी कार्यक्रम प्रस्तुत कर खुद को धन्य समझते हैं. ध्रुपद धमार की गायकी थोड़ी कठिन मानी जाती है. आज ध्रुपद सिखाने वालों के साथ ही गाने वालों की संख्या भी गिनती की रह गयी है. इसके चलते गायकी की इस शैली के लुप्त हो जाने का खतरा मंडरा रहा है. लेकिन बनारस का संगीत जगत इस संकट को टालने का काम कर रहा है.

गंगा महोत्सव भी बनारस के बड़े आयोजनों में से एक है. हालांकि यह बनारस के नये आयोजनों में से एक है लेकिन देश के बड़े कलाकारों में इसमें शिरकत करने की चाहत इस समारोह के पॉपुलैरिटी को बयान करती है. बनारस जिला प्रशासन की ओर से हर साल कार्तिक माह में एक हफ्ते तक आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम कई मामलों में अनूठा है. इस समारोह का मंच घाट किनारे गंगा की धारा में बनाया जाता है जबकि दर्शक और श्रोता गंगा तट पर सीढियों पर बैठ कर इसका आनंद लेते हैं. कार्तिक मास के अंतिम सप्ताह में होने वाले इस आयोजन का समापन पूर्णिमा को देव दीपावली के दिन होता है.



गंगा किनारे हर रोज होता है घाट संध्या का आयोजन

बनारस के कल्चरल इवेंट की चर्चा हो और उसमें बुढ़वा मंगल का जिक्र न हो तो थोड़ा अटपटा लगता है. काशी का यह प्राचीन संगीत आयोजन बीच में प्रायः लुप्त सा हो गया था लेकिन हाल ही में कुछ रसिक जनों के प्रयास के कारण यह फिर जिंदा होने को है. ऐसा ही कुछ हाल बनारस के बड़े आयोजनों में से एक रिम्पा का है. अब यह आयोजन और उससे जुड़े किस्से इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गये हैं. पं. रविशंकर के बड़े भाई पं. उदय शंकर इसके संयोजक हुआ करते थे. कई कारणों से अर्से पहले बंद हुआ रिम्पा आज तक फिर शुरु नहीं हो सका.

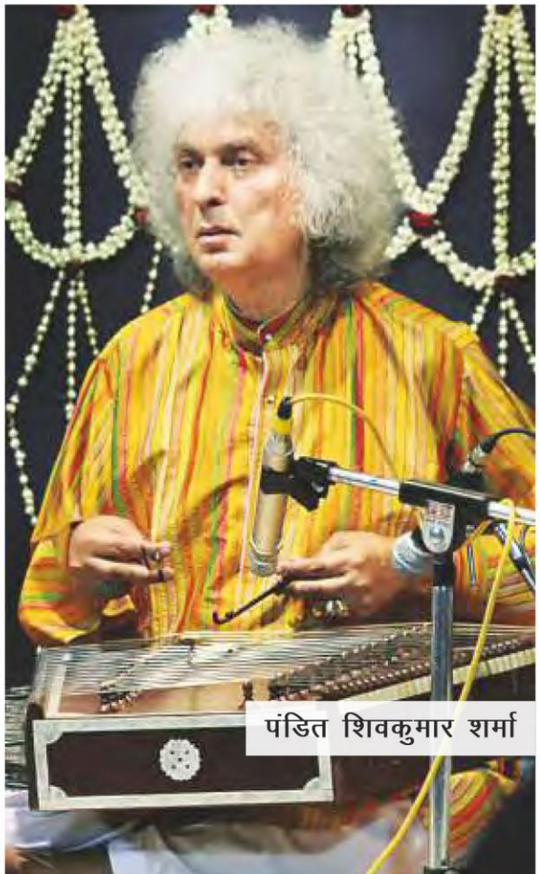
दरअसल काशी की संगीत परम्परा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है. गायन, वादन और नृत्य के इतिहास में बनारस के आर्टिस्ट्स का अंशदान उल्लेखनीय रहा है. गुरु शिष्य की परम्परा यहां आज भी बदस्तूर कायम है. बनारस घराने का गुरु किसी को तभी गंडा बांधता है जब शिष्य का गायन सुर में हो. यहां आज भी चारों पद की गायकी गायी जाती है. खयाल के अलावा ठुमरी–टप्पा, कजरी–चैती, भजन–गजल और ध्रुपद–धमार के पारंगत कलाकारों का सिलसिला यहां आज भी कायम है. वीणा, सरोद, सितार, बांसुरी, शहनाई और तबला में बनारस के पुराने संगीतज्ञों ने जो नाम यश अर्जित किया है उसे बरकरार रखने की कोशिश आज के कलाकार कर रहे हैं. बनारस में गायकी की तमाम शैली के पनपने की कई वजहें रही हैं. यहां का कलाकार राग की पाकीजगी को बनाये रखते हुए उसके विजुअलाइजेशन और क्रिएशन को अपने रंगों से सजाता है. इसके अलावा यहां सुर के साथ ही लय के चलन पर भी काफी मेहनत की जाती है. काशी की खासियत यह भी रही है कि यहां के अधिकांश संगीतज्ञ मूलतः बाहर के रहने वाले थे. यह अलग बात है कि उनकी शिक्षा कहीं बाहर ही हुई



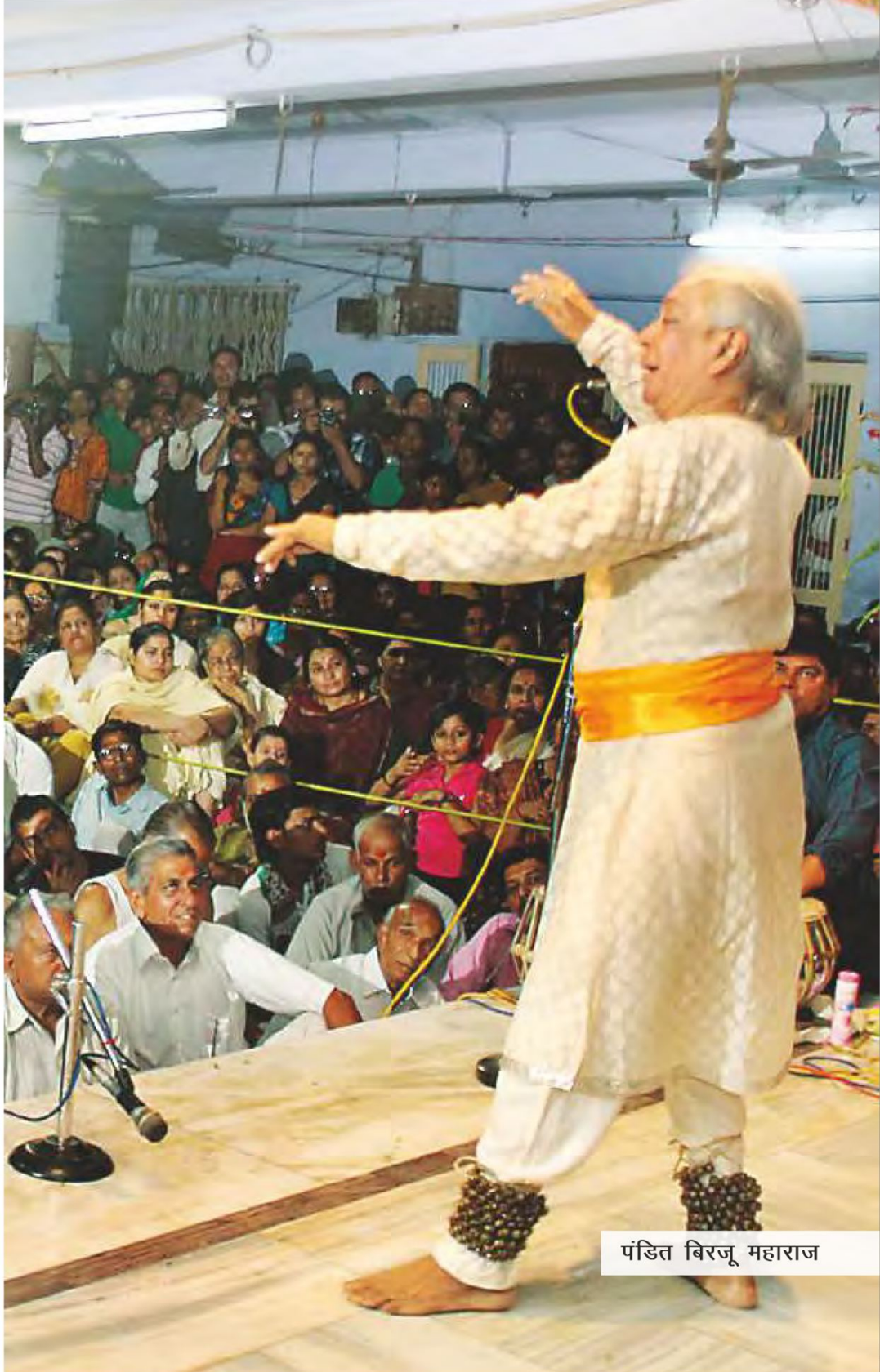
गंगा महोत्सव



उस्ताद अमजद अली खान



पंडित शिवकुमार शर्मा



पंडित बिरजू महाराज



लेकिन बाद में वो बनारस आकर बस गये और उन्होंने यहां गायकी की एक नयी शैली विकसित की जिसे बनारस घराने का नाम दिया गया.

कहते हैं कि काशी के प्रमुख संगीतज्ञों में पहले गायक पं. दिलराम मिश्र सन् 1530 में वृंदावन से बनारस आये थे और उन्होंने यहां स्वामी हरिदास से संगीत की दीक्षा ली. वो सेवक उपनाम से गायकी करते थे. इस उपनाम से रचित ध्रुपद के सारे राग इन्हीं के तैयार किये हुए थे. बाद के वक्त में इन्हीं की वंश परम्परा में ठाकुर दयाल जी हुए जो काफी चर्चित हुए. गायकों का यह खानदान अयोध्या के नवाब सआदत अली खान के यहां से होता हुआ अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के यहां तक कायम रहा. बाद में इस वंश के लोग नेपाल नरेश के यहां भी दरबारी गायक रहे. इसी खानदान के रामसेवक जी ध्रुपद–धमार के साथ ही वीणा, सितार और तबला वादन में भी पारंगत थे. उन्होंने 1896 में ताल प्रकाश नाम से एक ग्रंथ की रचना की. इस ग्रंथ में पुराने शास्त्रीय तालों के बारे में उल्लेखनीय वर्णन किया गया है. रामसेवक जी के दो पुत्र भी खानदानी गायकी में अनूठे थे. इनमें से शिवा और पशुपति की जोड़ी ने बहुत प्रसिद्धी पायी. उनके शिष्यों में नृत्यांगना सितारा देवी के पिता शुकदेव महराज, छोटे रामदास मिश्र और बूंदी मिश्र शामिल हैं.



किशन महाराज के घर पर तबले की क्लास



पं. छन्नूलाल मिश्रा

काशी का दूसरा घराना पं. शिवदास जी और पं. प्रयाग जी का माना जाता है. इसी खानदान की शिष्य परम्परा में सितार वादक पं. रविशंकर के पिता पं. श्याम शंकर जी भी आते हैं. सुर कोकिला के नाम से ख्यात गायिका सिद्धेश्वरी देवी (1908–1977) इसी घराने की शिष्य परम्परा में आती हैं. इस घराने की खासियत थी कि यहां के लोग गायन के अलावा सितार, वीणा और तबला वादन में सिद्धहस्त हुआ करते थे. खयाल और ठुमरी गाने के अलावा इस घराने के गुणी कलाकार बेहतरीन सारंगी बजाते थे.

बनारस के बड़े संगीतविदों में पंडित बड़े रामदास जी और पंडित छोटे रामदास जी का नाम भी आता है. इसी घराने में बाद की कड़ी में नाम आता है पंडित महादेव प्रसाद मिश्र (1906–1995) का. इनकी वंश परम्परा में अमर नाथ मिश्र, पशुपति मिश्र, पूर्णिमा चौधरी, विष्णु प्रसन्ना, अनंत लाल और ईश्वर लाल मिश्र का नाम आता है.

बनारस घराने की गायकी में अगर कोई शुद्धता की बात करता है तो वो गिरजा देवी का नाम जरूर लेगा. अपने मुरीदों में अप्पा जी के नाम से पॉपुलर गिरजा देवी ने प्रसिद्ध सारंगी वादक पं. सरयू प्रसाद मिश्र और पं. श्रीचंद मिश्र से गायन की तालीम हासिल की. गिरजा देवी को आज ठुमरी का पर्याय माना जाता है लेकिन इस मुकाम को हासिल करने के लिए उन्हें समाज से जबर्दस्त लोहा लेना पड़ा. उनके पहले ठुमरी और खयाल गायकी में सिर्फ



पुरूषों का ही वर्चस्व था. ऐसे में एक महिला गायिका को मंच मिलना कोई आसान नहीं था. बाद में अपने हुनर के दम पर संगीत जगत में वो ऐसे स्थापित हुईं कि पूरी दुनिया ने उनका लोहा मान लिया.

पं. राजन–साजन मिश्र के खानदान में उनके परदादा दादा पं. बड़ागणेश मिश्र, दादा पं. सुरसहाय मिश्र और पिता पं. हनुमान मिश्र तथा चाचा पं. गोपाल मिश्र आला दर्जे के सारंगी वादक थे. पं. राजन–साजन मिश्र ने वैसे तो गायकी अपने पिता से सीखी लेकिन इन्हें कुछ समय तक के लिए पं. बड़े रामदास जी का भी सानिध्य मिला. यही वजह है कि इन दोनों भाइयों की गायकी में एक ओरिजनैल्टी सुनने को मिलती है. उनकी आपस की लयकारी और सुरों की पाकीजगी उन्हें आज देश का टॉप मोस्ट सिंगर बना जाती है.

बनारस के तबला नवाजों में सबसे पहला नाम पं. रामसहाय जी (1797–1843) का आता है. उनके शिष्यों और प्रशिष्यों का यह सिलसिला बढ़ते हुए पं. सामता प्रसाद उर्फ गोदई महराज तक आता है. यहां पं. लक्ष्मीनारायण उर्फ लच्छू महराज का नाम भी लिया जाना चाहिए. पं. रामसहाय जी की वंश परम्परा में पं. भैरवसहाय और उनके इकलौते बेटे रहे बलदेव सहाय जी हैं.

इनके प्रमुख शिष्यों में पं. कंठे महराज और दुर्गा सहाय जी का नाम आता है. पं. कंठे महराज और उनके भाई बीरू महराज ने बनारस की तबला नवाजी को देशभर में प्रतिष्ठित किया. कंठे महराज की परम्परा को आगे बढ़ाया उनके भतीजे किशन महराज ने. किशन महराज ने साठ से ज्यादा साल तक देश विदेश में इतने प्रोग्राम दिए कि लोग तबले का नाम लेते ही उनका नाम लेते थे. तबले के अलावा मृदंग वादन में भी बनारस की अपनी हनक थी. लोग बताते हैं कि संकट मोचन मंदिर के छोटे महंत पं. अमरनाथ मिश्र जी इतनी एकाग्रता से मृदंग वादन करते थे कि सुनने वाले ध्यान की अवस्था में चले जाते थे.

दुनिया में सितार को अगर किसी ने पहचान दिलायी तो यकीनन वो पं. रविशंकर ही थे. आप कह सकते हैं कि सितार बजाने में उन्हें सिद्धी हासिल थी. शुरुआती दौर के बाद उन्होंने बनारस छोड़ दिया और अमेरिका जा बसे. वैसे पंडित जी के पहले पं. लक्ष्मीप्रसाद मिश्र और मनोहर जी का सितार और सारंगी बजाने में कोई जोड़ नहीं था. इस समय पं. देबू चौधरी का परिवार बनारस के सितार को जिंदा रखने के प्रयास में है.

शहनाई का जिक्र होते ही भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्ला खां का अक्स जेहन में उभरता है. इस विनम्र आर्टिस्ट ने मंगल वाद्य शहनाई को गंगापुजैया से उठा कर एक ऐसे मुकाम तक पहुंचाया जहां पहुंचना विरल होता है. खां साहब दूसरे और संगीतज्ञों की तरह बनारस के नहीं थे. वो बिहार से आकर यहां बसे और बनारस के होकर रह गये. आज भी इनके खानदान के लोग देश विदेश में शहनाई को स्थापित किये हुए हैं.

वैसे तो किसी म्युजिकल इवेंट को कराना कराना आसान नहीं होता. इन सबके बावजूद बनारस जिन आयोजनों की मेजबानी कर रहा है वह अपने आप में खास है. यही वजह है कि देश भर के बड़े आर्टिस्ट बनारस को झुक कर सलाम करते हैं.

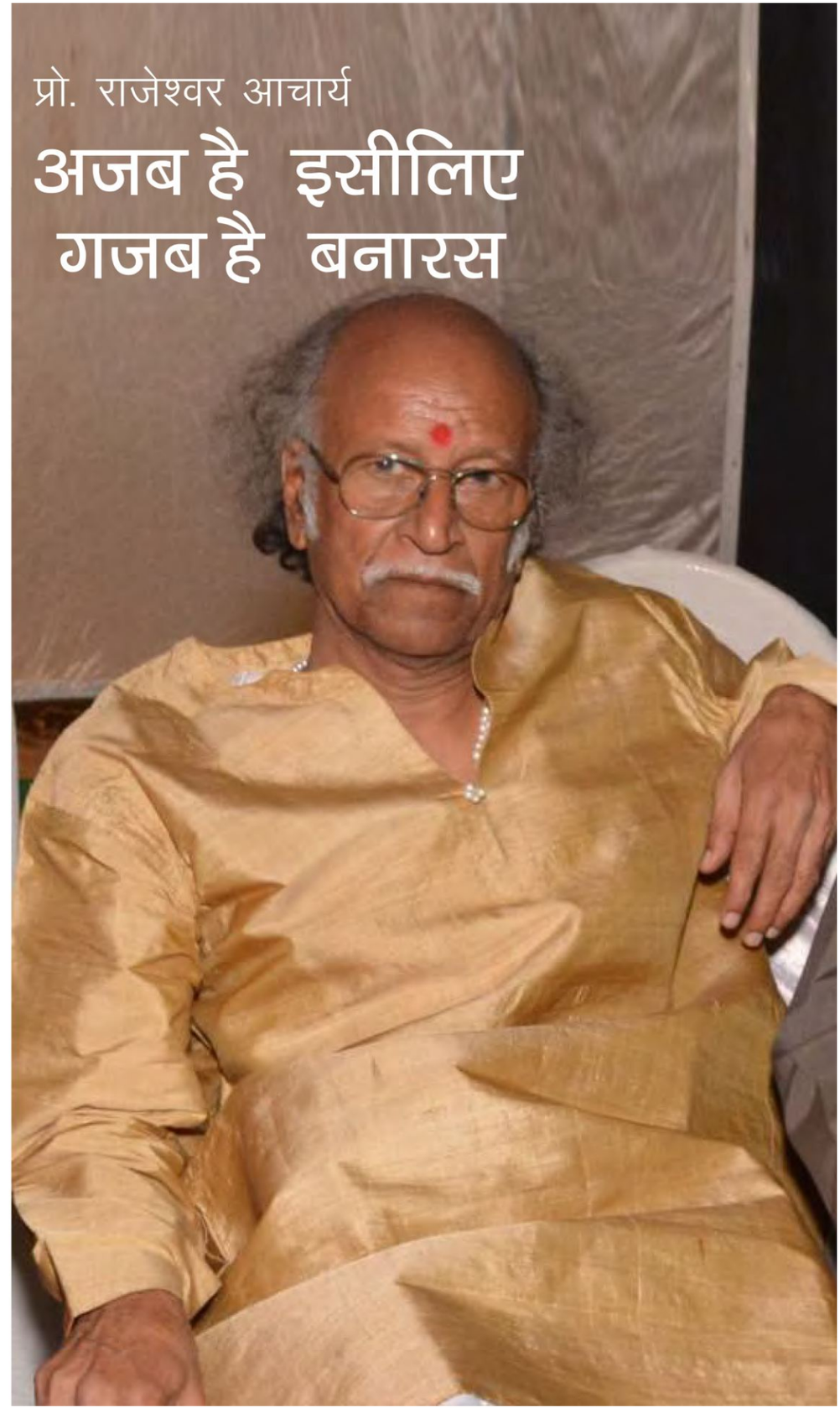
वाह बनारस!



हर सुबह अस्सी घाट पर सजने वाले मंच को मिलता है एक नया कलाकार

प्रो. राजेश्वर आचार्य

अजब है इसीलिए गजब है बनारस



कैसे करूं बखान बनारस का

काशी की विशेषता का बखान कर पाना अपने आप में एक कठिन कार्य है. काशी की प्रतिष्ठा और तिष्ठा इसीलिए है कि स्वयं शंकर यहां संगीत हैं. यहां शंकर का जन्म दिन नहीं मनाया जाता बल्कि विवाह दिवस मनाया जाता है. वह देव नहीं महादेव हैं. 'वन्दे नाद तनु' वह महान संगीतकार नहीं स्वयं में संगीत हैं. जब आपको शक्ति मिलती है और आप सक्रिय होते हैं तभी श्रीगणेश होता है और शिवत्व की ओर चल पड़ते हैं. इसी तरह काशी में फक्कड़ और अक्खड़ (अक्खड़ शब्द अखाड़े से बना है) जब आप दोनों बन जायेंगे तब आप धाकड़ बनेंगे.

यहां गमछा में भी मस्ती है

भोले बाबा का कास्ट्यूम नहीं है. वो तो अड़भंगी है. कपड़े लत्ते से उन्हें क्या लेना देना. वैसे ही बनारसी भी है. बनारसी गमछा लंगोट पहन कर मस्त रहता है. यहां देवत्व का खुला 'ऑफर' है. पाखण्ड का खण्ड–खण्ड करे, वह शिवता है. शिव को पूजा अर्चना नहीं चाहिए. वह तो औघड़ दानी है. यही बात यहां के लोगों में भी दिखायी देती है. भला है तो लाभ भी होगा उसका वादा करोगे तो हर चीज पर दावा करोगे और दया करोगे तो याद रखे जाओगे. अजब है बनारस इसीलिए गजब है बनारस.

अड़ी पर होती है 'तत्व' की चर्चा

बनारस के बारे में एक चीज बहुत फेमस है कि यहां के लोग अड़ीबाज होते हैं. अध्यापक, छात्रों, दुकानदारों की अड़ी लगती है. यहां सार तत्व और निरूसार तत्व को समझा जाता है. अब देखिए निवृत्त या निपटान शब्द का दार्शनिक मूल्य है. जैसे जुड़े तो जीवनभर के लिए और छोड़ो तो जैसे कभी जुड़े ही नहीं थे. यहां समग्र चेतना उदात्त भाव पर रहती है. जहां ऊंची से ऊंची डिग्री मिलने पर लोग अमानवीय हो जा रहे हैं वहीं काशी में सामान्य आदमी भी सफलता के शिखर पर बैठकर सामान्य रहता है. यहां सामान्य में ही विशिष्टतायें है. लस्सी पी के पुरवा फेंक देने पर दुकानदार मना कर देता है कि दुबारा हमरे दुकान पर मत आया, गोरस गोड़े पर पडी न! पानी लेके पीले होता, पुरवा में, इ कौन तरीका हव? यही कंकर–कंकर, शंकर का भाव है.

विद्वता 'लेबल' नहीं 'लेवल' है

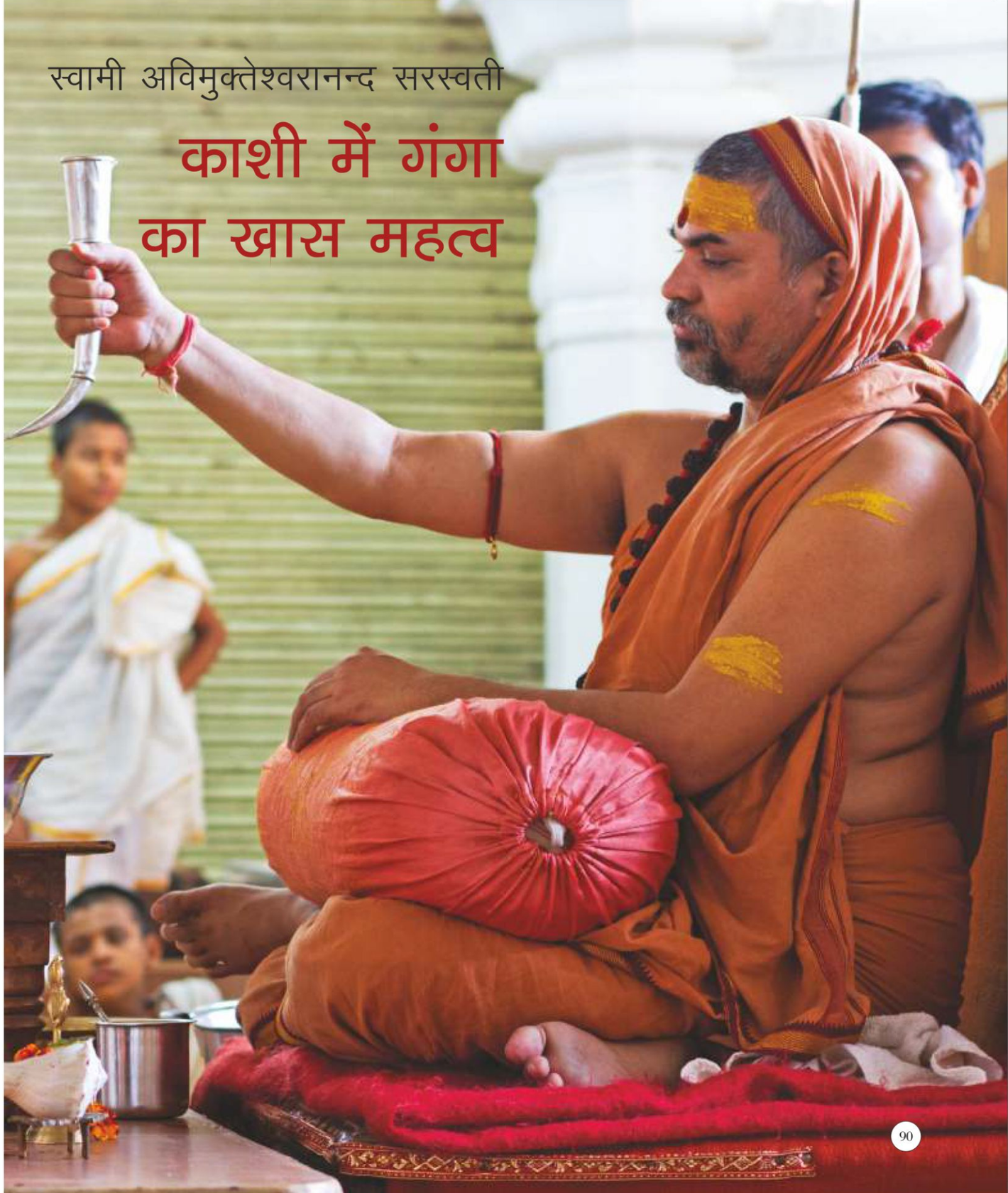
काशी में पढने सब आते हैं. काशी को पढ़कर देखिए. यहां विद्वत्ता 'लेबल' नहीं 'लेवल' है. वर्तमान में हर जगह बाजारवाद हावी है. संगीत भी अछूता नहीं है. विद्या जो चेतना का उत्कर्ष करती है वह पदार्थ से पूरी नहीं हो सकती. हमारा शिक्षक अकिंचन तो रहता था पर लेने वाली मुद्रा में नहीं देने वाली मुद्रा में. गांधी, मार्क्स सभी ने कहा है कि जब तक श्रम का बदला श्रम न होगा तब तक विकास का क्रम नहीं होगा. यह प्रक्रिया विनिमय से नहीं बल्कि तन्मय और समन्वय से चलेगी. जिस प्रकार पूरे संसार को 100 बार बेचने के बाद भी आप मां नहीं खरीद सकते इसी तरह संगीत भी है जो 'नॉट फार सेल' है. जब हम कीमत आरोपित करते हैं तो वस्तु तत्व में बदल जाता है. विद्या तो रिले–रेस है जो पुरानी पीढ़ी से अगली पीढ़ी में हस्तान्तरित होती है. आप इतिहास देख लें आचार्य और स्नातक ने देश की तस्वीर को बदला है. किसी भी राज्यतंत्र में स्नातकों के लिए प्रवेश वर्जित नहीं था. ऐसा आज प्रजातंत्र में भी नहीं है. भाव का संवाद हो सकता है अनुवाद नहीं.

समानानुभूति होनी चाहिए...

लोगों में सहानुभूति नहीं समानानुभूति होनी चाहिए. तब मानव–मानव एक होंगे. हर कला का यही हाल है. पढ़ाने का पैसा क्यों लिया जाता है? आपको तो खुद ही छात्र के रूप में कच्चा माल मिल रहा है. उसे प्रशिक्षित करो तनख्वाह तय करो, और अपनी लागत निकाल लो पर यहां तो सब खुद चाहते हैं कि देश का युवा इधर–उधर भटके.

स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती

काशी में गंगा का खास महत्व



काशी में गंगा का क्या महत्व है?

जैसे प्राण के बगैर शरीर और पानी के बगैर किसी नदी की कल्पना नहीं की जा सकती है वैसे ही गंगा में बिना काशी और काशी के बिना गंगा की कल्पना संभव नहीं है. शास्त्रों के मुताबिक काशी और गंगा दोनों देवियां हैं और इनके नाममात्र से ही मानव का उद्धार होता है. इसलिए काशी में गंगा के महत्व का वर्णन करना कठिन है.

ऐसा क्या है जो गंगा इतनी खास है काशी के लिए?

काशी में मुक्ति की बात कही गई है और मुक्ति देने के लिए भगवान शिव स्वंय यहां तारक मंत्र देने के लिए आते हैं क्योंकि जब शिव ये मंत्र देने के लिए आते हैं तो उनके माथे पर गंगा विद्यमान रहती है. जिससे यहां पर मरने वाले को मोक्ष मिलता है

लेकिन ये बड़ा दुखद है कि काशी में मोक्ष की एक बड़ी वजह गंगा को आज खुद मोक्ष की दरकार है. हालांकि गंगा में मोक्ष देने की शक्ति अब भी विद्यमान है लेकिन उसके भौतिक रुप में अंतर आया है.

इस वजह से बनारस की पहचान गंगा का स्वरुप यहां बदला हुआ सा नजर आने लगा है. घाट किनारे अतिक्रमण और हमारी ओर से की जा रही गलतियों का खामियाजा गंगा भुगत रही है और काशी में गंगा का वास्तविक स्वरुप बिगड़ रहा है.

गंगा के बगैर काशी की क्या कल्पना है?

गंगा के बगैर काशी की कल्पना ही नहीं है क्योंकि बाबा विश्वनाथ का यानि शिव का भी सच्चा स्वरुप यहीं पर बनता है और चूंकि भगवान शिव के सिर पर गंगा है और यहां गंगा कलकल बहती है इसलिए गंगा के अस्तित्व का बनाए रखते हुए बाबा विश्वनाथ के असल स्वरुप को बनाये रखना बड़ा चैलेंज है. काशी में गंगा का महत्व तो है ही लेकिन हमें गंगा किनारे के घाटों को नहीं भूलना चाहिए. ये काशी की शान हैं और बनारस की पहचान हैं.

और जगह से क्यों अलग है काशी में गंगा?

गंगा यहां इसलिए खास है क्योंकि यहां गंगा उत्तरवाहिनी है और यहां से ही गंगा के स्वरुप में बदलाव देखने को मिलता है. धर्म कर्म की इस नगरी में गंगा का स्वरुप भले पहले से थोड़ा कमजोर हुआ हो लेकिन आज भी काशी आने वाला हर शख्स काशी गंगा और बाबा विश्वनाथ के लिए ही आता है. इसलिए जरुरत है काशी की इस पहचान को बचाने की और सरकार को गंगा के लिए कुछ करने की.

KF3™
KASHI FRESH FAST FOOD

BREAKFAST
+ LUNCH
+ DINNER

Tiffin Service Available

घर का शुद्ध खाना सबसे अच्छा



MOMOS Also Available



CALL US:- 7985922588
8423250977

Web : www.kf3.in
E-mail : kf3vns@gmail.com

Kashi Sons & Co.

अजोला अमृत आहार

सबसे सस्ता, सबसे अच्छा
हरित पशु आहार व मुर्गी चारा









अजोला अमृत आहार

उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, हरियाणा

– सिटी ऑफिस –

D59/15C-4, शिवपुरवा, प्लॉट नं. 05, राजनशाही नगर कालोनी, राघुन स्वीट्स के सामने सिगरा महमूरगंज,वाराणसी।

Mob.: 7706950937, 8299537535, Ph.: 0542-2360571

– हेड ऑफिस –

अजोला अमृत आहार (C/O काशी सन्स एण्ड कम्पनी) इन्द्रानगर, वार्ड नं. 6, जिला – चन्दौली।

Mob.: 08423250977, 07706950243, Ph.: 0542-2360571



परिचय

अंजलि अग्रवाल

- समाज सेविका अध्यक्ष-अखिल भारतीय वैश्य महिला महासम्मेलन
- अध्यक्ष- काशी प्रबुद्ध महिला मंच
- सभापति- श्री अग्रसेन समाज
- अध्यक्ष- श्री अग्रसेन महिला प्रकोष्ठ
- प्रणेता- स्माईल मुनिया
- मंडलाध्यक्ष- मंडल 312 इनव्हील (2012-13)
- राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष-एसोसिएशन ऑफ इनरव्हील क्लब्स इन इण्डिया, 2013-14

उपलब्धियाँ–पुरस्कार–सम्मान

- नाज़-ए-बनारस - 2011
- संजीवनी सम्मान - 2012
- अग्रसेन रत्न - 2013
- सम्मान- महिला विकास तथा सांस्कृतिक मंत्रिणी उ0प्र0 द्वारा - 2012
- सिटी स्टार - दैनिक जागरण द्वारा
- नारी Today & I- Next
- मलाला सम्मान - 2014 - उ0प्र0 सरकार के साथ हिन्दुस्तान द्वारा
- इनरव्हील बोर्ड डायरेक्टर द्वारा - सैनफ्रांसिस्को, अमेरिका में सम्मान
- इनरव्हील मंडल का सर्वोच्च पुरस्कार - वुमेन ऑफ सब्स्टेन्स - 2015
- गणेशोत्सव में 2015 में चिन्तामणि गणेश सम्मान
- नारी शक्ति सम्मान - 2015
- काशी अग्रवाल समाज द्वारा 2015 सामाजिक कार्य हेतु सम्मान
- आर्य महिला हितकारिणी द्वारा प्रतिष्ठित 2016 एलुमिनाई अवार्ड
- पतंजलि महासभा तथा काशी प्रबुद्ध मंच, राष्ट्रीय सेवा योजना अन्नपूर्णा ट्रस्ट, खत्री हितकारिणी महिला सभा, आर्य महिला बी.डी. सोमानी व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा सम्मान
- स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में सर्वोच्च महिला सम्मान
- उत्तर प्रदेश पत्रकार संघ - सम्मान 2016
- कला संगम - सम्मान 2017
- महंत श्री काशी विश्वनाथ मंदिर - काशी गरिमा सम्मान 2017
- श्री काशी अग्रवाल समाज - 2017 सर्वोच्च सम्मान
- सुमित्रा देवी सद्भावना पुरस्कार 2017 - 18 साक्षर इण्डिया फाउण्डेशन द्वारा

अंजलि अग्रवाल का जन्म पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुआ। अलग–अलग शहरों में शिक्षा प्राप्त करीं तथा 1981 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सर सुन्दरलाल अस्पताल के चेस्ट एवं श्वास रोग विशेषज्ञ वरिष्ठ प्रोफेसर डाक्टर एस0के0 अग्रवाल की जीवनसंगिनी बनीं। समाज सेवा का जुनून बचपन से ही था। पर्यावरण तथा लड़कियों के लिये ज्यादा से ज्यादा काम करना चाहती थीं। हमेशा छोटे–छोटे कदम बढ़ाकर सेवा कार्य करती रहीं, जब इनरव्हील 312 की मंडलाध्यक्ष बनीं तब विचार आया कि इस पद पर रहकर लड़कियों को खासतौर से गरीब छात्राओं को लाभान्वित किया जाये। जिन छात्राओं को विद्यालय में परेशानी होती थी, दूरी जिसका प्रमुख कारण थी तथा कुछ बच्चियाँ स्कूल छोड़ चुकी थीं, उन्हें साईकिल बांटनी शुरू की। उनकी स्कूल फीस, ड्रेस, जूते, परीक्षा की फीस, कापी–किताब, स्कूल बैग आदि बांट उनकी मुस्कुराहट देख आत्मसंतोष मिला, इस प्रोजेक्ट का नाम 'स्माईल मुनिया' दिया जिसे भारतवर्ष में ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिये इसे चुना गया तथा अन्तर्राष्ट्रीय मैगजीन लंदन से प्रकाशित इण्टरनेशनल इनरव्हील मैगजीन 2012–13 में पृष्ठ 4 पर इसे प्रकाशित किया गया। यह एकमात्र भारत से प्रोजेक्ट था। लड़कियों के लिये स्वावलम्बन की दिशा में कदम बढ़ाते हुये मुफ्त कम्प्यूटर शिक्षा से लेकर विविध कला प्रशिक्षण शिविर चलाना तथा पर्यावरण की दिशा में कार्य करते हरित काशी–स्वच्छ काशी के नारे के साथ कार्य करती हैं। प्रतिवर्ष अनेक पार्क या खुली जगह
पर हजारों की संख्या में पौधरोपण करती हैं। काशी की स्वच्छता के लिये सदा प्रयत्नशील रहती हैं। अपने पति के साथ एसोसिएट डेलीगेट के रूप में अनेकों बार देश–विदेश की यात्रा कर चुकी हैं तथा अपने ज्ञान स्रोत में वृद्धि कर सामाजिक सरोकारों को नई दिशा प्रदान करी हैं। आपने अनेक शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक सेमिनार आयोजित कराये। आपकी सेवा–समर्पण तथा अनूठी कार्यशैली की सभी सराहना करते हैं। अंजलि के खास शौक अध्ययन, संगीत, कार ड्राइविंग तथा नये लोगों से मिल ज्ञान को बढ़ाना है। ईश्वर प्रदत्त उपहारों में दो पुत्रियाँ हैं तथा दोनों डाक्टर व विवाहित हैं। अंजलि का मानना है कि सच्चे मन तथा परिश्रम से किया कार्य अवश्य फल देता है। अपनी उपलब्धियों का श्रेय ईश्वर तथा माता–पिता और पति को देती हैं।

अंजलि अग्रवाल का बहुआयामी व्यक्तित्व, अपूर्व मेधा शक्ति एवं समाज सेवा के प्रति समर्पण, सुसंस्कार माता–पिता से मिले तथा पूर्ण सहयोग पति का मिला। उच्च स्तरीय संगोष्ठी, कार्यशाला, सेवा कार्य में सम्मिलित होना उनके व्यक्तित्व को गरिमामयी बनाता है।





है सर्व विद्या की

राजधानी



सेन्ट्रल लाइब्रेरी, बीएचयू


काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
MTCI



सिंहद्वार, बीएचयू



बीएचयू का भारत कला भवन



शिक्षा और काशी. ये दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं. आज नहीं आदिकाल से ही काशी शिक्षा का केंद्र रहा है. इसे आप एजुकेशन हब कह सकते हैं. एक जमाने से यहां दुनियाभर से लोग शिक्षा ग्रहण करने आते थे. ये सिलसिला आज भी बदस्तूर कायम है. किसी जमाने में संस्कृत अध्ययन अध्यापन का गढ़ था लेकिन आज यह शहर सर्व विद्या की राजधानी है. शिक्षा का केंद्र होने के कारण बनारस में साक्षरता का दर भी दूसरे शहरों की तुलना में आपको हमेशा ज्यादा दिखायी देगा. सबसे ज्यादा माध्यमिक विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की संख्या रखने वाला बनारस शिक्षा के नजरिए से कई मामलों में अनूठा है. यहां अगर पं. मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यानी बीएचयू है तो राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त द्वारा स्थापित महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ है. यहां सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय है तो सारनाथ में केंद्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान भी है जिसे केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा हासिल है. यहां के जामिया मिलिया को भी मदरसा बोर्ड ने यूनीवर्सिटी की कैटेगरी में रखा है. बीएचयू सेंट्रल गवर्नमेंट की यूनिवर्सिटी है तो महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ और सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय स्टेट गवर्नमेंट की यूनिवर्सिटीज हैं.

एजुकेशन हब के मामले में बनारस वो शहर है जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसी यूनिवर्सिटी को अपने यहां संजोये हुए है. महामना पं. मदन मोहन मालवीय द्वारा सन् 1916 में स्थापित इस विश्वविद्यालय को एशिया की सबसे बड़ी रेजीडेंसियल यूनिवर्सिटी होने का गौरव हासिल है. करीब तेरह सौ एकड़ में फैले इस विश्वविद्यालय परिसर में बीस हजार से भी ज्यादा स्टूडेंट्स पढ़ाई करते हैं. बनारस के दक्षिणी छोर पर बसे इस कैम्पस का यह एक पहलू है. इस यूनिवर्सिटी का दूसरा कैम्पस बरकछा, मिर्जापुर में है. बरकछा परिसर जमीनी विस्तार के लिहाज से अपने मूल परिसर से कई गुना बड़ा है. इस परिसर को राजीव गांधी साउथ कैम्पस भी कहा जाता है. इस विश्वविद्यालय के विस्तृत स्वरूप का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि इसके बनारस परिसर में चार इंस्टीच्यूट्स, 14 फैकल्टीज और इनके अलावा करीब 140 विभाग काम करते हैं.

दुनिया भर में बीएचयू की बेशुमार धाक है. यही वजह है कि विश्व के 34 मुल्कों के स्टूडेंट्स यहां पढ़ते हैं. विश्वविद्यालय के पास अपना आईआईटी है. इसके अलावा चिकित्सा विज्ञान संस्थान, कृषि विज्ञान संस्थान और इंस्टीच्यूट ऑफ एनवायरमेंट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट भी यहां काम कर रहे हैं. बीएचयू के इंस्टीच्यूट ऑफ एनवायरमेंट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट को देश के सबसे शीर्ष क्रम के संस्थान होने का गौरव हासिल है. बीएचयू में दो हजार से भी ज्यादा फैकल्टीज अध्यापन का कार्य करते हैं. करीब दो हजार से भी ज्यादा शिक्षणेतर कर्मचारी यूनीवर्सिटी की सेवा में हैं. छात्रों को दी जाने वाली तमाम तरह की मॉडर्न एजुकेशनल और नॉन एजुकेशनल फैसिलिटीज के अलावा यहां पूर्वांचल का एम्स कहा जाने वाला एक विशाल अस्पताल है. बीएचयू का अपना ट्रॉमा सेंटर भी है. वैसे तो बीएचयू में हर डिपार्टमेंट और फैकेल्टी की लाइब्रेरी है लेकिन सयाजी राव गायकवाड़ ग्रंथालय के नाम से जानी जाने वाली इसकी सेंट्रल लाइब्रेरी का कोई जवाब नहीं है. यहां एक से एक प्राचीन दुर्लभ पांडुलिपियां हैं जिनके डिजिटलाइजेशन का काम किया जा रहा है. यहां मैक्सिमम चीजें ऑन लाइन हैं. बीएचयू की अपनी साइबर लाइब्रेरी है जो 24 घंटे खुली रहती है. इसमें कैम्पस या कैम्पस के बाहर रहने वाले स्टूडेंट्स अध्ययन का लाभ ले रहे हैं. इस साइबर लाइब्रेरी में पढने वालों के लिए चौबीस घंटे कैंटीन तो खुली रहती ही है इसके अलावा स्टूडेंट्स को लंका स्थित विश्वविद्यालय के सिंहद्वार तक पहुंचाने के लिए फ्री में बस की सुविधा भी अवेलेबल है.

बीएचयू में स्टूडेंट्स के लिए 60 हॉस्टल्स हैं तो शिक्षकों और कर्मचारियों के रहने के लिए भी आवास हैं. दूसरे देशों से यहां पढने के लिए आने वालों के लिए इंटरनेशनल हॉस्टल भी है. विश्वविद्यालय में वैसे तो को–एजुकेशन है लेकिन लड़कियों के लिए अलग से वूमेंस कॉलेज भी है. यहां आर्ट्स और साइंस स्ट्रीम की पढ़ाई होती है. शायद यह अपने आप में अकेला विश्वविद्यालय है जहां नर्सरी से 12 वीं तक की पढ़ाई का भी इंतजाम है. कमच्छा और गुरुबाग स्थित सेंट्रल हिन्दू बॉयज स्कूल और सेंट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल आर्ट्स, कॉमर्स और साइंस स्ट्रीम में बच्चों को एजुकेट करने का काम कर रहे हैं. बीएचयू में खेलकूद की भी ढेर सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं. इस विश्वविद्यालय ने कई राष्ट्रीय और अंतर राष्ट्रीय खिलाड़ी देश को दिये हैं. इतना ही नहीं स्प्रीचुअल लेवल पर भी यहां बहुत काम हो रहा है. मालवीय भवन में हर रविवार को होने वाले गीता प्रवचन में तमाम धर्मों के लोग शामिल होते हैं. यहां प्रसिद्ध पुरातत्वविद रायकृष्ण दास जी द्वारा स्थापित भारत कला भवन देश के अनूठे म्युजियम्स में से एक है. बीएचयू की एक और खासियत यहां की ग्रीनरी है. बनारस में सबसे ज्यादा हरियाली अगर कहीं है तो वह बीएचयू है. बनारस में बीएचयू से एफिलिएटेड चार कॉलेजेस भी हैं. इनमें पढने और पढ़ाने वालों की संख्या अलग है. इनमें से भी तीन आर्य महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वसंत कन्या महाविद्यालय और बसंत कॉलेज फॉर वूमेन में सिर्फ गर्ल्स स्टूडेंट्स ही पढ़ती हैं. जबकि डीएवी कॉलेज में को एजुकेशन की व्यवस्था है और यह कॉलेज स्नातकोत्तर तक के क्लासेज चलाता है.

काशी विद्यापीठ की स्थापना राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रेरणा पाकर की थी. यह विश्वविद्यालय स्वतंत्रता आंदोलन का गढ़ हुआ करता था. असहयोग आंदोलन के दौर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दस फरवरी 1921 को बसंत पंचमी के दिन शिक्षा के इस केंद्र का उद्घाटन किया था. गांधी जी चाहते थे कि यह विश्वविद्यालय शिक्षा के अलावा



आईआईटी, बीएचयू

संस्कृति और राजनीति का भी ध्वज वाहक बने. इस यूनिवर्सिटी को लेकर बापू ने ढेर सारे सपने संजोये थे. इसलिए उन्होंने इस विश्वविद्यालय की मैनेजिंग कमेटी में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े लोगों को ही रखा. भारत रत्न डॉ. भगवान दास को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ का पहला वाइस चांसलर बनाया गया. लाला लाजपत राय, जमना लाल बजाज, पं. जवाहर लाल नेहरू, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, आचार्य नरेंद्र देव, पं. कृष्णकांत मालवीय और पीडी टंडन जैसे दिग्गज राष्ट्रभक्त विद्यापीठ के पहले मैनेजिंग बोर्ड के मेम्बर्स थे. महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ की स्थापना का मकसद सर्वधर्म समभाव भी था. इसी वजह से पं. मोतीलाल नेहरू, मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना अबुल कलाम आजाद की मौजूदगी में वेद मंत्रोच्चार और कुरान शरीफ की आयतों के पाठ के बीच इसकी आधारशिला रखी गयी थी. काशी विद्यापीठ को हमेशा से उच्च शिक्षा आदर्शों का पालक विश्वविद्यालय माना जाता रहा है. इस कैम्पस से एक से बढ़ कर एक दिग्गज राष्ट्रभक्तों ने ग्रेजुएशन किया है. ऐसी हस्तियों की फेहरिस्त में अगर लालबहादुर शास्त्री, पं. कमलापति त्रिपाठी, प्रो. राजाराम शास्त्री, बीवी केसकर, मनमंथ नाथ गुप्त, प्रनवेश चटर्जी, टीएन सिंह, भोला पासवान शास्त्री और रामकृष्ण हेगड़े के नाम शामिल हों तो आप काशी विद्यापीठ को राष्ट्र गौरव के रूप में देखेंगे. किसी समय स्नातक की डिग्री शास्त्री के रूप में देने वाले इस विद्या केंद्र में तब पढ़ाये जाने विषयों की संख्या सीमित हुआ करती थी लेकिन वक्त के साथ आज इसका



काशी विद्यापीठ



तिब्बती संस्थान, सारनाथ

स्वरूप भी बदला हुआ है. आज यहां मेन कैम्पस में करीब दस हजार स्टूडेंट्स पढ़ते हैं. इन्हें पढ़ाने वाले फैकल्टीज की संख्या भी करीब दो सौ से ज्यादा है. विद्यापीठ कैम्पस में काम करने वाले शिक्षणेतर कर्मचारियों की संख्या भी चार सौ के पार है. महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से एफिलिएटेड कॉलेजेस की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है. बनारस ही नहीं आसपास के दूसरे जिलों के भी 266 कॉलेजेस आज काशी विद्यापीठ से जुड़े हुए हैं. वहां पढने और पढ़ाने वालों की संख्या अलग से है.

संस्कृत की तरह डॉ सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय का इतिहास भी काफी पुराना है. पुराने वक्त में यह संस्कृत कॉलेज हुआ करता था. काशी में संस्कृत अध्ययन का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है. इससे प्रभावित अंग्रेज भी हुए. ईस्ट इंडिया कम्पनी के तत्कालीन रेसिडेंट डंकन जोनाथन ने तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्नीवाल को एक पत्र लिख कर बनारस में संस्कृत विश्वविद्यालय या कॉलेज की स्थापना का प्रस्ताव भेजा. कार्नीवाल ने इस प्रस्ताव को तत्काल एकसेप्ट किया और सन् 1791 में बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना हो गयी. पं. काशीनाथ इस कॉलेज के पहले अध्यापक और आचार्य बनाये गये. इसके तहत यहां वेद, वेदांत, पुराण, उपनिषद, आयुर्वेद, साहित्य, ज्योतिष, मीमांसा और न्याय शास्त्र के अध्ययन का इंतजाम किया गया. कॉलेज की स्थापना में काशीराज परिवार ने भी काफी वित्तीय मदद की. सन् 1844



में इस कॉलेज को पहले प्रिंसिपल एक अंग्रेज आईसीएस अफसर के रूप में जे. मूइर मिले. उन्होंने कॉलेज के विकास की दिशा में काफी काम किया. मूइर ने तमाम संस्कृत टेक्स्ट का अंग्रेजी में ट्रांसलेशन भी कराया. इसका मकसद देवभाषा में लिखे ग्रंथों को विश्व स्तर पर प्रचारित कराना था. इनके बाद आये अन्य अंग्रेज प्रिंसिपल्स ने भी संस्कृत कॉलेज के विकास में अहम भूमिका अदा की. 1918 से 1923 तक यहां डॉ गंगानाथ झा प्रिंसिपल रहे. इस दौरान यहां सरस्वती भवन ग्रंथमाला का प्रकाशन शुरु हुआ तो सरस्वती भवन अध्ययन की शुरुआत भी हुई. लेकिन यहां असल काम तब हुआ जब महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज संस्कृत कॉलेज के प्रधानाचार्य बने. आप कह सकते हैं कि सन् 1923 से 1937 तक का समय जब तक यहां कविराज जी प्रिंसिपल पद पर विराजमान थे इस कॉलेज ने खूब तरक्की की. कविराज जी ने इस दौरान न केवल प्राचीन पांडुलिपियों का अनुवाद कराया बल्कि उनकी कैटलॉगिंग भी करायी. इसी दौरान कॉलेज को विश्वविद्यालय बनाने के लिए गंभीर प्रयास किया गया लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली. 1956 में वाराणसेय संस्कृत यूनिवर्सिटी एक्ट पास हो गया. इस दौरान कॉलेज के प्रिंसिपल रहे पं. कुबेरनाथ मिश्र संस्कृत विश्वविद्यालय के पहले रजिस्ट्रार बने. विश्वविद्यालय बनते ही इस विद्या केंद्र का स्वरूप ही बदल गया. देशभर के सैकड़ों कॉलेज इससे जुड़ गये. आज भारत ही नहीं पड़ोस के नेपाल के कई संस्कृत कॉलेज भी इस विश्वविद्यालय से जुड़ कर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं.

बनारस में सारनाथ में स्थापित सेंट्रल यूनिवर्सिटी फॉर तिब्बतन स्टडीज का मूल नाम सेंट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर तिब्बतन स्टडीज था. 1967 में स्थापित यह संस्थान केंद्रीय सांस्कृतिक मंत्रालय के अधीन चलने वाला स्वायत्तशासी उच्च शिक्षा संस्थान है. पहले यह संस्थान सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के अंतर्गत काम करता था लेकिन 1970 में केंद्र सरकार ने इसके स्वरूप की समीक्षा की और इसे विश्वविद्यालय का दर्जा दिया. 1988 में इसे डीम्ड विश्वविद्यालय घोषित किया. 2009 में इसे केंद्रीय विश्वविद्यालय घोषित किया गया. आधिकारिक तौर पर बनारस के इस चौथे विश्वविद्यालय का उद्घाटन 14 जनवरी 2009 को धर्मगुरु परम पावन दलाई लामा ने किया था. यहां बौद्ध धर्म के अलावा संस्कृत, पालि और प्राकृत पर महत्वपूर्ण शोधकार्य हो रहे हैं. जिन्हें देख शायद आप कह उठें जियो बनारस.



संस्कृत विश्वविद्यालय


JOHN E.S. COATS



बसंत कन्या महाविद्यालय का एनी बीसेंट हॉल



भाषाई अदब यहां करता है

आदाब



नागरी प्रचारणी सभा लाइब्रेरी



हिन्दी साहित्य और उर्दू अदब में बनारस का पूरा हिन्दुस्तान लोहा मानता है. गद्य, पद्य, कथा साहित्य, नाटक और शायरी की दुनिया में इस शहर की जो जगह है वो बोधि वृक्ष से सी लगती है. बोधि वृक्ष मतलब वो विशाल वृक्ष जिसके सानिध्य से ज्ञान चक्षु खुलते हैं. जो किसी शख्स को उसकी रूह से रू–ब–रू कराता हो. जहां के साहित्य के अध्ययन से समय काल और परिस्थिति का बोध होता हो. जहां के रचना संसार को लिटररी वर्ल्ड झुक कर सलाम करता हो वो शहर बनारस है. अपने गंगा जमुनी तहजीब के मुताबिक यहां रची गयी कहानी और कविता, नसर (गद्य) और नज्म (पद्य) में आप लिपि देख कर हिन्दी और उर्दू का फर्क तो कर लेंगे लेकिन उसके प्लॉट को पढने के बाद आपको यह बाइफरकेट करना मुश्किल हो जाएगा कि क्रिएशन किस बिरादरी को बिलॉन्ग करता है. क्योंकि इसके प्लॉट का ताना बाना किसी वर्ग विशेष के इर्द गिर्द नहीं घूमता. खालिस इंसानियत के मसले पर लिखा गया यहां का साहित्य सामाजिकता से सरोकार रखता है. ये सारी बातें आज के संदर्भ में ही लागू नहीं होतीं, एक जमाने से बनारस ऐसे ही साहित्य को गढने और उन्हें तराशने का काम कर रहा है.

तुलसी, कबीर और रैदास की लिखी चौपाई, दोहे और पद करोड़ों लोगों की आस्था का केन्द्र हैं. इनमें न सिर्फ अद्भुत जीवन दर्शन है बल्कि जिंदगी की तल्ख हकीकतों से साक्षात्कार भी कराया गया है. काशी, बनारस या वाराणसी प्राग ऐतिहासिक काल से धार्मिक आस्था का केंद्र रहा है. यह शहर प्रेम और सद्भाव का प्रतीक भी है. लिहाजा यहां खालिस इश्क से जुड़ा ढेर सारा साहित्य रचा गया. ऐसे प्रोज



आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का पैतृक आवास



जयशंकर प्रसाद की पैतृक दुकान

और पोएट्री लिखी गयी जिन्हें अफेक्शन का प्रतीक माना गया. यहां के कथाकारों की लिखी कहानियों और उपन्यासों में ऐसा रोमांस दिखा जो उद्दात प्रेम का पर्याय बन गया. इश्किया शायरी, गीत और गजलों में इतना दम दिखा जिसमें ईश्वर को मुखातिब कर लेने का माद्दा था. नाटकों में समाज के दंश का ऐसा चित्रण रहा जिसे देख सब कुछ आसपास घटित होता सा लगा. यहां लिखे गये निबंधों का लालित्य एसे राइटिंग की एक नयी विधा को जन्म दे गया. बाबू देवकीनंदन खत्री ने चंद्रकांता संतति के रूप में ऐसा कुछ लिखा कि रहस्यवाद की दुनिया में आज भी उसे अप्रतिम माना जाता है.

दरअसल काशी है ही ऐसी विरल कि तमाम महापुरूष इसके आकर्षण में खींचते चले आये. ढाई हजार से भी ज्यादा साल पहले जब गया में ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध को अपना पहला उपदेश देने के लिए अगर कोई जगह सूझी तो वह काशी का सारनाथ था. सच कहें तो वह ज्ञान बांटने या उपदेश देने नहीं बल्कि लोक की मुक्ति का विधान खोजने बनारस आये थे. उन्हें यह बात समझ में आ गयी थी कि धर्म–दर्शन और आध्यात्म ही नहीं हर लिहाज से गुरु इस शहर में ही वो बात है जो बोधित्सव को रोशनी देने का काम करेगा. बनारस में रचे गये साहित्य को काल खंड के हिसाब से नाम तो दिया गया लेकिन सचाई यह है कि वो उस काल के आंदोलन का पर्याय था. लोक काल की सबलता उस घड़ी का स्वर बन गया. पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदी का रचना संसार तुलसी, कबीर और रैदास के जरिए यकीनन प्रगट हुआ लेकिन यह उस काल की आवाज तो थी ही, इसके अलावा वो आने वाले वक्त के बारे में बजायी गयी दुंदुभी भी थी. यह आवाज आज भी प्रासंगिक नजर आती है. तुलसी ने अगर राम कथा के जरिए जिंदगी की मर्यादा बतायी तो कबीर ने नयी संस्कृति के खतरों से जागरूक करने का काम किया. बेसिकली दोनों ही संत थे लेकिन घर, परिवार और संसार के बारे में इन दोनों ने जो



कुछ लिखा वह अप्रतिम है. वक्त की नब्ज पर दोनों की ही गजब की पकड़ थी. कबीर ने तो लुकाठी के माध्यम से संसाधन और सम्पन्नता से टकराने की सीख दी. इस फकीर कवि की रचनाओं को पढने के बाद यह समझ में आता है कि उस काल में भी समाज पर बाजारवाद हावी था. इन्सान के सामने सबसे बड़ी चुनौती 'बाजार' ही था. आज के संदर्भ में भी अगर देखा जाए तो समूची दुनिया में आर्थिक और समाजिक आत्मनिर्भरता के अलावा संस्कृति पर भी मार्केट ही हावी है. तुलसी के दर्शन में भी भक्ति के साथ सामाजिक जवाबदेही के प्रश्न बराबर के साझेदार थे. जीवन में कड़वे अनुभवों के बावजूद तुलसी ने इंसान के सपनों की जयगाथा लिखी. यकीनन उनकी रचनाओं में विनय का भाव था लेकिन उस काल के अभिजात्य शास्त्रीय ठेकेदारों के आक्षेप और तिरस्कारों को लेकर इस महाकवि के अंदर जबर्दस्त रोष भी था.

यह सब पूर्व मध्यकाल का दौर था. लेकिन उत्तर मध्यकाल में बनारस में जो कुछ साहित्य गढ़ा गया वह उस काल के रचनाकारों का जीवन संघर्ष तो था ही इसके अलावा वह सब कर्मकांड के विरोध का अध्याय भी था. इस दौर को रीतिवाद कहा गया. इस काल के रचनाकारों में पंडितराज जगन्नाथ के लिखे साहित्य को देखने से यह समझ में आता है कि यह दौर यथास्थितिवाद को मजबूती देने वाला था. लेकिन इस दौर में कुछ महान रचनाकार ऐसे भी हुए जिन्होंने नवजागरण की पहल की. इन साहित्यकारों ने अपने लेखन से यथास्थितिवाद का विरोध किया और अपनी भाषा को लेकर आंदोलन खड़ा कर दिया. आप कह सकते हैं कि भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र उस काल में हिन्दी आंदोलन को मजबूती देने वाले सबसे अहम कड़ी थे. उनके लिए बनारस के धार्मिक और आध्यात्मिक होने के मायने थे. उस दौर की खासियत ये भी थी कि इस काल के रचनाकारों में अभिन्न मैत्री थी. बालकृष्ण भट्ट, प्रेमधन, राधाचरण गोस्वामी और पं. प्रताप नारायण मिश्र के बीच लेखन में कॉम्पटीशन का नहीं दोस्ती का भाव था. साहित्य उनके लिए यश साधन या आत्म प्रकाशन भर नहीं था बल्कि उसे वे जमाने को बदल देने वाले हथियार



आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रतिमा

की तरह इस्तेमाल करते थे. उस जमाने की पत्रिकाएं कवि वचन सुधा, बाल बोधिनी, हरिश्चन्द्र चंद्रिका और काशी पत्रिका साहित्य और समाज के मसले पर जबर्दस्त तरीके से एक्टिव थीं. इस जमाने के रचनाकारों में रूढ़िवाद का विरोध इतना ज्यादा था कि पं. बालकृष्ण भट्ट ने 'मुद्राराक्षस' नाटक में एक कैरेक्टर का रोल प्ले करते हुए अपने पिता का पिंडदान कर दिया था. आप अंदाज कर सकते हैं कि उन्हें इसके लिए कितनी निंदा झेलनी पड़ी होगी. कितने तिरस्कार सहने पड़े होंगे. समाज की पुनर्रचना के लिए यह रूढ़िभंजन का दुस्साहस था.

इन रचनाकारों में आजादी की आकांक्षा तो थी ही इसके अलावा वे निज भाषा उन्नति अहै की अलख भी जगा रहे थे.

एक बात कहनी पड़ेगी कि उस जमाने की सामाजिक संस्थाएं, पत्र पत्रिकाएं, रंगमंच और लोकविधाएं साम्राज्य विरोध के स्वर को घर घर पहुंचाने का काम कर रहे थे. उस काल के साहित्यकारों के साथ एक बात अच्छी थी कि वे अपनी थाथी को मजबूत करने के अलावा अगली पीढ़ी को इसकी विरासत बांटते भी चल रहे थे. कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद, महाकवि जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी, शिवप्रसाद मिश्र, रूद्र काशिकेय और पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी में यह विरासत सिर चढ़ कर फलीभूत हुई. इस दौरान मुंशी प्रेमचंद का लिखा कथा संसार सामंतवादी शोषण के विरोध का प्रतीक है तो किसानों के हित का सेंटर भी है. जाहिर है इन सबकी कीमत उन्हें चुकानी थी और उन्होंने यह सब चुकायी भी. मुंशी जी ने 'हंस' के लिए अपनी जिंदगी खपा दी. अभाव, बीमारी और अंग्रेज सरकार का विरोध जैसी चीजें उन्हें झेलनी पड़ी. दूसरी तरफ जयशंकर प्रसाद जी के यहां हिन्दी और भारतीयता भिन्न सांस्कृतिक सार के रूप में निर्मित हो रही थी. हंस के अलावा इंदु और गल्पमाला जैसी पत्रिकाएं मॉडर्न इंडिया के जनजागरण के शक्ति स्रोतों को अपने आदर्शों के अनुरुप खोज रही थीं.

इस दौरान बनारस में साहित्यिक हलचलें काफी



तेज थीं. कविवर मैथिलीशरण गुप्त, जैनेन्द्र, निराला और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे रचनाधर्मियों का लगातार आना जाना रहता था. इसके अतिरिक्त उस समय यहां शिवपूजन सहाय, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, शांतिप्रिय द्विवेदी और विनोद शंकर व्यास जैसे स्वनामधन्य साहित्यकारों की तूती बोला करती थी. यह कबीर, तुलसी, भारतेंदु और प्रेमचंद की विरासत ही थी कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की वस्तुवादी आलोचना को एक गहरी दृष्टि और समझ मिली. एक अलग तरह के ठसक में रहने के बावजूद बनारस की यह खासियत रही है कि वो दूसरों की अच्छी चीजों को आत्मसात करने में कभी पीछे नहीं हटता. अगर वो किसी से प्रेरणा हासिल करता है तो उसे स्वीकारने से गुरेज भी नहीं करता. इस दौर में बनारस और इलाहाबाद के साहित्यकार एक दूसरे के लेखन से इंस्पायर होते रहे. यह बात पंत और निराला ने भी एकसेप्ट की है. इन दोनों ही शहरों के रचनाकार एक दूसरे के क्रिएशन की तारीफ खुले दिल से करते हैं.

बनारस के साहित्य सृजन करने वालों के साथ एक और बात थी. वो अपना शहर छोडने के कालखंड में भी तबीयत से बनारसी ही बने रहे. नजीर के तौर पर आप पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी को ले सकते हैं. सुदूर शांतिनिकेतन में गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर का सानिध्य मिलने के बाद भी उन पर कबीर की फिलॉसफी इस कदर तारी रही कि उनके लेखन में कबीर का अक्स दिखायी देता है. प्रतिरोध की संस्कृति उनके अंदर इतनी जबर्दस्त थी कि वो सशक्त होकर नाथ सिद्ध साधना की लोक संपृक्त चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में सामने आया. छायावाद के दौर में भी बनारस में यथार्थवादी मुद्दों पर बहसें हुईं. यह अलग बात है कि प्रसाद जी के लेखन की प्रियॉरिटी अलग तरह की थी लेकिन उनके लेखन पर यथार्थवाद का असर दिखता है इससे कोई इनकार नहीं कर सकता. जीवन की सूक्ष्मसारता को भावसत्ता के रूप में बदल कर व्यक्त करना उनकी स्पेशलिटी थी. वे अर्थ की सघन सारमयी संरचना के रचनाकार थे और स्थूलताओं को प्रत्येक स्तर पर तिरोहित करने के पक्ष में थे. शायद यही वजह थी कि यथार्थवाद उनसे सहमत नहीं हो सका. इन सबके बावजूद प्रसाद जी का लेखन अपनी खास सोच के साथ डटा रहा. दरअसल डटे रहना ही बनारस का वह शिल्प है जो किसी शख्स को जमीनी आत्मविश्वास देता है.

बनारस में नयी कहानी का दौर भी आया. लेकिन वह इस शहर के रचनात्मक पाठ में कुछ अलग तरह से घटित हुआ. उन दिनों द्विजेंद्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' सोसाइटी के मिडिल क्लास लोगों की उम्मीदों पर लगातार सृजन कर रहे थे तो डॉ. शिवप्रसाद सिंह अस्तित्ववाद से प्रभावित होने के बावजूद क्लास राइटिंग में लगे हुए थे. रामदरश मिश्र, केदारनाथ सिंह और नामवर सिंह उस वक्त नये होने के बावजूद अच्छा साहित्य सृजन कर रहे थे. इस काल खंड का रचना संसार इस बात की तस्दीक करता है कि पं. हजारी प्रसाद जी ने आधुनिकता और परम्परा के द्वन्द्वात्मक संबंध की समझ के साथ अपने विद्यार्थियों के इतिहासबोध को आकार दिया. पंडित



लमही में मुंशी प्रेमचंद का पैतृक आवास



मुंशी प्रेमचंद की प्रतिमा


WAY
TO
USHA
COMPUTE



चौखम्बा स्थित पैतृक आवास पर रखा भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का तामजान, जिस पर सवार होकर वो सब्जी की खरीदारी करने जाते थे.

जी के शिष्यों ने भी उनका मान रखा और अपनी विधा के अलावा ढेर सारी ऐसी चीजें लिखीं जिन्हें बेहतरीन लेखन का नजीर माना गया. यकीनन रूढ़िवाद के विरोध का जो तेवर कबीर में था वैसा किसी और में नहीं दिखा लेकिन उसकी झलक अगर किसी में दिखती है तो वह सिर्फ धूमिल में ही थी. धूमिल ने बौद्धिक छल से तय होती संवेदना और भाषा के मायाजाल को अपनी कलम से ध्वस्त कर दिया. जाहिर है ऐसे रचनाकारों की नियति संघर्ष ही होती है. धूमिल भी संघर्ष की ताप में तपे. इससे उनकी रचनात्मकता इतनी प्रखर हुई कि धूमिल बनारस की रचना परम्परा में एक बड़ा नाम बन गया.

मौजूदा समय में देश काल का असर बनारस के रचना संसार पर पड़ा है. बदलाव के इस दौर में अब यहां भी पूंजीवादी संस्कृति की लहर बह रही है. बनारसीपन कल्चरल प्रॉडक्ट के रूप में बेचा जा रहा है. कॉरपोरेट हाउसेज, स्टार होटल्स, मॉल कल्चर, फैशन ट्रेंड्स और टूरिजम ने बनारस के घाटों, मंदिरों, तीज–त्योहार और उत्सवों को इनकैश करना शुरु कर दिया है. एक अपसंस्कृति हावी होती चली जा रही है. काशीनाथ सिंह और ज्ञानेंद्रपति जैसे यहां के मौजूदा स्तम्भ रचना शिल्पियों के सामने अपसंस्कृति की साजिश से बच पाना एक बड़ा चैलेंज है. कहना होगा कि बनारस का वर्तमान युवा लेखक भी अच्छे सृजन में लगा हुआ है. यह सच है कि अपसंस्कृति के साये से बचना उनके लिए ज्यादा चुनौती है लेकिन इसके बावजूद वह जो कुछ भी रच रहे हैं वह अपने आप में एक धरोहर है. कथा, कविता और नज्म का जिंदा रहना इस बात का गवाह है कि बनारस में लेखन का वजूद कायम है. यहां शायरी से गायब होती विधा सोनेट को हाल तक लिखा गया. यह सब इस बात का प्रमाण है कि आने वाला वक्त भी बनारस के साहित्य के लिहाज से काफी उज्जवल है.

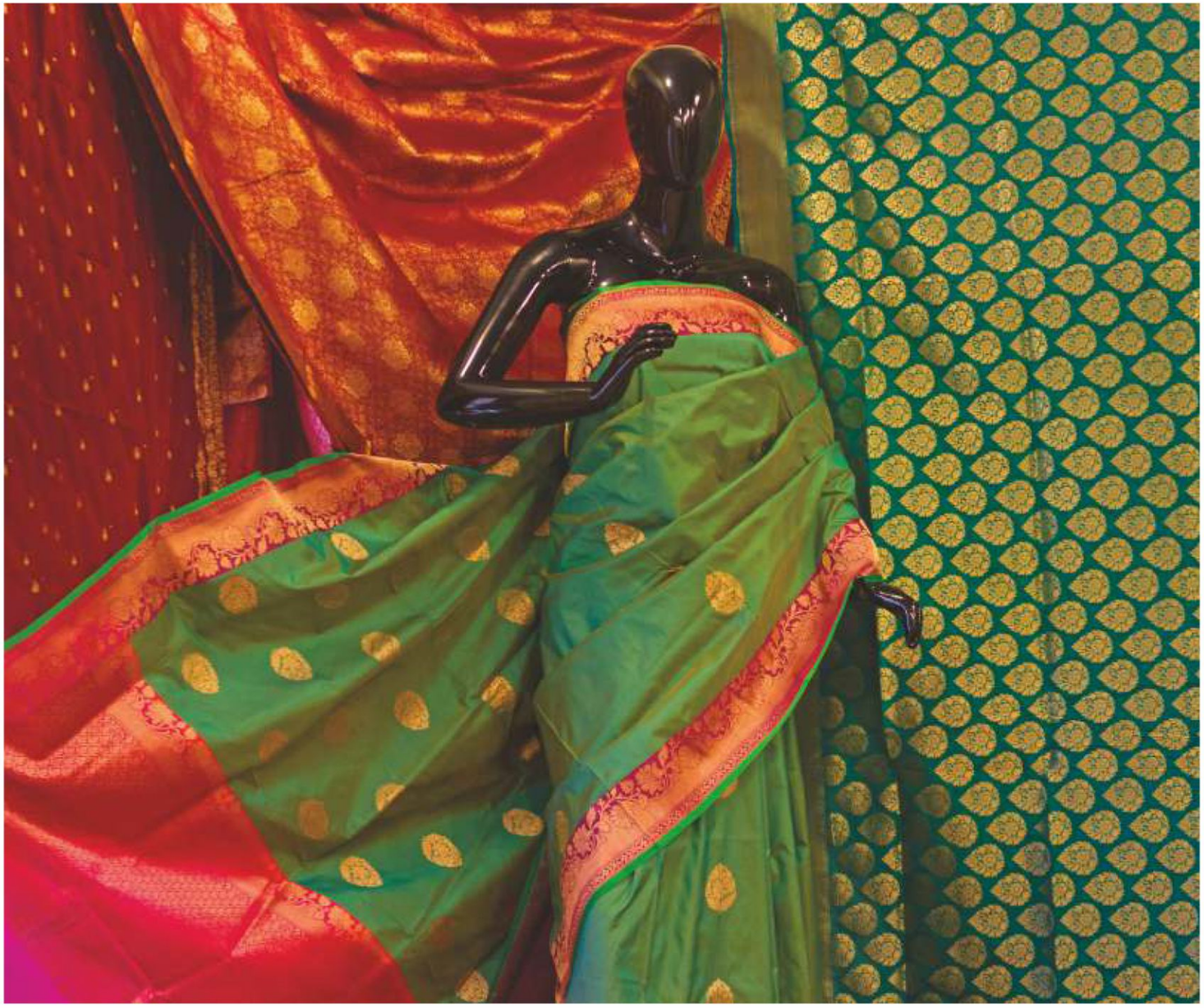
बनारस के कलम को सलाम.



चौबीस कैरेट सा खरा

हुनर





अगर कोई बनारस का पर्याय पूछे तो आपका जवाब बनारसी साड़ी ही आएगा. ये साड़ी किसी मजहब, पंथ या जात का प्रतीक या प्रतिबिम्ब नहीं है. यह रस्म और रिवाज की पोषक है. भारतीय संस्कारों की प्रतिनिधि है. भारतीय संस्कृति का प्रतीक है. सबसे खास यह कि यह एक औरत का सुहाग है. भारत में जाति कोई सी भी हो, मजहब कोई सा भी हो, सोशल स्ट्रेटा कैसा भी हो, बेटी



सिल्क पर जरी की अद्भभुत कारीगरी



विश्वनाथ गली में बनारसी साड़ी की खरीदारी

की शादी में बनारसी साड़ी का दिया जाना शगुन माना जाता है. शुभ के इस प्रतीक के कारण दुनिया का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां बनारस को न जाना जाता हो. बनारसी साड़ी का भी अपना एक इतिहास है. दरअसल बनारसी साड़ी कोई सामान्य साड़ी नहीं है. उसके साथ कारीगरी जुड़ी है हुनर की पोशीदगी. सिल्क और जरी का एक ऐसा फ्यूजन है जिसका रेशमी अहसास सात समंदर पार के लोगों को भी अपने जादू के वशीभूत किये हुए है. वैसे तो बनारस में कॉटन, सिल्क और ऊलेन के फैब्रिक का प्रॉडक्शन पुराने जमाने से होता आ रहा है लेकिन इसमें बनारसी साड़ी की बात बिल्कुल अलहदा है.

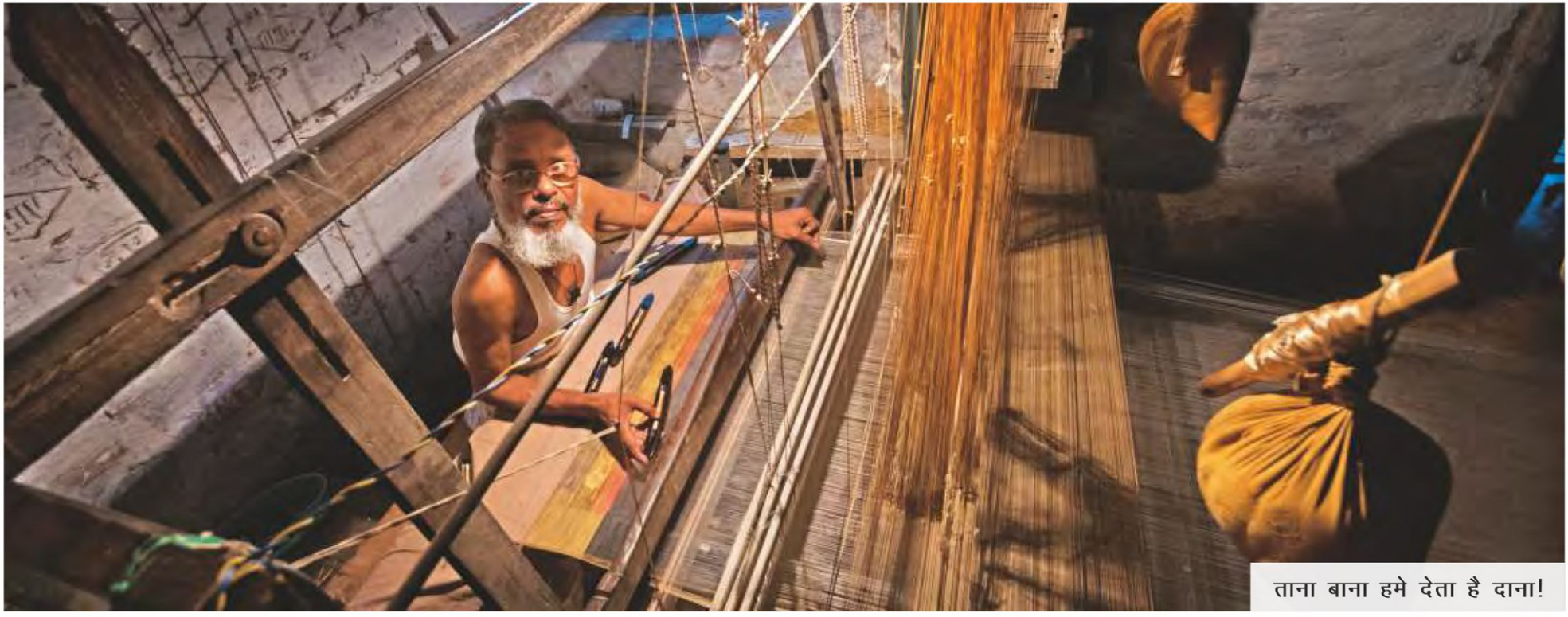
जनरली लोग साड़ी का मतलब कॉमन साड़ी से लगाते हैं लेकिन बनारस में साड़ी के मायने कतान की साड़ी है, जंगला साड़ी है, तनछुई साड़ी है और है पोंच की साड़ी. आमतौर पर बनारसी साड़ी के कारीगर खानदानी होते हैं. घर में करघे पर बिनी जाने वाली बनारसी में परिवार के हर सदस्य का कुछ न कुछ अंशदान होता है. जुलाहों के घर के छोटे–छोटे बच्चे ताना बाना लगाने से लेकर साड़ी जिसे लोकल बोली में वो रेजा के नाम से पुकारते हैं पर जरी टांकने का काम करते हैं. किमखाब की साडियों में भी बुनकर परिवार के हर मेम्बर का हाथ लगता है. वैसे आमतौर पर यह लोगों की सोच है कि जो बुनकर होगा वो मुस्लिम होगा लेकिन बनारस इस अवधारणा को गलत साबित करता है. यहां हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इस प्रोफेशन को शिद्दत से अपनाए हुए हैं. संत कबीर दास के परिवार के लोग भी कपड़ा बिनने का काम करते थे. इतिहास बताता है कि मुगलकाल के पहले बनारसी साड़ी बिनने का सारा काम हिन्दू ही करते थे लेकिन बाद के वक्त में हुनरमंदी के इस पेशे में दूसरी बिरादरी के लोगों ने भी हाथ आजमाए और वे सफल रहे. उस जमाने में बुनकरी का पेशा हेय दृष्टि से देखा जाता था. समाज में लोग इन्हें पटुआ कहते थे. बाद में बदलते वक्त के साथ चीजें बदलीं और इस तबके को उसकी जगह हासिल हो सकी. इस



बदलाव में संत कबीरदास के योगदान को आप नजरअंदाज नहीं कर सकते. उन्होंने झीनी–झीनी बीनी चदरिया पद की रचना कर बुनकारी के प्रोफेशन को एक स्प्रीचुअल दर्जा दिलाने का काम किया.

बनारसी साड़ी की खासियत ये है कि इसमें लगने वाले सारे रॉ मैटेरियल्स बनारस में बनते ही नहीं. मतलब इनका प्रॉडक्शन बनारस में नहीं होता. साड़ी का मेन बेस सिल्क कर्नाटक से आता है. इसमें लगने वाली जरी देश के दूसरे हिस्सों से आती है. आजकल सस्ती पडने के कारण नेपाल के रास्ते से स्मगल होकर आने वाली चाइनीज रेशम और जरी भी इसमें यूज होने लगी है. लेकिन चाइनीज सिल्क में वो रेशमी एहसास नहीं है जो बंगलूरू से आने वाले रेशम में है. हाथ से चलने वाले करघे से हफ्ते पन्द्रह दिन में तैयार होकर निकलने के बाद इस साड़ी में जो चीज होती है वो दुनिया कि किसी और साड़ी में नहीं होती. दरअसल इसकी असल वजह बनारस की आबोहवा है जो इस साड़ी में एक खास तरह का असर डालती है. बनारसी साड़ी की रचना प्रक्रिया की अपनी विशिष्टता है. पावरलूम के इस दौर में भी बनारसी साड़ी हैंडलूम होने के बावजूद अपनी स्पेशैलिटी बनाये हुए है यह हैरत वाली बात है. हैंडलूम का काम पूरी तरह से हुनर पर आधारित है. आर्टिस्टिक होने और हाथ से बने होने के कारण यह महंगी होती है. बनारसी साड़ी के बिनाई का काम कई चरणों में होता है. सबसे पहले इसकी डिजाइन तैयार होती है. डिजाइन बनाते वक्त नक्शानवीस बुनकर से मशविरा करता है और बाजार की डिमांड को समझता है. इसकी वजह ये है कि अपने मुल्क के अलग अलग सूबों में बनारसी साड़ी में अलग अलग तरह के डिजाइन की डिमांड है. इसके अलावा विदेश में जहां कहीं भी बनारसी साड़ी एक्सपोर्ट होती है उन मुल्कों की डिमांड का भी खयाल रखना पड़ता है. डिजाइनिंग के काम की अहमियत को देखते हुए आजकल परम्परागत कलाकारों के अलावा फाइन आर्टस और कम्प्यूटर के स्पेशलाइज्ड आर्टिस्ट्स का भी यूज किया जाने लगा है.

बनारसी साड़ी की बिनाई के दूसरे चरण में डिजाइन का पत्ता काटने का काम किया जाता है. यह काम बहत ही कंसंट्रेशन का होता है. जाहिर है इसलिए एलर्ट भी रहना पड़ता है. बनारसी साड़ी में बेल–बूटों, मोर, हाथी–घोड़ों और फूल–पत्तियों का चलन ज्यादा है. तीसरे चरण में तनहरी का काम किया जाता है. तनहरी के दौरान रेशम के गुच्छे का ताना तानकर अट्टे में लपेटा जाता है. इस काम को ज्यादातर महिलाएं ही करतीं हैं. पत्ता कटाई और तनहरी के बाद चौथे चरण में बुनकर साड़ी बिनने का काम शुरु करता है. असल आर्ट यहीं से शुरु होता है. अब यह बुनकर के हुनर पर डिपेंड करता है कि वो एक साड़ी को बिनने में कितना वक्त लेता है. बाजार की डिमांड और सस्ती होने के कारण आजकल कतान की साड़ी पर छपाई भी किया जाने लगा है



ताना बाना हमे देता है दाना!

लेकिन बावजूद इसके बनारसी साड़ी का कोई जोड़ नहीं है.

रग एंड कारपेट : कारपेट शब्द में ही एक मखमली अहसास है. एक लग्जुरियस जिंदगी की फीलिंग्स. वैसे तो दुनिया में ईरान के कालीन का बड़ा नाम है लेकिन जो बात बनारस से सटे भदोही के कालीन में है वो कहीं दूसरों में नहीं है. रेशम सा नर्म ऊन, बेहतरीन डिजाइन और इन्द्रधनुषी रंगों का मिक्सचर. सब कुछ लाजवाब. इंटरनेशनल मार्केट में इसे रग एंड कारपेट कहा जाता है लेकिन इंडियन बिजनेस की दुनिया में इसे कालीन या गलीचे के नाम से पुकारा जाता है. वैसे अगर देखा जाए तो कालीन उद्योग का बनारस से कोई सीधा सरोकार नहीं है. सिवाय इसके कि यहां हर साल कारपेट एक्सपो लगता है और भदोही या मिर्जापुर आने वाले बायर्स बनारस के होटल्स में रुकते हैं. कालीन उद्योग मूलतः मिर्जापुर और भदोही के आसपास के इलाकों से ताल्लुकात रखता है. यह अलग बात है कि बनारस जिले के विभाजन के पहले भदोही बनारस का ही हिस्सा हुआ करता था लेकिन तब भी वर्ल्ड मैप पर उसकी अपनी एक अलग पहचान हुआ करती थी. इस इलाके की कालीनों के बेहतरीन होने की असल वजह गलीचों को सूट करने वाली यहां की आबो हवा है.

कालीन बनाने का काम बहुत ही टेक्निकल और हुनर से जुड़ा हुआ है. कई बार कालीन बनाने के काम में ऊन की जगह रेशम का भी उपयोग किया जाता है लेकिन यह कारपेट बहुत महंगा पड़ता है. इसमें कोई शक नहीं कि रेशम के कालीन को देखने से लेकर उस पर उठने बैठने तक में जो आनंद मिलता है वो ऊन की तुलना में ज्यादा सुखद होता है लेकिन कॉस्ट का अधिक होना उसे बायर्स की नजरों में चढने नहीं देता. इसके अलावा रेशम के कालीन टिकाऊ कम होते हैं. ऊलेन कालीन में उसके रोएं न केवल उसकी लाइफ को बढ़ाने का काम करते हैं बल्कि उसे रफ एंड टफ बनाते हैं. ऊलेन के अलावा सूत और





कालीन पर उतारी गई ऐश्वर्या राय



जूट के कालीन की भी मार्केट में काफी डिमांड है. बदलते वक्त के साथ यकीनन कालीन भी मशीन से बनने लगे हैं लेकिन इंडियन सब कॉन्टिनेंट में भारत के अलावा पाकिस्तान और बांग्लादेश में आज भी कालीन हाथ से ही बनाया जाता है. कालीन का बेस गांठों पर आधारित होता है लिहाजा इन गांठों को समरूप में लाना अपने आप में एक खास हुनर है. इसके लिए पतली ऊंगलियों की जरूरत होती है. ऐसे में बच्चों के हाथ इसमें सहायक होते हैं. हालांकि भारत में बाल श्रम पर प्रतिबंध है लेकिन सब जानते हैं कि तमाम प्रयासों के बावजूद आज भी चोरी छिपे कालीन उद्योगों में बाल श्रम का इस्तेमाल हो रहा है.

कालीन का प्रॉडक्शन ऊलेन से होता है लिहाजा इसका इस्तेमाल ठंडे देशों में ज्यादा होता है. अमेरिका, फ्रांस, स्वीटजरलैंड और कनाडा के

अलावा यूरोप के तमाम देशों में इंडियन कारपेट्स की बहुत डिमांड है. इंडियन कारपेट का मतलब भदोही– मिर्जापुर का गलीचा है. ऐसे में विदेशी मुद्रा अर्जित कराने वाले पूर्वांचल के इस सबसे बड़े उद्योग की अहमियत को समझा जा सकता है. बाजार में अक्सर आने वाले उतार चढ़ाव के दौर में भी भदोही का कालीन बाजार स्थिर रहता है.

ज्वैलरी एंड मीनाकारी : जयपुर का लाल मीना लाजवाब है तो बनारस का गुलाबी मीना नायाब है. मीनाकारी एक एनसीएंट आर्ट है. इसका विकास मुगलकाल के आसपास ही हुआ था. मीनाकारी के तहत ज्वैलरी को विभिन्न रंगों से सजाया जाता है. कहते हैं कि मुगल ही इस आर्ट को अपने साथ भारत में लाए थे. आइना–ए–अकबरी में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि मीने का काम भारत में 15 वीं सदी में शुरु हुआ था. उस दौरान जयपुर के शासक राजा मान सिंह ने लाल मीना को न सिर्फ संरक्षित किया बल्कि इस हुनर को बढ़ाने के लिए कई प्रयास भी किये. बनारस में गुलाबी मीने की शुरुआत 18 वीं सदी में हुई. यह नवाब आसफउद्दौला का शासनकाल था. बनारस के गुलाबी मीनाकार अवध के नवाब खानदान के लिए तरह तरह की चीजें तैयार करते



कालीन पर हुनरमंदी



कालीन की धुलाई



कौरैया लकड़ी का सिंदूरदान बनाते कारीगर

थे. बनारसी साड़ी की तरह कई हुनरमंद हाथ लगते हैं तब जाकर मीने से जुड़ी कोई कृति तैयार होती है. अगर देखा जाए तो मीनाकारी चित्रकारी का ही दूसरा रूप है. इसलिए एक मीनाकार का एक अच्छा चित्रकार होना बहुत जरूरी है.

मीने से बने ज्वैलरी में ऊपर के हिस्से में जवाहरात जड़े होते हैं. कांटों से जड़े गये इन नगीनों में ज्यादातर हीरे होते हैं. हीरों के इन टुकड़ों को परब या पोलकी कहते हैं. यहां टुकड़ा इसलिए कहा जा रहा है कि हीरे की कनी में स्टार बना होता है जबकि हीरों को तराशे जाने के दौरान उसमें से निकलने थोड़े मोटे छीलन को परब और पतले छीलन को पोलकी कहते हैं. इन नगीनों को कांटों से बैठाये जाने के बाद बचे हुए हिस्से को कुंदन से पेस्ट किया जाता है. कुंदन सोने का खरा रूप होता है. सोने के तबक जैसे दिखने वाले कुंदन को क्रींच की कलम जैसे टूल से पेस्ट किया जाता है.

इस ज्वैलरी के पीछे वाले हिस्से में कलरफुल मीना किया होता है. अपने शुरुआत के बाद हालांकि ये आर्ट करीब डेढ़ सौ साल तक अपने पीक पर रहा लेकिन बनारस में इस आर्ट के हुनरमंद आज भी हैं. बनारस के गुलाबी मीने के प्रति खाड़ी के देशों में गजब की दीवानगी दिखती है. ओमान, कतर और ईरान में शासकों के लिए तख्त–ए–ताऊस का निर्माण कराने के लिए बनारस से ही कारीगर ले जाए जाते हैं.



गुलाबी मीने से बना बनारसी बाजूबंद



गुलाबी मीने के साथ कुंदन की कारीगरी

इंटरनेशनल मार्केट में भी गुलाबी मीना काफी पॉपुलर है. फॉरेन कंट्रीज और बनारस घूमने के लिए आने वाले परदेसी सैलानियों के बीच चांदी पर बने मीने के आइटम्स की बहुत डिमांड है. देवताओं की बनी प्रतिमाएं, मोर, पान डिब्बा, इत्र दान, पेंडेंन और तमाम दूसरे सजावटी आइटम्स की मांग को देखते हुए आजकल मीनाकार इस पर ही ज्यादा काम कर रहे हैं. सोने में बन रही ज्वैलरी में टिकड़ा, पटरी हार, कंगन, झाला, पेंडेन, कड़ा, मांग टीका, बाजू बंद, कमरधनी और नथ की डिमांड बहुत है. एक खास सैगमेंट में इन ज्वैलरीज को पहनने वालों की तादाद अच्छी खासी है. आजकल टिकड़ा या पटरी हार में हीरे की परब पोलकी के अलावा पोखराज के परब का भी यूज किया जाने लगा है. वैसे बनारस में अच्छे मीनाकारों की तादाद कम हो गयी है लेकिन कुछ परिवार आज भी अपने खानदानी काम को जीवित रखे हुए हैं. शहर के पक्के महाल में भैरोनाथ, पत्थरगली, गायघाट, रामघाट, घासीटोला और चौखम्बा के इलाकों में रहने वाले हुनरमंद मीनाकार अपने फन में बहुत माहिर हैं. इनकी बनायी ज्वैलरी विदेशों में भी एक्सपोर्ट हो रही है.



गुलाबी मीने का तैयार टिकड़ा









भित्ति चित्र कला की जादूगरी

लोक कला आम बनारसी की रगों में जैसे रचा बसा हुआ है. ये सब उसके घरों के दरो दीवार पर जैसे नक्श दिखायी देता है. बनारस में पक्के महाल की तंग गलियों में आज भी हर घर के मेन गेट पर बना द्वारपाल आपको स्वागत करता मिलेगा तो केले का खंभा, आम के पत्ते का बना बंदनवार और महावत के साथी हाथी पर सवार महाराज का भित्ति चित्र मकान मालिक के ऐश्वर्यवान होने का अहसास कराता है. शादी ब्याह के मौकों पर इनका बनना जैसे कम्पल्सरी है. हालांकि इस लोक कला के आर्टिस्ट कम होते जा रहे हैं लेकिन बनारस आज भी अपनी इस रवायत को जिंदा रखे है.







प्रबन्ध निदेशक

मुकुट मणि मिश्र

पिता : स्व0 राकेश मिश्र
माताः श्रीमती निर्मला मिश्र
शैक्षणिक योग्यताः एम0बी0ए0

घर वापसी : एम0बी0ए0 की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात देश की राजधानी दिल्ली में मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनी एयरटेल से भी कुछ समय तक जुड़े रहे। अपने क्षेत्र एवं जनपद वाराणसी के युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी को देखते हुए इन्होने वाराणसी मे अपना व्यवसाय शुरू करने का फैसला किया। अपने व्यावसायिक जीवन की शुरूआत सन् 2012 में शिवांश ट्रेडिंग कं0 के साथ शुरू की। अथक परिश्रम एवं लगन का परिणाम है कि कुछ लाख रू से शुरू गयी शिवांश ट्रेडिंग कं0 आज करोडों का व्यवसाय कर रही है। शिवांश ट्रेडिंग कं0 की सफलता से उत्साहित होकर दो और कम्पनी क्रमशः सूक्तम् हाईट्स एवं सूम्तम् म्यूचुअल बेनिफिट निधि लि0 का शुभारम्भ किया। इस पूरे कार्य में इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे है अनुज, विकास मिश्र।

Sukatam Group of Companies
- *Shivansh Trading Co.*
- *Sukatam Mutual Benefit Nidhi Ltd.*
- *Sukatam Height Pvt. Ltd.*

काशी के वासी : सूक्तम् हाईट्स रियल इस्टेट् के क्षेत्र में बहुत ही सक्रियता से कार्य कर रही है इसका मुख्य उद्देश्य वाराणसी एवं आस–पास के क्षेत्र में अपना घर चाहने वालों को कम से कम बजट में आवास उपलब्ध कराना है। जिसके परिणाम स्वरूप वाराणसी (काशी) में अपना छत/घर का सपना पूरा हो सके। वाराणसी की पहचान शिक्षा की नगरी के रूप में भी है यहॉ देश ही नहीं, वरन विदेशों से भी हजारों छात्र विभिन्न विषयों में उच्च शिक्षा ग्रहण करने आते है। परन्तु उनके रहने की समुचित व्यवस्था न होने से उन्हे परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस समस्या के समाधान हेतु सूक्तम् हाईट्स काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निकट 680 कमरे का सूक्तम् कुसुम हॉस्टल लेकर आ रहा है। इसका निर्माण कार्य आरम्भ हो चुका है, जो कि तीन चरणों में पूर्ण होगा। प्रथम चरण के अन्तर्गत 150 कमरों का कार्य वर्ष 2019 में पूर्ण हो जायेगा। यह सभी अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त, सुरक्षित एवं एकीकृत कैंपस होगा।



Duplex

Amenities

- Central Landscaped Park
- Open Sitting Area
- Yoga & Meditation Pavilion
- Community Shops.
- Design as Per Vastu
- Temple
- 24 Hours Security with CCTV
- Party Hall & Club House
- Kid's Play Area
- Common Toilets
- Visitor's Parking



विकास मिश्र

पिता : श्री सन्तोष मिश्र

माताः श्रीमती बिन्दु मिश्र

शैक्षणिक योग्यताः एम0बी0ए0, एल0एल0बी0

निदेशक

- *Sukatam Mutual Benefit Nidhi Ltd.*
- *Sukatam Height Pvt. Ltd.*

समर्पित सहयोगी : एम0बी0ए0 एवं एल0एल0बी0 की शिक्षा पूरी करने के बाद, वाराणसी में स्थित के0एन0पब्लिक स्कूल के प्रबन्धन का कार्य लगभग एक दशक तक किया। अपनी शिक्षा के कार्य के दौरान अपने आस–पास के गरीब लोगों एवं दिहाड़ी मजदूरी करने वालों की आर्थिक समस्या को काफी करीब से देखा। आर्थिक समस्या के कारण होने वाला शोषण एवं उसके दुष्परिणाम को भी देखा। इन स्थितियों को देख कर मन में कुछ करने की प्रबल इच्छा थी। इन समस्याओं के समाधान के लिए इन्होने सूक्तम् म्यूचुअल बेनिफिट निधि प्रा0 लि0 कम्पनी शुरूआत अपने बड़े भाई मुकुट मणि मिश्र के सहयोग से की।

आपके सपनो का बैंक : सूक्तम् म्यूचुअल बेनिफिट निधि ली0 भारत सरकार के वित्त मंत्रालय एवं रिर्जव बैंक ऑफ इंडिया से मान्यता प्राप्त है। इस निधि का मुख्य उद्देश्य समाज के गरीब एवं दिहाड़ी मजदूरी करने वाले लोगों को बैंकिग / बचत की आदत डालना। इस निधि में सामान्य बैंकों की तरह सेविंग खाता, आर्वती खाता, फिक्सड डिपांजिट, लोन, मंथली इनकम स्कीम की सुविधायें उपलब्ध है। किसी भी प्रकार के बचत पर न्यूनतम 14% की रिर्टन इसके साथ ही साथ रिर्टन मासिक भी प्राप्त कर सकतें है। R.B.I के निर्देशानुसार एवं भारत सरकार के संरक्षण में पूर्ण जोखिम सुरक्षा तथा केन्द्रिय सर्तकता आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रमाणित।

लक्ष्य

''मुकुट मणी मिश्र का एक सपना है कि वाराणसी में जरूरत मंद। भूखे रहने वालों को नि:शुल्क भोजन की व्यवस्था करना।''

Suktam Group of Companies | Sai Udaipur, Varanasi - 221101, Mob.: 8765632217



खाओ खूब

खिलाओ खूब



बनारस बोले तो खाओ खूब, खिलाओ खूब. एक आम बनारसी को आप पेटू तो कतई नहीं कह सकते लेकिन इस बात से इनकार भी नहीं कर सकते कि वो भोजन हमेशा सरगंड करता है. यहां सरगंड से आशय प्रचुर मात्रा से है. बनारस का आदमी बाई नेचर संतोषी होता है लिहाजा उसे खाने में जो भी दिया जाए उसे ग्रहण कर लेता है. लेकिन अगर बात खांटी बनारसी की हो तो कहना पड़ेगा कि वो इस मामले में बहुत चूजी होता है. उसे अगर सुबह के नाश्ते में कचौड़ी जलेबी चाहिए तो वो देसी घी में ही बना होना चाहिए. अगर यह होगा तभी उसे लज्जत देगा. दिन के भोजन में उसे दही चाहिए मगर वो खालिस मीठी होनी चाहिए. सप्रेटा दही की बनी कढ़ी भी शायद ही उसे हजम हो. दाल, चावल, रोटी, सब्जी उसका लंच है. बनारस के शख्स को सब्जी में सूखी और रसेदार दोनों ही चाहिए. साथ में अगर सलाद मिल जाए तो वो थोड़ा खुश नजर आता है. इस भोजन के बाद अगर खोए या पनीर की मिठाई मिल गयी तो उसकी अंतरात्मा पूरी तरह से तृप्त हो जाती है. डिनर में वो रोटी, सब्जी और दाल खाना पसंद करता है. लेकिन इसके बाद अगर उसे मलाई, रबड़ी, मलाई की पूड़ी, मलाई पाक, घेवर या फिर ऐसी ही कोई गरिष्ठ मिठाई नहीं मिली तो उसे पूरे दिन का खाया पीया बेकार सा नजर आता है.

आप कह सकते हैं कि आम बनारसी खाने पीने का बहुत शौकीन होता है. जाहिर है ऐसे में यहां खाने पीने की बेहतरीन चीजें तो मिलेंगी ही. इस शहर के नेचर या यहां देशभर के लोगों का रहना इसे



खस्ता कचौरी और जलेबी



लिट्टी चोखा

कॉस्मोपोलिटिन बना जाता है. नेचुरली यहां देश के हर इलाके का भोज्य पदार्थ मिलना भी सहज है. यकीनन हर गली के नुक्कड़ पर मिलने वाली कचौड़ी जलेबी यहां सुबह का नाश्ता है लेकिन गोदौलिया से लेकर चौक तक ठेले पर मिलने वाले इडली साम्बर को भी यहां के लोग बड़े चाव से खाते हैं. वैसे तो छोला भटूरा पंजाब की लज्जत है लेकिन जब वो बनारस में बनता है तो उसमें गजब का टेस्ट होता है. यही हाल बाटी चोखा का है. है तो यह बिहारी फूड. वहां उसे लिट्टी चोखा कहते हैं. लेकिन बनारस में बने बाटी चोखा, लिट्टी चोखा या सत्तू के पराठे में देसी माटी की जो गमक है वह कहीं नहीं दिखती. शहर के पुराने इलाके मैदागिन, बिसेसरगंज, चौक, बांसफाटक, गोदौलिया, सोनारपुरा और कबीरचौरा के आसपास के ढेर सारे लोग सुबह के वक्त कढ़ाई में धीमी आंच में छनी छोटी कचौड़ी और चने की बनी घुघरी–चटनी का नाश्ता भी करते हैं. वैसे बदलते वक्त के साथ बनारस भी बदल रहा है. जाहिर है खानपान की आदत में भी बदलाव हुआ होगा. इस बदलाव के तहत अब पहाड़ का मोमो भी यहां की जमीन पर उतर आया है. चाइनीज फास्ट फूड चाउमीन, चीली पनीर से लेकर स्वीट कॉर्न तक ने अब आम बनारसियों के बीच अपनी पैठ बना ली है. वैसे यह सब नयी जेनरेशन के बीच पॉपुलर है लेकिन बाजारीकरण के दौर में इन सब डिशेस ने हर एजग्रुप को अपनी तरफ अट्रैक्ट किया है.



नाश्ता, लंच और डिनर के बीच जनरली यहां के लोग शाम को भी ब्रेक फास्ट करते हैं. अब आप सोचेंगे कि शाम को बनारस का शख्स क्या ब्रेक फास्ट करता होगा. अरे जनाब, खाने पीने की गपशप के बीच अगर आपने बनारस के गोलगप्पे और टमाटर चाट का स्वाद नहीं चखा तो बाकी सब बेकार. यहां पक्के महाल, मेन मार्केट और आउटर एरियाज में दुकानों से लेकर ठेले खोमचे पर मिलने वाला गोलगप्पा, आलू चाप, समोसा, दही बड़ा, मटर चूड़ा, पपड़ी छोला और दूसरे आइटम्स का चटपटा स्वाद किसी भी शख्स को चटोरा बना देगा. चाट पूरे नॉर्थ इंडिया की स्पेशेलिटी है लेकिन बनारस में इसका स्वाद कुछ अलहदा है. वो इस मामले में कि यहां जनरल मसाले के साथ काला नमक, जीरा, सरसों, मिर्च, हींग के अलावा इमली और नींबू की मिक्सिंग खाने वाले को अंगुली चाटने को मजबूर करती है. गोलगप्पे में भरा जाने वाला छोला और उसके साथ चटपटा पानी हाजमे का काम करती है.

इसमें कोई दो राय नहीं है कि बनारस में मिलने वाली चटपटी चीजों में जो नमकीनपन है वो कहीं नहीं है लेकिन यह भी मानना पड़ेगा कि मिठाई यहां की खासियत है. छेना और खोए की बनी मिठाइयों की देशभर में डिमांड है तो रबड़ी–मलाई, मलाई पाक, मलाई की पूड़ी और मलय्यो लाजवाब है. खीरमोहन से लेकर राधाप्रिय बर्फी तक का स्वाद देर तक जबान पर बना रहता है. गोपालभोग से लेकर



आलू – टमाटर चाट



मसाला–डोसा

घेवर तक का कोई जवाब नहीं है. बनारस में वेदर के हिसाब से मिठाई बनती और बिकती है. जैसे यहां सर्दियों में मिलने वाला मगदल जाने कहां कहां एक्सपोर्ट होता है तो परवल की मिठाई भी बाजार में परवल की अवेलिबिल्टी तक मिलेगा. मोहल्लों के हिसाब से मिठाई की प्रसिद्धी है तो उसके स्वाद का असर भी दिखता है. पांडेयपुर जैसा गुलाबजामुन पूरे बनारस में कहीं और नहीं मिलेगा. इसे आप एक बार में हाथ से उठाकर खा ही नहीं सकते. क्योंकि वो इतना मुलायम होता है कि उसका टूटना तय है. इसी तरह चौखम्भा या दशाश्वमेध में काली मंदिर के पास मिलने वाला चमचम दूसरी जगह मिलेगा ही नहीं. बंगाली टोला या सोनारपुरा में मिलने वाली बांग्ला मिठाइयों जैसे रसगुल्ला या राजभोग वगैरह



की बेहतरीन क्वालिटी आपको अट्रैक्ट कर ही लेगी. यहां की मिठाइयों की खासियत ड्राईफ्रूट और खोए का फ्यूजन भी है. अगर आप अंजीर बर्फी या पिस्ता बर्फी खाएंगे तो आपको उसमें वो ही तासीर मिलेगी जो इन मेवों में है. काजू से बनी मिठाइयों की तो इतनी वॅरायटीज हैं कि उसके नाम, उसकी खासियत और टेस्ट पर पूरा एक चौप्टर लिख दिया जाए.

ठंडई का जिक्र किये बगैर अगर इस अध्याय को पूरा कर दिया तो फिर शायद इसका सार तत्व खत्म हो जाएगा. ठंडई बनारस की आबो हवा में मस्ती का रंग घोलता है. पोस्ते का दाना, सौंफ, खरबूजे का बीया, काली मिर्च, गुलाब की सूखी पत्ती और मेवे के साथ भांग की चंद पत्तियों को भींगा कर बारीक घोटना मतलब पीसना और फिर उसे दूध में छान कर पीना मन मिजाज को कूल कर देता है. यह पेट को ठंडा रखता है तो रात में साउंड स्लीप का सबब भी बनता है. बनारस में रहने वाला या फिर यहां आने वाला हर शख्स कभी कभार, अक्सर या फिर नियमित रूप से ठंडई का सेवन करता है. वैसे तो ठंडई छानना दैनिक प्रक्रिया है लेकिन अब ब्रांडेड ठंडई की रेडिमेड बॉटल्स देश में ही नहीं विदेश में भी एक्सपोर्ट हो रही हैं.

बनारस का पर्याय अगर कुछ है तो वो पान है. देशभर में बनारसी पान शॉप आपको मिल जाएंगे लेकिन पान का जो स्वाद आपको बनारस में मिलेगा वो कहीं अन्यत्र संभव ही नहीं है. उसमें भी अगर पान



बनारस की प्रसिद्ध मिठाई



बातों बातों में....



मसाला चाय



आलू – टिक्की


ठण्डई



चलो छानी जाए ठंडई : ये शहर बनारस है जनाब. यहां भांग खायी या पी नहीं जाती. यहां भांग छानी जाती है. ठंडई भी पी नहीं जाती, वो भी छानी जाती है. भांग को यहां के लोग भांग कहते भी नहीं. विजया या बूटी नाम है यहां इसका. भंग की तरंग, वो भी ठंडई के संग. फिर क्या? फिर तो बेशक आप बैठे हों गोदौलिया के किसी गली में या गंगा किनारे किसी घाट पर, लेकिन आपका जेहन उडनखटोले की सैर करता फील कर रहा होगा. रंगीन बोले तो बूटी के साथ ठंडई छानना आम बनारसी का शगल है.



खईके पान बनारस वाला



मघई हो तो फिर बात कुछ अलग सी हो जाती है. बहुत कम लोगों को पता है कि जिस पान को हम बनारसी कहते हैं वो दरअसल बनारस की पैदावार है ही नहीं. पान की वॅरायटी में जगन्नाथी, सांची, कपूरी, मघई और देसी पॉपुलर हैं लेकिन ये सब के सब पश्चिम बंगाल और उड़ीसा से आते हैं. हां, इन सबको बनारस में पकाया जाता है. अब पकाने की खासियत ही इन सबका नामकरण बनारसी करा जाता है. पान को पकाना और इसे छांटना जिसे आमतौर पर फेरना कहते हैं, अपने आप में एक हुनर है. इसमें बनारस की चौरसिया बिरादरी सिद्धहस्त है. इस इंडस्ट्री में बनारस में कई हजार परिवार लगे हुए हैं. यहां पकाया गया कत्था, उसमें इत्र की मिक्सिंग, कनार्टक और श्रीलंका से आने वाली सुपारी की बारीक कटाई और उसे पानी में भिंगो कर मुलायम किया जाना अपने आप में एक बड़ा काम है. इसी तरह बनारस में तम्बाकू सादी सुर्ती के रूप में खायी जाती है. सुर्ती को पानी में कई बार धो कर उसके निकोटिन को कम कर दिया जाता है. इसके बाद खस, पिपरमिंट से लेकर अलग अलग तरह की खुशबू मिला कर उसमें एक स्पेशल टेस्ट डेवलप किया जाता है. यह सब बनारस के पान को एक अलग स्वाद दे जाता है. पान के अलावा बनारस में मीठी सुपारी का भी एक बड़ा उद्योग है. सुपारी में खुशबू और स्वाद का फ्यूजन इसे सात समंदर पार तक पॉपुलर बनाये हुए है. इसके डिब्बा बंद पैक की दुकानें शहर के तमाम इलाकों में मिल जाएंगे. इन्ही सब वजहों के चलते बनारस का आम आदमी पान खाना और उसे देर तक मुंह में घुलाना अपनी शान समझता है. अब आप ही सोचिए कि ऐसे खान और पान को देख कोई क्यों न कहे, जियो रजा बनारस...





सुबह – सुबह कचौरी–सब्जी



कुल्फी फालूदा





JCTB
JAGRAN COFFEE TABLE BOOK



हमारे लेखक

विश्वनाथ गोकर्ण : कर्नाटक के एक छोटे से तटवर्ती गांव गोकर्ण से बनारस आ बसे विश्वनाथ गोकर्ण का परिवार मूलतः कन्नड़ भाषी है. बनारस में आ बसना, यहां परवरिश पाना, इस शहर को ओढना बिछाना और बनारसीपन को शिद्दत से जीना अपना मुकद्दर समझने वाले विश्वनाथ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से कॉमर्स में पोस्ट ग्रेजुएट हैं. अपने दत्तक पिता वरिष्ठ पत्रकार पं. नवल किशोर राय की वजह से अकस्मात इस पेशे में आए गोकर्ण जर्नलिज्म को प्रोफेशन के तौर पर तीन दशकों से अपनाए हुए हैं. उन्होंने देश के बड़े मीडिया घरानों में विभिन्न शहरों और ओहदों पर काम किया. उन्हें अध्ययन और मनन की प्रेरणा बड़ी बहन मंदाकिनी गोकर्ण से मिली.

विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में अब तक करीब चार सौ से ज्यादा लेख लिखे. अमर चित्र कथा फेम अनंत पई की मनोविज्ञान और जीव दर्शन पर लिखी सात किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया. आकाशवाणी और विविध भारती पर विभिन्न विषयों पर करीब सौ से ज्यादा वार्ताएं प्रसारित हुईं.

विचारों से सूफी विश्वनाथ गोकर्ण के लिए पीर ही ईश्वर का पर्याय है. आदरणीय विद्या भास्कर, लक्ष्मीशंकर व्यास, चन्द्रकुमार त्रिखा, राजेंद्र माथुर और एसपी सिंह जैसे दिग्गज पत्रकारों का सानिध्य मिलना वो अपनी उपलब्धि मानते हैं. मनुष्य बनने की जिजिविषा पाले विश्वनाथ की दिली ख्वाहिश मिट्टी सी सिफत हासिल करना, अनहद नाद सुनना और खुद अपनी रूह से रूबरू होना है.



हमारे फोटोग्राफर

अतुल हुण्डू : लखनऊ स्थित कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट्स से मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स करने वाले अतुल हुण्डू के पास बतौर फोटोग्राफिक कलाकार 15 से ज्यादा वर्षों का अनुभव है. उनकी सबसे खास विशेषता जर्नलिस्टिक फोटोग्राफी है. उन्होंने नॉर्थ इंडिया के कई प्रमुख न्यूजपेपर्स और प्रतिष्ठित मीडिया हाउसेस में काम किया है. वह बहुत से प्रतिष्ठित प्रोजेक्ट्स का हिस्सा भी रहे हैं.

अतुल अपनी उपलब्धियों के पीछे अपने गुरु अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के फोटोग्राफर स्वर्गीय पीसी लिटिल का आशीर्वाद मानते हैं. उनकी ट्रेनिंग ने ही अतुल को फोटोग्राफी की विभिन्न विधाओं फैशन, प्रॉडक्ट, स्पोर्ट्स और विजुअल आर्ट्स आदि के साथ कॉमर्शियल तथा लाइफस्टाइल शूट में एक अलग पहचान दिलाई. कॅरियर की शुरूआत अतुल ने 2010 में एक ट्रेवल फोटोग्राफर के तौर पर की. बाद में जागरण कॉफी टेबल बुक्स के फेमस वॉल्यूम श्देवालयश् के लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड और झारखंड जैसे चार राज्यों में उल्लेखनीय फोटोशूट किया. उन्होंने जागरण कॉफी टेबल बुक सीरिज की 12 से ज्यादा वॉल्यूम के लिए एक महत्वपूर्ण हिस्से के तौर पर काम कर उसे सफलता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा की.

एक फोटो जर्नलिस्ट के तौर पर काम करते हुए अतुल हुण्डू डिजिटल टेक्निक और अपने क्रिएटिव अप्रोच के बेहतरीन समन्वय साथ एक नये विधा के अग्रदूत बन चुके हैं. उनका वर्क कई नेशनल और इंटरनेशनल एग्जिबिशन का हिस्सा भी रहा है. वह अपने बेहतरीन फोटोग्राफ्स के साथ दो सोलो एग्जिबिशन और तीन ग्रुप एग्जिबिशन भी आयोजित कर चुके हैं. अतुल को समय–समय पर विभिन्न संस्थाओं में गेस्ट लेक्चरर के तौर पर आमंत्रित किया जाता है और वह खुद भी उभरते फोटोग्राफर्स के लिए फोटोग्राफी वर्कशॉप आयोजित करते रहते हैं.



9 789383 378517 02000